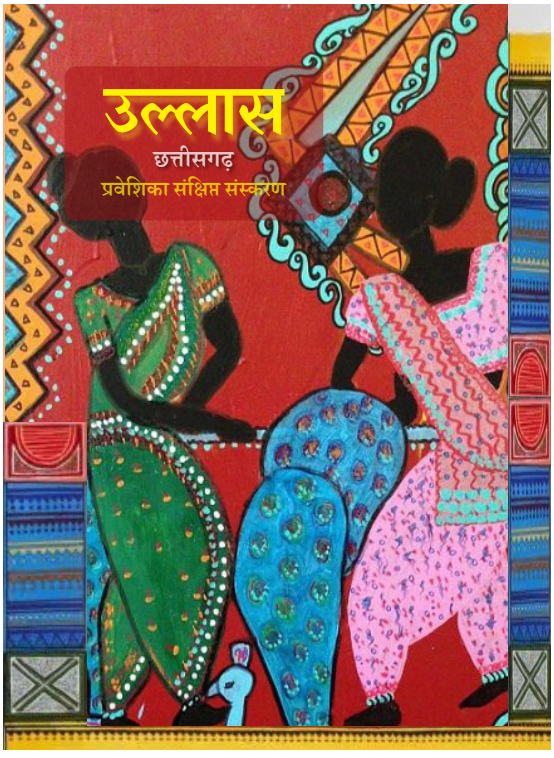
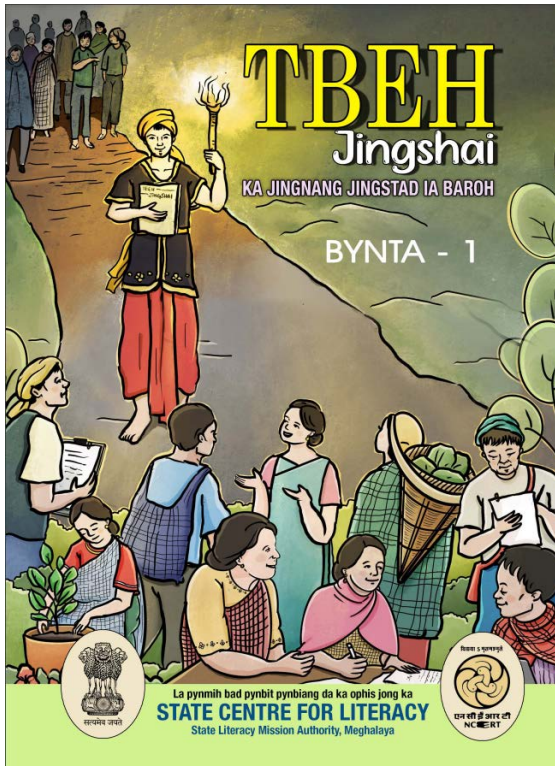

प्रवेशिका निर्माण
संबंधी
दिशा-निर्देश



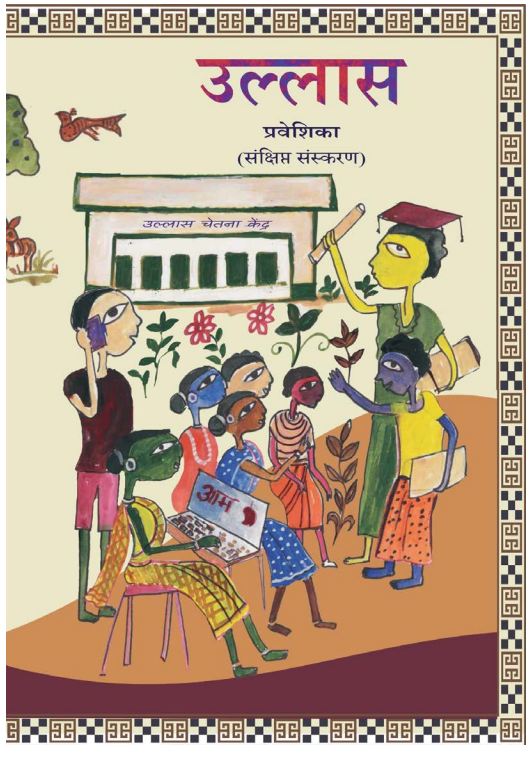
छत्तीसगढ़ (हिंदी)



मेघालय (खासी)



जम्मू और कश्मीर (कश्मीरी)



झारखंड (हिंदी)

प्रवेशिका निर्माण संबंधी दिशा-निर्देश

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में *सबके लिए शिक्षा* (पूर्ववर्ती प्रौढ़ शिक्षा) पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में वह *'सरकार द्वारा मज़बूत और अभिनव पहल करने की आवश्यकता' पर बल देती है- 'विशेष रूप से सामुदायिक भागीदारी और प्रौद्योगिकी के सुचारू और लाभकारी एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के हेतु'* जो भारत में 100 प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया को गति देने में सहायक होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 वर्ष 2030 तक 100% साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर अनेक प्रयास सतत जारी हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं के क्रियान्वयन के लिए 01 अप्रैल, 2022 से भारत सरकार एक केंद्र प्रायोजित योजना ***उल्लास*** - नव भारत साक्षरता कार्यक्रम का क्रियान्वयन कर रही है जिसका उद्देश्य 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के उन वयस्कों को सशक्त बनाना है जिन्हें उचित स्कूली शिक्षा और अनुगामी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के नाम से प्रायोजित ***उल्लास का अर्थ है - समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ (ULLAS- Understanding of Lifelong Learning for All in Society)*** और इसका आदर्श वाक्य (tagline) है – ***जन-जन साक्षर।***

'उल्लास' कार्यक्रम के अंतर्गत ये प्रयास किए जा रहे हैं कि असाक्षर व्यक्ति साक्षर बन समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित हो सकें, सक्षम बन सकें और समाज के कल्याण में अपना योगदान दे सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 एवं 'उल्लास' कार्यक्रम की अनुशंसाओं और शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) के राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, (CNCL) 2021-22 द्वारा '***उल्लास***' प्रवेशिका (चार भाग) और ***उल्लास प्रवेशिका - संक्षिप्त संस्करण*** का विकास किया गया है जिनमें शिक्षार्थियों के जीवन से जुड़े हुए विषय या थीम लिए गए हैं। उनके माध्यम से बुनियादी साक्षरता, संख्या-ज्ञान और वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, कानूनी साक्षरता, पर्यावरण संबंधी साक्षरता आदि महत्वपूर्ण जीवन कौशल प्रवेशिका में विशेष स्थान दिया गया है।

शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने और अंकगणित सीखने में सहायता के लिए एक मार्गदर्शिका का भी निर्माण किया गया है जो मूलत: स्वयं सेवी शिक्षकों के उपयोग के लिए है। इस मार्गदर्शिका में साक्षरता के व्यापक परिप्रेक्ष्य, भाषा व गणित शिक्षण-मद और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया पर विस्तृत चर्चा की गई है।

प्रवेशिकाओं और मार्गदर्शिकाओं के विकास की यह यात्रा अपने-आप में अत्यंत अद्भुत और अविस्मरणीय रही है। वास्तविक कार्य-क्षेत्रों में जाकर समस्त सामग्री का उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रयोग और परीक्षण किया गया है और उसके आधार पर इसे अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। यहाँ इस बात का उल्लेख भी आवश्यक है कि परिषद् द्वारा विकसित **प्रवेशिकाएँ उदाहरणस्वरूप** प्रस्तुत हैं। अब अपेक्षा यह है कि विभिन्न राज्य अपने लिए अपनी भाषाओं में अपनी आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं की प्रवेशिकाओं का विकास करेंगे। इस कार्य में सहयोग प्रदान करने के उद्देश्य से परिषद् द्वारा प्रवेशिका विकास संबंधी इन दिशा-निर्देशों को प्रस्तुत किया जा रहा है।

ये दिशा-निर्देश केवल सुझाव के रूप में प्रस्तुत हैं। इनके आधार पर कार्य करने या इनका उपयोग करने के लिए सभी हितधारक पूर्णत: स्वतंत्र हैं।

प्रवेशिका निर्माण संबंधी इन दिशा निर्देशों में दो अध्याय सम्मिलित हैं। प्रथम अध्याय में 'सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम' और 'उल्लास: नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। यहाँ 'उल्लास' के विकास की प्रक्रिया भी दी गई है। अध्याय दो में प्रवेशिका विकास हेतु दिशा-निर्देश दिए गए हैं जो यह समझने में सहायक होंगे कि उल्लास प्रवेशिका केवल एक साधन है, एक उपकरण है जिसके माध्यम से बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान के प्रतिफलों को प्राप्त किया जा सकता है। प्रवेशिका में जिन उदाहरणों को लिया गया है, उनका एक विशेष उद्देश्य है और इस तरह की अन्य सामग्री का प्रयोग करते हुए भी भाषा एवं गणित सीखने में शिक्षार्थियों की सहायता की जा सकती है।

यह सामग्री सरल-सहज भाषा में चित्रों और उदाहरणों के साथ दी गई है ताकि कम शब्दों में अधिक से अधिक जानकारी पहुँचाई जा सके।

परिषद् प्रवेशिका विकास संबंधी दिशा-निर्देशों के विकास में सम्मिलित सभी विषय विशेषज्ञों और परिषद् के संकाय सदस्यों, परियोजना-कर्मियों के अथक परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। आशा है सभी राज्य, शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी और शिक्षाविद इन दिशा-निर्देशों का भरपूर लाभ उठा सकेंगे। इन दिशा-निर्देशों के संबंध में आपके सुझावों और टिप्पणियों का स्वागत है।

फरवरी, 2024
नयी दिल्ली

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

प्रस्तावना

शिक्षा गुणवत्तापूर्ण जीवन का आधार है। गरिमापूर्ण जीवन जीने के लिए शिक्षा और जीवनपर्यंत सीखने की प्रवृत्ति सदैव काम आती है। सीखना एक बृहद अवधारणा है जिसमें अनौपचारिक और औपचारिक रूप से सीखना सम्मिलित है। इसका अर्थ यह है कि सीखना किसी भी शाला की चहारदीवारी तक सीमित नहीं है और हम निरंतर सीखते रहते हैं – अपने अपरिवेश से, अपने आस-पास के व्यक्तियों से, दूसरों के अनुभवों से और स्वयं के अनुभवों से भी! शिक्षा मानव का अधिकार भी है और जीवन का लक्ष्य भी! मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषणा (1948) भी यह घोषणा करती है कि 1. प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार है। 2. शिक्षा का उद्देश्य होगा मानव व्यक्तित्व का पूर्ण विकास और मानव अधिकारों तथा बुनियादी स्वतंत्रताओं के प्रति सम्मान की पुष्टि। (अनुच्छेद 26) शिक्षा को मानवाधिकार और जीवन से जोड़ने वाली यह दृष्टि देश के विकास को भी प्रभावित करती है. स्वामी विवेकानंद के अनुसार *'देश उसी अनुपात में उन्नत हुआ करता है जिस अनुपात में वहाँ के जनसमुदाय में शिक्षा और बुद्धि का प्रसार होता है... यदि हम पुन: उन्नत होना चाहते हैं तो हम जनसमूह में शिक्षा का प्रचार करके वैसे हो सकते हैं।'* देश का उन्नति मार्ग भी शिक्षा से होकर गुज़रता है अत: जनसमुदाय की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

वस्तुत: शिक्षा की धुरी मानव जीवन है। मानव जीवन की गरिमा और लोकतंत्र की सफलता के लिए भी, स्वतंत्रता एवं समता - दो महत्वपूर्ण बिंदु हैं। भारतीय संविधान प्रत्येक भारतीय नागरिक को विधि के समक्ष समता का अधिकार देता है – *'राज्य, भारत के राज्यक्षेत्र में किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से या विधियों के सामान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा।'* (अनुच्छेद 14, समता का अधिकार,भारत का संविधान)। संविधान भारतीय नागरिकों को स्वातंत्र्य-अधिकार भी देता है – *'सभी नागरिकों को वाक्- स्वातंत्र्य और अभिव्यक्ति- स्वातंत्र्य का अधिकार होगा।' (अनुच्छेद 19 (क); 'कोई वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या कारोबार करने का अधिकार होगा।'* (अनुच्छेद 19 (छ) और *'किसी व्यक्ति को उसके प्राण या दैहिक स्वतंत्रता से विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार ही वंचित किया जाएगा, अन्यथा नहीं।'* (अनुच्छेद 21) *'राज्य, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले सभी बालकों के लिए नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का ऐसी रीति में, जो राज्य विधि द्वारा अवधारित करे, उपबंध करेगा।'* (अनुच्छेद 21क) ये मौलिक अधिकार व्यक्ति को उसकी गरिमा, सम्मान और अस्तित्व प्रदान करते हैं। साक्षरता इसी गरिमा, सम्मान और अस्तित्व का संरक्षण करने और उचित आजीविका का चयन एवं निर्वहन करने में भी सहायक होती है। पढ़ना-लिखना और संख्या-ज्ञान सीखना प्रत्येक नागरिक के लिए अनिवार्य आवश्यकता है।

भारत सरकार का नव भारत साक्षरता कार्यक्रम, साक्षरता एवं जीवनपर्यंत सीखने की इसी आवश्यकता को केंद्र में रखते हुए 15 और उससे अधिक आयु के सभी अ-साक्षर व्यक्तियों को साक्षर होने के अवसर प्रदान करता है। भारत का संविधान 6 से 14 वर्ष तक की आयु वाले बच्चों के लिए मौलिक अधिकार के रूप में शिक्षा का प्रावधान करता है और 15 वर्ष और उससे ऊपर के व्यक्तियों की शिक्षा के लिए नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के माध्यम से प्रावधान किए गए हैं। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम का लोकप्रिय नाम *'उल्लास'* यानी समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ भी इसी अवधारणा को पोषित करता है कि निरंतर सीखते रहने में साक्षरता एक महत्वपूर्ण घटक है। अ-साक्षर शिक्षार्थियों के लिए पढ़ना-लिखना सीखने और संख्या-ज्ञान में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के साथ-साथ सीखने-सिखाने की सहायक संसाधन सामग्री भी महत्वपूर्ण है। सीखना परिवेशजन्य होता है तो परिवेश में उपलब्ध सामग्री सीखने की सामग्री बन सकती है। इसका अर्थ यह भी है कि संसाधन सामग्री संदर्भित हो और शिक्षार्थी के समाज-संस्कृति से जुड़ी हुई हो । सीखना भी वह

जो जीवन जीने में काम आ सके, जीवन की विभिन्न स्थितियों में जिसका उपयोग किया जा सके। अत: संदर्भ, भाषा, प्रयोग, समय के साथ-साथ उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामग्री का निर्माण किया जाना श्रेयस्कर है। यह भी संज्ञान में हो कि शिक्षार्थियों के परिवेश, अनुभव, चिंतन-क्षमता व स्तर, भाषा, समाज-सांस्कृतिक व आर्थिक संदर्भों में भिन्नता होती है। अत: एक ही प्रकार की संसाधन सामग्री सभी शिक्षार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी हो, यह आवश्यक नहीं है, तथापि सामग्री को शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप संयोजित/ रूपांतरित करते हुए उसे प्रयोग में लाया जा सकता है।

शिक्षार्थियों के पढ़ना-लिखना सीखने और संख्या-ज्ञान के लिए प्रवेशिका जैसी संसाधन सामग्री अथवा कोई भी अन्य संसाधन सामग्री अपने-आप में अंतिम नहीं हो सकती, अपितु उसमें विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप निरन्तर परिमार्जन की अपेक्षा रहेगी ही। इस दृष्टि से हमें अपने शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए पूर्व निर्मित सामग्री में जहाँ निरंतर संशोधन करते रहना होगा, वहीं निरन्तर नूतन संसाधन सामग्री का निर्माण भी करते रहना होगा। भाषा की विभिन्न कुशलताएँ और गणित की विभिन्न अवधारणाएँ एकीकृत होती हैं। गणितीय अवधारणाओं को सीखने के लिए भाषा माध्यम बनती है और उन सीखी गई अवधारणाओं का प्रयोग भाषा के माध्यम से ही होता है। उदाहरण के लिए, किसी दुकान में चीज़ों के लिखे हुए नाम और मूल्य को पढ़ना, यह सोचना कि ज़रूरत का क्या सामान लिया जाना है, दुकानदार से ज़रूरी सामान देने के लिए कहना, खरीदे गए सामान का बिल पढ़ना और धन राशि देना; भाषा (पढ़ना) और गणित की कुशलता (दर के हिसाब से कुल राशि का निर्धारण, बिल देखकर रुपये-पैसे का हिसाब लगाना, मूल्य देना और बचे हुए पैसे वापिस लेना)-भाषा और गणित की एकीकृत कुशलताओं की माँग करती हैं। अत: प्रवेशिका में भाषा और गणित को एकीकृत रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान के लिए सीखने के प्रतिफलों को केंद्र में रखना और जीवन की विभिन्न स्थितियों में उनके प्रयोग की संभावनाओं को बढ़ाना प्रवेशिका एवं अन्य सामग्री के निर्माण एवं चयन में सहायक होगा।

परिषद् प्रवेशिका निर्माण संबंधी दिशा-निर्देशों को तैयार करने के संदर्भ में डॉ. सत्यवीर सिंह, प्राचार्य, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश और श्री अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर शिक्षक, शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है। साथ ही राष्ट्रीय साक्षरता प्रकोष्ठ की भावना खेड़ा, जेपीएफ, जावेद आलम, जेपीएफ (उर्दू), शुभम कुमार, सीनियर ग्राफ़िक डिज़ाइनर, ज्योति तिवारी, परामर्शदात्री, एवं अन्य परियोजना-स्टाफ़ के अथक परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है।

'सभी के लिए शिक्षा' के लक्ष्य को प्राप्त करने के संदर्भ में प्रवेशिका निर्माण के आधार-बिंदु प्रस्ताव मात्र हैं, इन्हें और अधिक उत्कृष्ट बनाने के लिए आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

असीम शुभकामनाएँ!

फरवरी , 2024
नयी दिल्ली

उषा शर्मा
प्रोफेसर एवं प्रभारी
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

प्रवेशिका निर्माण-समिति

अध्यक्ष

दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

समीक्षा समिति

आयुष्मान गोस्वामी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान
कंचन देवरारी, अपर निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., देहरादून, उत्तराखंड
चाँदकिरण सलूजा, निदेशक, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
प्रशांत पाण्डेय, सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़
संजीव कुमार, पूर्व प्रधानाचार्य, डाइट, आर.के. पुरम, नई दिल्ली
सत्यवीर सिंह, प्रधानाचार्य, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश
उषा शर्मा, प्रोफेसर एवं प्रभारी, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

निर्माण-समिति

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
ज्योति तिवारी, परामर्शदाता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
निशात फ़ारूक़, पूर्व निदेशक, राज्य संसाधन केंद्र, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
भावना खेड़ा, कनिष्ठ परियोजना अध्येता, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
सत्यवीर सिंह, प्राचार्य, राजकीय इंटर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश

सदस्य समन्वयक

उषा शर्मा, प्रोफेसर एवं प्रभारी, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र-प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

परिषद्, उन सभी विषय-विशेषज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिनके ज्ञान, अनुभव और मार्गदर्शन ने प्रवेशिका निर्माण संबंधी दिशा-निर्देश के निर्माण में योगदान दिया। साथ ही उन रचनाकारों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिनकी रचनाओं ने प्रवेशिका की विषय-वस्तु समृद्ध बनाया और शिक्षार्थियों को बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञान की कुशलता प्राप्त करने हेतु अभिप्रेरित किया।

इसके साथ ही पुस्तक में चित्रांकन के लिए परिषद् सभी चित्रकारों के प्रति भी आभार व्यक्त करती है जिनके चित्रों ने प्रवेशिका के चिंतन-बिन्दुओं को साकार रूप प्रदान किया। साथ ही, जीवन के विभिन्न आयामों को विस्तार दिया और गहरी समझ विकसित की।

परिषद्, मंजूषा शैली में आवरण पृष्ठ के चित्रांकन के लिए ज्योति कुमारी, नूतन श्रीवास्तव और अनुकृति कुमारी, बिहार का विशेष आभार व्यक्त करती है।

प्रवेशिका निर्माण संबंधी दिशा-निर्देश पुस्तिका के निर्माण में विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए योगेश प्रताप सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर, शुभम कुमार, सीनियर ग्राफ़िक डिज़ाइनर, जितेंद्र, टाइपिस्ट के आभारी हैं, जिनके सहयोग से इस कार्य को पूरा करने में मदद मिली।

प्रकाशन प्रभाग से मिले सहयोग का परिषद् आभार व्यक्त करती है।


अपने लघु व्यवसाय को अब और ऊँचाई
देनी है, पढ़-लिख कर सफलता पाने की नई कहानी बुननी है।
उल्लास ULLAS
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING


शिक्षा प्रवेशिका पुस्तक,
कुछ ऐसी आकर्षक लगी।
साक्षर बनकर जीने की,
मन में इक लगन लगी।
उल्लास ULLAS
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

विषय-सूची

आमुख i

प्रस्तावना iii

प्रवेशिका निर्माण-समिति v

आभार vii

1.जन-जन हो साक्षर -एक यात्रा 1–7

- सबके लिए शिक्षा : एक परिचय
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और सबके लिए शिक्षा
- उल्लास : नव भारत साक्षरता कार्यक्रम
- प्रवेशिका 'उल्लास' के निर्माण की प्रक्रिया

प्रवेशिका : चिंतन-बिंदु 8–10

2.प्रवेशिका निर्माण : दिशा-निर्देश 11–37

अध्याय 1

जन-जन हो साक्षर - एक यात्रा

शिक्षा मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक और उपयोगी घटक है। शिक्षा जीवन में स्थिरता भी प्रदान करती है और यह हमारे सामाजिक उत्थान और मानसिक विकास का भी कारक है। अत: यह आवश्यक है कि सीखने-सिखाने के नए अवसरों की संभावनाएँ खोजी जाएँ और उन्हें जन-जन तक पहुँचाया जाए। संधारणीय विकास लक्ष्य (एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (2015)) का लक्ष्य 4 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बारे में है जो समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सभी को सीखने का अवसर देने का समर्थन करता है। लक्ष्य 4 का छठा बिंदु (4.6) सार्वभौमिक साक्षरता और संख्या-ज्ञान से संबद्ध है और विशेष रूप से कहता है कि 2030 तक यह सुनिश्चित करें कि सभी युवा और वयस्कों का एक बड़ा हिस्सा, पुरुष एवं स्त्री दोनों, साक्षरता तथा संख्या-ज्ञान प्राप्त करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी वर्ष 2030 तक 100% साक्षरता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने केंद्र प्रायोजित नई योजना 'नव भारत साक्षरता कार्यक्रम' को मंजूरी प्रदान की है। नवभारत साक्षरता कार्यक्रम अ-साक्षर लोगों को साक्षर बनाने के क्रम में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह कार्यक्रम उन व्यक्तियों के लिए है जिनके पास जीवन जीने का पर्याप्त अनुभव है, वे चीज़ों को जानते-समझते हैं परंतु जो पढ़ने-लिखने एवं संख्या-ज्ञान की क्षमता न होने के कारण अनेक चुनौतियों का सामना करते हैं। यह कार्यक्रम एक नई दिशा और ऊर्जा के साथ अ-साक्षर लोगों को साक्षरता की सीढ़ी से जोड़कर देश को आगे बढ़ाने के नए विकल्पों की ओर हम सभी को अभिप्रेरित करता है।

सबके लिए शिक्षा : एक परिचय

सबके लिए शिक्षा (पूर्ववर्ती प्रौढ़ शिक्षा) विशेष रूप से उन व्यक्तियों के लिए है जिन्हें समाज द्वारा वयस्क माना जाता है। सवाल यह है कि प्रौढ़ शिक्षा का महत्व क्या है और यह किस प्रकार से किसी व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाती है। जैसा कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि शिक्षा केवल विद्यालयों की कक्षाओं तक सीमित नहीं है बल्कि हमारे दैनिक जीवन के कार्यों को सरलतापूर्वक संपन्न करने में सहयोग करती है। शिक्षा हमें जागरूक, सक्षम और कार्य कुशल बनाती है। इससे कोई भी व्यक्ति अपनी तकनीकी या व्यावसायिक योग्यताओं को बढ़ा सकता हैं, अपनी क्षमताओं को और विकसित कर सकता हैं, और अपने ज्ञान को निम्नलिखित में से एक या कई लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए समृद्ध कर सकता हैं-

- औपचारिक शिक्षा के एक निश्चित स्तर को प्राप्त करने के लिए।
- एक नए क्षेत्र में ज्ञान, कौशल और दक्षता हासिल करने के लिए।
- किसी विशिष्ट क्षेत्र में अपने ज्ञान को ताज़ा या अद्यतन (update) करने के लिए।

सबके लिए शिक्षा (पूर्ववर्ती प्रौढ़ शिक्षा) का इतिहास पुराना है और इसे पहले कई नामों से जाना और पहचाना जाता था। इसे 'सतत शिक्षा', 'आवर्ती शिक्षा' और 'दूसरा मौका शिक्षा' के रूप में भी जाना जाता है। प्रौढ़ शिक्षा के पूरे इतिहास में, अवधारणा अपने नाम में कई बदलावों के साथ विकसित हुई है। 1947 तक, मौलिक धारणा 'बुनियादी शिक्षा' थी, जो एक पारंपरिक पद्धति पर आधारित थी और एक रात्रि विद्यालय पाठ्यक्रम पर केंद्रित थी। 'नागरिक साक्षरता' की धारणा, जो जीवन-उन्मुख दृष्टिकोण पर आधारित थी और सामाजिक शिक्षा पर केंद्रित थी, 1949 और 1966 के बीच कार्यरत थी। (1967 और 1977 के बीच, कार्य-उन्मुख दृष्टिकोण पर आधारित 'कार्यात्मक साक्षरता' की धारणा के अंतर्गत, कार्यात्मक साक्षरता, किसान शिक्षा और श्रमिक विद्यापीठ पर बल देने के साथ प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा दिया गया था)। 1978 से, 'विकासात्मक साक्षरता' अवधारणा अधिक लोकप्रिय थी, जो सामाजिक परिवर्तन की रणनीति पर आधारित थी और समग्र साक्षरता पहल पर केंद्रित थी। रात्रि विद्यालयों के आगमन के साथ, जिन्हें 1929 में सहायता अनुदान प्राप्त हुआ, बुनियादी साक्षरता की धारणा उभरी। इस योजना के पाठ्यक्रम को दो साल से अधिक समय दिया गया था और इसमें 3 R's - अक्षर को पढ़ना लिखना और अंकज्ञान, ऐतिहासिक कथाओं और बुनियादी स्वास्थ्य, स्वच्छता और प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण में मामूली सबक शामिल थे। इसके अंतर्गत शाम को करीब दो से तीन घंटे तक प्रशिक्षण चला करता था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और सबके लिए शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में सबके लिए शिक्षा (पूर्ववर्ती प्रौढ़ शिक्षा) पर बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुच्छेद 21.4 में यह कहा गया है कि "प्रौढ़ शिक्षा के लिए सरकार द्वारा मज़बूत और अभिनव पहल करने की आवश्यकता है – विशेष रूप से सामुदायिक भागीदारी और प्रौद्योगिकी के सुचारू और लाभकारी एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए"- जो भारत में 100 प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया को गति देने में मदद करेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सबके लिए शिक्षा (पूर्ववर्ती प्रौढ़ शिक्षा) के पाँच घटकों को शामिल करने की भी अनुशंसा की गई है, जैसे -

- मूलभूत साक्षरता और संख्या-ज्ञान
- महत्वपूर्ण जीवनकौशल (वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, व्यावसायिक कौशल, स्वास्थ्य देखभाल और जागरूकता, बाल देखभाल और शिक्षा, और परिवार कल्याण सहित)
- व्यावसायिक कौशल विकास (स्थानीय रोजगार प्राप्त करने की दृष्टि से)
- बुनियादी शिक्षा (प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तर की समकक्षता सहित)

- सतत शिक्षा (कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संस्कृति, खेल और मनोरंजन के साथ-साथ रुचि के अन्य विषयों या स्थानीय शिक्षार्थियों के उपयोग के लिए समग्र वयस्क शिक्षा पाठ्यक्रम, जैसे, महत्वपूर्ण जीवन कौशल पर अधिक उन्नत सामग्री सहित)।

इन पाँचों घटकों को गहराई से देखने पर यह ज्ञात होता है कि ये जीवन के अनेक महत्वपूर्ण आयाम हैं और किसी भी व्यक्ति के जीवन की गरिमा बनाए रखने में सहायक होंगे।

उल्लास : नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और केंद्रीय बजट घोषणाओं वित्त वर्ष 2021-22 के अनुरूप वित्तीय वर्ष 2022-2027 के लिए भारत सरकार ने नव भारत साक्षरता कार्यक्रम नाम से केंद्र प्रायोजित नई योजना को प्रारम्भ किया है जिसे लोकप्रिय रूप से 'उल्लास' के नाम से जाना जाता है - समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम में 'प्रौढ़ शिक्षा' के स्थान पर 'सभी के लिए शिक्षा' शब्द का उपयोग करने का विकल्प चुना, क्योंकि इसमें 15 और उससे अधिक आयु के उन सभी अ-साक्षरों को पर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित किया गया है जिन्हें किन्हीं कारणों से उचित विद्यालयी शिक्षा नहीं मिल पाई और जिन्हें समाज की मुख्य धारा में लाना है, जिससे वे भी सक्षम बन सकें और समाज के कल्याण में अपना योगदान दे सकें। इस योजना में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित पाँचों घटकों को सम्मिलित किया गया है। इस योजना का उद्देश्य अ-साक्षर शिक्षार्थियों को बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ 21वीं सदी के नागरिक के लिए आवश्यक अन्य घटकों के लिए अवसर की उपलब्धता एवं कुशलता का विकास करना भी है। वित्तीय वर्ष 2022-27 के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान का लक्ष्य 1 करोड़ शिक्षार्थी प्रति वर्ष की दर से 5 करोड़ शिक्षार्थी हैं जिन्हें राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, एनसीईआरटी और एनआईओएस के सहयोग से सीखने के ऑनलाइन और ऑफलाइन तरीकों को मिश्रित करते हुए साक्षर बनाना है। 'उल्लास' ऐप पर अ-साक्षर शिक्षार्थियों एवं स्वयंसेवी शिक्षक के पंजीकरण का प्रावधान है जिसमें नाम, जन्म तिथि, लिंग, आधार संख्या, मोबाइल नंबर आदि जैसी आवश्यक जानकारी दी जाती है। स्वयंसेवी शिक्षकों का प्रशिक्षण, अभिविन्यास, कार्यशालाओं का आयोजन फेस-टू-फेस मोड के माध्यम से करने का प्रावधान है। सभी प्रकार की संसाधन सामग्री आसानी से सुलभ डिजिटल मोड, जैसे, टीवी, रेडियो, सेल फोन-आधारित फ्री/ओपन-सोर्स ऐप/पोर्टल आदि के माध्यम से पंजीकृत स्वयंसेवकों तक आसान पहुँच के लिए डिजिटल रूप से उपलब्ध कराने का भी प्रावधान है।

नव भारत साक्षरता कार्यक्रम योजना में विद्यालय योजना के क्रियान्वयन की इकाई है और विद्यालयों का उपयोग अ-साक्षर शिक्षार्थियों एवं स्वयंसेवी शिक्षकों का सर्वेक्षण करने के लिए किया जा रहा है। वस्तुत: उल्लास (नव भारत साक्षरता कार्यक्रम) स्वैच्छिकता की भावना से प्रेरित है और एक जन-आंदोलन के रूप में जन-जन को साक्षर बनाने का कार्य किया जा रहा है।



(स्रोत- यूडाईज के तहत पंजीकृत स्कूलों के आँकड़े
https://nilp.education.gov.in/nilp/#/about-us)

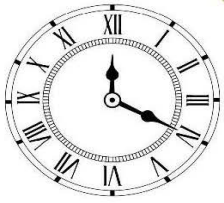
देशभर के अ-साक्षर युवाओं और वयस्कों को साक्षर बनाने के साथ –साथ उनके समग्र विकास और सशक्तिकरण के लिए कार्य करना है। यह भी सत्य है कि भारत विविधताओं का देश है, अत: इस योजना में पर्याप्त लचीलापन है और राज्य अपनी स्थानीय विशेषताओं को केंद्र में रखते हुए इस लक्ष्य को प्राप्त करने की अपनी रणनीतियाँ स्वयं बनाएँगे। सामाजिक चेतना केंद्रों की स्थापना, स्वयंसेवकों की सामूहिक विशेषज्ञता और समर्पण का भाव, सामुदायिक जुड़ाव की मज़बूत भावना को बढ़ावा देना, राष्ट्र निर्माण के प्रति सामाजिक कर्तव्य बोध की निर्वहन योजना के मुख्य बिंदु हैं। जो विद्यार्थी इस योजना में हिस्सा ले रहे हैं उन्हें स्कूल/विश्वविद्यालय में क्रेडिट और प्रमाण पत्र, प्रशंसा पत्र, अभिनंदन आदि जैसे, अन्य माध्यमों से सराहना के अवसर प्रदान करने के प्रावधान किए जा रहे हैं।

प्रवेशिका 'उल्लास' के निर्माण की प्रक्रिया

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और नव भारत साक्षरता कार्यक्रम की अनुशंसाओं और शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) के राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, (CNCL) 2021- 22 में 'उल्लास' प्रवेशिका का निर्माण किया गया। इस प्रवेशिका के चार भाग हैं जिनमें 13 थीम या अंतर्वस्तु हैं जो शिक्षार्थियों के जीवन से जुड़े हुए हैं। इसमें बुनियादी साक्षरता, संख्या-ज्ञान और महत्वपूर्ण जीवन कौशल को समान रूप से सम्मिलित किया गया है। महत्वपूर्ण जीवन कौशल के अंतर्गत वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, कानूनी साक्षरता और पर्यावरण संबंधी साक्षरता आदि विषयों को इस प्रवेशिका में विशेष स्थान दिया गया है।

■ देखिए, पढ़िए और बातचीत कीजिए

आप अपने मोबाइल में इनमें से किन-किन का उपयोग करते हैं? सही (✓) का निशान लगाइए-


घड़ी



कैलेंडर


व्हाट्सऐप


एस.एम.एस.


कैलकुलेटर


गूगल मेप


यू-ट्यूब



ई-मेल


फ़ेसबुक


संपर्क सूची



दीक्षा


टॉर्च

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों के साथ एक-एक करके दिए गए चित्रों की पहचान करवाएँ। उन चित्रों के नीचे लिखे शब्द पढ़वाएँ। उनके इस्तेमाल के बारे में बातचीत करें। हो सकता है कि कुछ सहभागी इनके इस्तेमाल और कामों से परिचित न हों।

उल्लास – भाग 4, पाठ 13, पृष्ठ 302

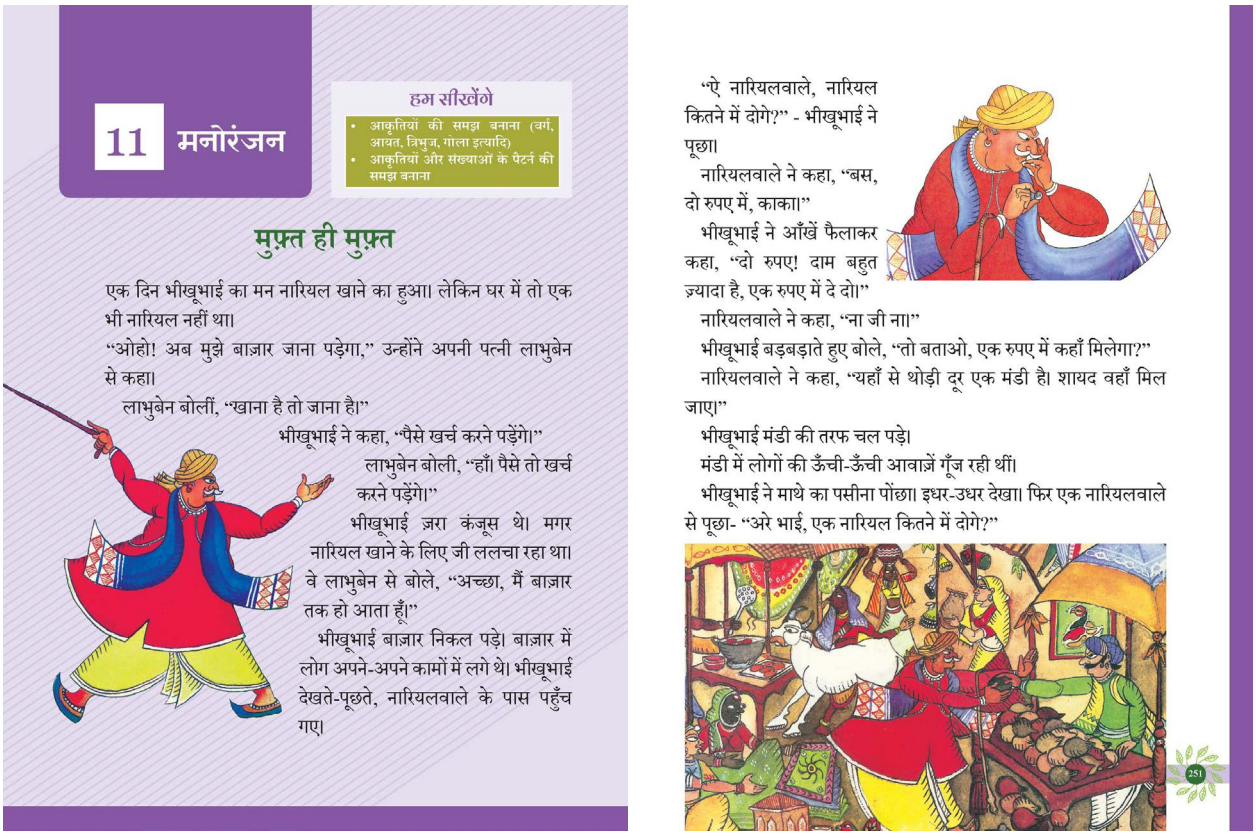
इन चारों भागों में हिंदी और गणित सीखने की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। इनमें भाषा की समझ बनाने पर ज़ोर दिया गया है, जिसमें पढ़कर समझना और समझकर पढ़ना – दोनों पक्षों को सम्मिलित किया गया है। यहाँ पढ़ने-लिखने के साथ समझना-समझाना, अपनी राय बनाना, प्रतिक्रिया व्यक्त करना, समझकर लिखना आदि को शामिल किया गया है। इसी तरह गणित में अंक ज्ञान के साथ-साथ गणितीय अवधारणाओं की समझ व उनका दैनिक जीवन में प्रयोग सम्मिलित है।



उल्लास – भाग 3, पाठ 8, पृष्ठ 196-197

प्रवेशिका को 4 खंडों और 13 उपविषयों में विभाजित किया गया है। सभी पाठों को इस तरह से बनाया गया है कि शिक्षार्थी विषयों से जुड़ाव महसूस करें और अपने जीवन से जुड़े अनुभवों को विषयों से जोड़कर बातचीत कर सकें। प्रवेशिका में दिए गए विषय इस प्रकार हैं- परिवार और पड़ोस, बातचीत, खानपान और स्वास्थ्य, वित्तीय साक्षरता, कानूनी साक्षरता, पर्यावरण, चुनावी साक्षरता, आपदा प्रबंधन, पैसे, समय, यात्रा करना और मनोरंजन। राष्ट्रीय स्तर पर सामंजस्य विकसित करने के लिए विभिन्न राज्यों से दृष्टांतों, कहानियों, कविताओं आदि का उपयोग किया गया है। प्रवेशिका के निर्माण में अपनी क्षमता से भाग लेने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया था। उदाहरण के लिए, प्रवेशिका का मुख्य आवरण मधुबनी कला में बनवाया गया है, जो बिहार की लोककला के नाम से विश्व प्रसिद्ध है। कई अन्य पाठों में विभिन्न कलाओं को सम्मिलित किया गया है जैसे, गोंडकला आदि। हमने वास्तविक जीवन की स्थितियों को चित्रित करने की कोशिश की है, जैसे, सड़कों पर घूमते लोग, खेल रहे बच्चों का एक समूह, महिलाएँ एक-दूसरे से बात कर रही हैं, बाज़ार, गाँव के दृश्य, अर्ध शहरी कस्बे और पर्यावरण संबंधी तस्वीरें आदि। इन्हें इस तरह से गढ़ा गया है कि वे शिक्षार्थियों को दैनिक जीवन के पाठ्यक्रम से आसानी से जोड़ सकें और अवधारणाओं को सीखने और समझने में मदद कर सकें।

मूलभूत साक्षरता और संख्या-ज्ञान और महत्वपूर्ण जीवन कौशल के आधार पर एकीकृत रूप में ऊपर वर्णित पाठ बनाए गए हैं , ताकि शिक्षार्थी संचयी रूप से एक ही बार में सीखने, लिखने और समझने में सक्षम हो सकें।



11 मनोरंजन

हम सीखेंगे
- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना

मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखूभाई का मन नारियल खाने का हुआ। लेकिन घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

"ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा," उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन बोलीं, "खाना है तो जाना है।"

भीखूभाई ने कहा, "पैसे खर्च करने पड़ेंगे।"

लाभुबेन बोली, "हाँ। पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।"

भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। मगर नारियल खाने के लिए जी ललचा रहा था। वे लाभुबेन से बोले, "अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ।"

भीखूभाई बाज़ार निकल पड़े। बाज़ार में लोग अपने-अपने कामों में लगे थे। भीखूभाई देखते-पूछते, नारियलवाले के पास पहुँच गए।

"ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?" - भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, "बस, दो रुपए में, काका।"

भीखूभाई ने आँखें फैलाकर कहा, "दो रुपए! दाम बहुत ज़्यादा है, एक रुपए में दे दो।"

नारियलवाले ने कहा, "ना जी ना।"

भीखूभाई बड़बड़ाते हुए बोले, "तो बताओ, एक रुपए में कहाँ मिलेगा?"

नारियलवाले ने कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर एक मंडी है। शायद वहाँ मिल जाए।"

भीखूभाई मंडी की तरफ चल पड़े।

मंडी में लोगों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

भीखूभाई ने माथे का पसीना पोंछा। इधर-उधर देखा। फिर एक नारियलवाले से पूछा- "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?"

251

उल्लास – भाग 4, पाठ 11, पृष्ठ 250-251

खंड 4 के एक अध्याय में 'भीखू भाई की कहानी' सम्मिलित की गई है, यह हमें गुजरात की संस्कृति की झलक देती है। डिजिटल, वित्तीय और कानूनी साक्षरता प्रदान करने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हाल की नीतियों को कहानियों और कविताओं के माध्यम से शिक्षार्थियों के लिए समझना आसान बनाया गया है। छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के कुछ लोकगीतों को प्रवेशिका में डाला गया है, जैसे, 'ददरिया लोकगीत'।

इन मापदंडों पर तैयार प्रवेशिका की समीक्षा करने के लिए विभिन्न प्रौढ़ शिक्षा, भाषाओं और बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता के विशेषज्ञों के साथ समीक्षा समिति का गठन किया गया था। उनकी सिफारिशों और सुझावों के आधार पर प्रवेशिका में बदलाव किए गए। प्रवेशिका तैयार हो जाने के बाद उसके परीक्षण की आवश्यकता होती है, इसलिए उल्लास के क्षेत्रीय परीक्षण के लिए आठ हिंदी भाषी राज्यों का चयन किया गया था, जिसमे हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, बिहार और झारखंड शामिल थे। प्रवेशिका मूलरूप से हिंदी भाषा में बनायी गई हैं इसलिए हिंदी भाषी राज्यों को क्षेत्रीय परीक्षण के लिए चुना गया था। इन राज्यों में उल्लास के चारों खंडों के 13 विषयों का परीक्षण किया गया जिसमें प्रवेशिका के व्यावहारिक पक्षों पर शिक्षार्थियों, इससे जुड़े व्यक्तियों और सीएनसीएल टीम के सदस्यों द्वारा एकत्रित जानकारी का उपयोग करते हुए प्रवेशिका में आवश्यक संशोधन किए गए। इसके बाद ही प्रवेशिका को अंतिम रूप देकर दीक्षा पोर्टल पर सभी के अधिकतम प्रयोग के लिए अपलोड किया गया है।

आशा है कि प्रवेशिका जन-जन को साक्षर बनाने में सहायक होगी जिससे शिक्षार्थी सशक्त और सक्षम हो समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकेंगे।

प्रवेशिका — चिंतन-बिंदु

प्रवेशिका मूलत: एक संसाधन-सामग्री है, एक उपकरण है, एक साधन है जिसका उपयोग उन शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने और संख्या सीखने के लिए उत्प्रेरक वातावरण के निर्माण *के लिए किया जा सकता है, जो भिन्न-भिन्न कारणों से अपनी प्रारंभिक आयु में अक्षर-ज्ञान नहीं प्राप्त कर पाए* । यह प्रवेशिका एक ओर जहाँ शिक्षार्थियों को पढ़ने-लिखने संबंधी सामग्री प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर, स्वयंसेवी शिक्षकों को यह भी दिशा-निर्देश प्रदान करती है कि अंतत: हमारा लक्ष्य क्या है? और हमें उस लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना है!

यह सत्य है कि 'पढ़ना-लिखना' एवं 'गणितीय अवधारणाओं' को सीखने/सिखाने के लिए हमारे पास पढ़ने-लिखने एवं गणितीय अवधारणाओं को सीखने/सिखाने की सामग्री भी होनी चाहिए। इस रूप में बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान साध्य है तो प्रवेशिका आदि संसाधन सामग्री साधन मात्र हैं। यह बिंदु अत्यंत ध्यान में रखने योग्य है कि शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं। परिणामतः उनके द्वारा साक्षरता और संख्या-ज्ञान प्राप्त करने से समबन्धित उद्देश्यों में भी भिन्नताओं का होना अत्यंत स्वाभाविक होगा । उनके परिवेश, अनुभव, चिंतन-क्षमता व स्तर, भाषा, समाज-सांस्कृतिक व आर्थिक संदर्भों में भिन्नता होती है। अत: एक ही प्रकार की संसाधन सामग्री सभी शिक्षार्थियों के लिए समान रूप से उपयोगी हो, यह आवश्यक नहीं है, तथापि सामग्री को शिक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप संयोजित/ रूपांतरित करते हुए उसे प्रयोग में लाया जा सकता है। प्रवेशिका जैसी संसाधन सामग्री अथवा कोई भी अन्य संसाधन सामग्री अपने-आप में अंतिम नहीं हो सकती, अपितु उसमें विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर परिमार्जन की अपेक्षा रहेगी ही, और इस दृष्टि से हमें अपने शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए पूर्व निर्मित सामग्री में जहाँ निरंतर संशोधन करते रहना होगा, वहीं निरंतर नूतन संसाधन सामग्री का निर्माण भी करते रहना होगा।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि 'प्रवेशिका' बुनियादी पढ़ना-लिखना और संख्या सीखने-सिखाने का प्रवेश द्वार है, जिसमें प्रवेश करने के पश्चात् इस रूप में एक उचित दिशा मिलती रहनी चाहिए कि क्या करना है! और कैसे करना है? यह प्रवेशिका केवल साधन है, उपकरण है जिसे आधार बनाते हुए हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचना है। प्रवेशिका के अतिरिक्त अन्य प्रकार की दृश्य-श्रव्य सामग्री भी बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान को सीखने में सहायक होती है। हमें इस तरह की भी सामग्री का निर्माण करते रहना होगा।

सबके लिए शिक्षा (पूर्व में प्रौढ़ शिक्षा) को राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की अनुशंसाओं के आलोक में देखने की आवश्यकता है। यहाँ यह अपेक्षा की गई है कि शिक्षार्थी बुनियादी साक्षरता से प्रारंभ करते हुए डिजिटल दुनिया के विभिन्न उपकरणों का प्रयोग करने की दक्षता भी प्राप्त कर सकेंगे। इस अर्थ में *साक्षरता* एक व्यापक अवधारणा है जो केवल अक्षर या संख्या-ज्ञान तक परिसीमित नहीं है बल्कि *विभिन्न संदर्भों में विषयों को दृश्य, श्रव्य और डिजिटल सामग्री का उपयोग करके पहचानने, समझने, रचने, गणना करने एवं संवाद करने की* क्षमता

है। (***अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता संघ (आईएलए) से उद्धृत***)। साक्षरता का यह वितान शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं गरिमामय जीवन जीने में सहायक है।

नव भारत साक्षरता कार्यक्रम शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अप्रैल, 2022 में प्रारंभ किया गया है जिसका उद्देश्य 15 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले उन सभी शिक्षार्थियों के लिए पढ़ने-लिखने के अवसर उपलब्ध कराना है जो किन्हीं कारणों से साक्षरता और संख्या-ज्ञान अर्जित नहीं कर सके। प्रवेशिका (अथवा *उल्लास*) भाषा और गणित के बुनियादी कौशलों को अर्जित करने में सहायता करती है।

यह अत्यंत स्पष्ट है कि प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशिष्ट संरचना होती है। और, यह संरचना भाषा के प्रत्येक स्तर पर दृष्टिगत होती है, चाहे वह भाषा विशेष की ध्वनि-संरचना हो, शब्द-संरचना हो या फिर वाक्य संरचना। शब्दों को उनके अर्थ उसके भाषा-समुदाय से ही मिलते हैं। यही कारण है कि जहाँ एक ही वस्तु के लिए अलग-अलग भाषाओं में अलग शब्द मिलते हैं वहीं एक ही शब्द अलग-अलग भाषा-समाजों में अलग-अलग अर्थ देता है। अतः भाषा को उसके सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समझना होता है। कारण स्पष्ट है कि अंतत: भाषा का व्यवहार समाज में ही होता है और विभिन्न उद्देश्यों के लिए होता है।

एक अन्य बिंदु यह भी है कि भाषा के 'मौखिक और लिखित' दोनों रूप महत्वपूर्ण हैं। पढ़ना-लिखना सीखने-सिखाने में दोनों का प्रयोग अपेक्षित है। अपनी मौखिक भाषा और विचार से संपन्न शिक्षार्थी बोलकर अपनी बात को कहने-सुनने में सक्षम हैं, तो केवल भाषा के लिखित रूप को पढ़ने-लिखने की कुशलता अर्जित करनी है। अनेक शिक्षार्थी इन दोनों कुशलताओं में भी आंशिक रूप से दक्ष हो सकते हैं, अत: भाषा के मौखिक रूप के प्रयोग के माध्यम से भाषा के लिखित रूप तक पहुँचने का प्रयास करना होगा, इससे शिक्षार्थी में जहाँ एक ओर आत्मविश्वास आता है, वहीं दूसरी ओर पढ़ना-लिखना सीखने के प्रति ललक भी उत्पन्न होती है। इसका अर्थ यह है कि उनके लिए पढ़ना-लिखना सीखना पूर्णतः नया अभ्यास नहीं रहेगा। वे अनुभूत करने लगेंगे कि एक लंबी यात्रा का अधिकांश मार्ग तय कर लिया है। पढ़ना-लिखना सीख लेंगे तो शेष दूरी भी तय हो जाएगी और वे अपने लक्ष्य पर पहुँच जाएँगे।

बुनियादी संख्या-ज्ञान के संदर्भ में यह समझना अपेक्षित है कि शिक्षार्थी अपने जीवन में मौखिक रूप से गणितीय संक्रियाओं का प्रयोग करते हैं और भली-भाँति हिसाब-किताब कर लेते हैं। जो शिक्षार्थी संख्याओं और उनके लिखित नामों (कोई एक संख्या कैसे लिखी हुई दिखती है) से परिचित नहीं हैं, उन्हें थोड़ा और अधिक संख्या-ज्ञान अर्जित करने में सहायता करने की देर है, वे शीघ्र ही इस बुनियादी संख्या-ज्ञान की कुशलता को भी अर्जित कर लेंगे और जीवन के विभिन्न संदर्भों में इस कुशलता का प्रयोग भी कर लेंगे। उन्हें पुनः यह विश्वास दिलाने की आवश्यकता है कि बस थोड़ी-सी यात्रा शेष है।

प्रवेशिका का निर्माण करते हुए शिक्षार्थियों को यही विश्वास दिलाने के लिए अनेक अवसर जुटाए जाने चाहिएँ ताकि वे समझ के साथ भाषा और गणितीय संक्रियाओं का प्रयोग कर सकें। ये अवसर उनके जीवन के निकटीय परिवेश से जुड़े हुए होने चाहिएँ, क्योंकि इन बुनियादी कौशलों का प्रयोग अंतत: अपने परिवेश में ही

किया जाना है। शिक्षार्थियों के जीवन के विभिन्न संदर्भों में डिजिटल उपकरण और उससे जुड़ी डिजिटल साक्षरता, कानूनी साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, पर्यावरण संबंधी साक्षरता, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि की समझ भी शामिल है। प्रवेशिका में इन बिंदुओं को भी स्थान देना उचित रहेगा, जिससे हम जीवन के हर पक्ष का लाभ उठा सकेंगे और गुणवत्तापूर्ण जीवन जी सकेंगे।

प्रवेशिका निर्माण के आधार-बिंदु परामर्श हेतु हैं। इनमें बार-बार '*उल्लास*' शीर्षक प्रवेशिका से उदाहरण लिए गए हैं ताकि साक्षरता और संख्या-ज्ञान संबंधी बिंदु ठीक से समझ आ सकें। अपेक्षित यह है कि राज्य अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रवेशिका का निर्माण कर सकें। सभी राज्य '*उल्लास*' प्रवेशिका की विषय-सामग्री को अपनी भाषाओं की विशिष्ट संरचना के आलोक में संयोजित अथवा रूपांतरित भी कर सकते हैं अथवा प्रस्तावित दिशा-निर्देशों के आधार पर नई प्रवेशिका का निर्माण भी कर सकते हैं।

अध्याय 2

प्रवेशिका निर्माण के दिशा-निर्देश

उल्लास प्रवेशिका उन सभी शिक्षार्थियों को केंद्र में रखकर बनाई गई है –

- जिनके पास जीवन का बृहद् अनुभव हैं, जीवन के संघर्ष और चुनौतियों का सामना करने का साहस है,
- जो शिक्षित तो हैं लेकिन जो साक्षर नहीं।

ये वे शिक्षार्थी हैं जिनकी आयु 15 वर्ष अथवा उससे ऊपर की है और वे अपने जीवन के अलग-अलग संदर्भों में अपनी मातृभाषा के मौखिक रूप का प्रयोग आवश्यकतानुसार कुशलतापूर्वक करते हैं।

अपनी बात को कहने और दूसरों की बात को सुनकर समझने की योग्यता रखने वाले ये शिक्षार्थी गणित का व्यावहारिक प्रयोग भी जानते व समझते हैं। लेकिन संभवत: भाषा और गणित के लिखित रूप से इनका अधिक अथवा बिलकुल भी परिचय न हो। यह भी संभव है कि –

- जीवन के अलग-अलग पड़ावों पर और अलग-अलग संदर्भों में साक्षरता और गणित की बुनियादी क्षमता न होने के कारण इन शिक्षार्थियों को असफलता, निराशा अथवा ठगी का सामना करना पड़ा हो अथवा पड़ता हो।
- परिश्रम से अर्जित किया गया धन बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान के अभाव में यूँ ही व्यर्थ हो गया हो अथवा हो जाता हो, उसकी बचत न हो पाती हो,
- संचार के आधुनिक तरीकों के प्रयोग से मिलने वाली सहूलियत से ये वंचित हो जाते हों।
- डिजिटल साक्षरता के अभाव में वे बहुत सारी जानकारी और सुविधा से वंचित रह जाते हों।
- फिर चाहे—
  - वह वित्तीय साक्षरता हो, या
  - कानूनी साक्षरता हो या
  - पर्यावरण संबंधी साक्षरता या फिर
  - स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी साक्षरता

साक्षर होना इन सभी स्थितियों को साधने में मदद करता है।

शिक्षार्थियों के जीवन के आस-पास रची गई *उल्लास* प्रवेशिका शिक्षार्थियों में हिंदी भाषा और संख्या-ज्ञान की बुनियादी क्षमता का विकास करने और अपने जीवन में पढ़ने-लिखने और गणित का प्रयोग करने का अवसर देती है। यहाँ यह स्पष्ट होना अच्छा होगा कि यहाँ पढ़ने-लिखने का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं है अपितु जीवन में जहाँ-जहाँ भाषा मौजूद है, उसे समझना, अपनी राय बनाना, प्रतिक्रिया व्यक्त *करना और समझकर लिखना है।*

इसी प्रकार गणित की समझ का अर्थ केवल अंकों की पहचान तक परिसीमित नहीं है अपितु गणित की अवधारणाओं की समझ व उनका दैनिक जीवन में प्रयोग भी है।

इन शिक्षार्थियों के अपने-अपने अनुभव हैं और अपनी-अपनी प्राथमिकताएँ भी! उन सभी प्राथमिकताओं में एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है – भाषा (हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषा) और गणित को पढ़ना-लिखना सीखना। इसी प्राथमिकता को केंद्र में रखते हुए –

***प्रवेशिका के प्रत्येक पाठ में शिक्षार्थियों के लिए सोचने, अपनी बात कहने, पढ़ने और लिखने के अवसर दिए गए हैं। ये अवसर अन्य और अवसरों को तलाशने, प्रदान करने में मार्गदर्शन करते हैं। शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, उनकी क्षमताओं और स्तर के अनुरूप पढ़ने-लिखने के अन्य अवसर जुटाए जा सकते हैं। उल्लास* प्रवेशिका का एक विशिष्ट बिंदु यह है कि इसमें भाषा/साक्षरता और गणित को एकीकृत रूप में रखा गया है।**

हम जानते हैं कि किसी भी विषय को पढ़ने-लिखने या समझने में भाषा माध्यम बनती है। यही स्थिति गणित के साथ भी है। गणित की भी अपनी भाषा होती है और उसे किसी भाषा के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जाता है। इस अर्थ में भाषा माध्यम का कार्य करती है। प्रवेशिका में आलोचनात्मक चिंतन के साथ एक संदर्भ विशेष लिया गया

■ **राजा का परिवार बैलगाड़ी से जा रहा है। देखिए, गिनिए और लिखिए—**



- गाड़ी में कुल कितने व्यक्ति हैं? ☐
- गाड़ी में कितने पुरुष हैं? ☐
- गाड़ी में कितनी महिलाएँ हैं? ☐
- टोकरी में कितने तरबूज़ हैं? ☐
- गाड़ी में कितने पहिये हैं? ☐
- गाड़ी में कितनी लालटेन हैं? ☐

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से वस्तुओं को गिनकर सही संख्या लिखने का अभ्यास करवाएँ। संख्या पढ़ने और लिखने में सहभागियों की मदद करें। आप चाहें तो आस-पास मौजूद चीज़ों की गिनती भी करवा सकते हैं।

उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 21

है और उसके साथ ही हिंदी भाषा पढ़ने-लिखने की गतिविधियाँ प्रारंभ होती हैं। गणित की बुनियादी क्षमताओं को उसी संदर्भ विशेष से जोड़ते हुए सीखने-सिखाने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए –

प्रवेशिका में 'राजा का परिवार' का चित्र दिया गया है और शिक्षार्थियों से उसे ध्यान से देखने के लिए कहा गया है। चित्र के अवलोकन के बाद जो प्रश्न पूछे गए हैं, वे संख्या-आधारित हैं। 'गाड़ी में कुल कितने व्यक्ति हैं?/ टोकरी में कुल कितने तरबूज़ हैं? गाड़ी में कितनी लालटेन हैं?' आदि। शिक्षार्थियों को स्वयंसेवी शिक्षकों की मदद से हिंदी भाषा में दिए गए इन प्रश्नों को पढ़ना होगा और फिर संख्या में उनके उत्तर देने होंगे। प्रवेशिका के चारों भागों में इसी एकीकृत रूप के अनुसार विषय-वस्तु को संयोजित किया गया है।

उल्लास प्रवेशिका के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को आगे विस्तार से दिया गया है। ये बिंदु विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में प्रवेशिका का निर्माण करने के संदर्भ में प्रस्तावित दिशा-निर्देश के रूप में सहायक होंगे। प्रत्येक बिंदु को स्पष्ट करने के लिए 'उल्लास' प्रवेशिका से उदाहरण भी दिए हैं। ये मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं –

- प्रवेशिका के पाठ अंतर्वस्तु/'थीम' आधारित हैं। पाठों की विषय-वस्तु 13 अंतर्वस्तु/'थीम' के आस-पास बुनी गई है। प्रवेशिका के लिए 15 वर्ष व उससे बड़ी आयु के शिक्षार्थियों के जीवन के अलग-अलग पहलुओं और आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए अलग-अलग अंतर्वस्तु/'थीम' तय किए गए हैं। उदाहरण के लिए – *परिवार और पड़ोस, बातचीत, हमारे आस-पास, खान-पान और स्वास्थ्य, मतदान, कानूनी जानकारी, आपदा प्रबंधन, समय, यात्रा, मनोरंजन, वित्तीय साक्षरता, डिजिटल साक्षरता, कानूनी साक्षरता, पर्यावरण के प्रति जागरूकता आदि।*

विषय-सूची

आमुख iii
प्रस्तावना v
स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें vii
निर्माण-समिति xi
आभार xiii

1. परिवार और पड़ोस 1–23
- अ, आ, न, प, स, र, व
- अनवरी का परिवार
- 1 से 9 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- आओ बादल

2. बातचीत 24–53
- इ, ई, ब, त, म, ख, ट, च
- स्कूल को चिट्ठी
- 10 से 20 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- 20 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना
- अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा

3. हमारा रहन-सहन 54–86
- ओ, औ, झ, द, ल, ग, क, य
- दीवाली के दीये
- 21 से 50 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- इकाई और दहाई समूहों में गिनना
- 50 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना
- कहानियाँ

उल्लास – भाग 1

विषय-सूची

आमुख iii
प्रस्तावना v
स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें vii
निर्माण-समिति xi
आभार xiii

11.मनोरंजन 248–267
- मुफ़्त ही मुफ़्त
- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना
- 'ददरिया' लोकगीत
- जादुई लालटेन

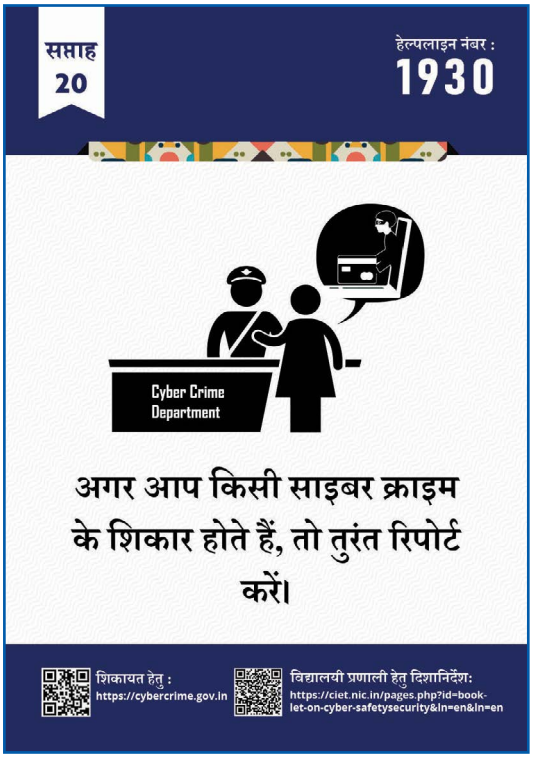
12. वित्तीय साक्षरता 268–287
- मेरा खाता मेरी शान
- बैंक खाता खुलवाने संबंधित जानकारी का उपयोग करना
- बैंक संबंधित फॉर्म पढ़ना, समझना और भरना (चैक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)
- दान का हिसाब

13. डिजिटल साक्षरता 288–306
- अब राह हुई आसान
- डिजिटल अंकों की पहचान एवं लिखना
- चित्र में प्रदर्शित आँकड़ों की समझ
- मोबाइल फ़ोन से संबंधित दैनिक जीवन की समस्या हल करना।
- मोबाइल की दुनिया

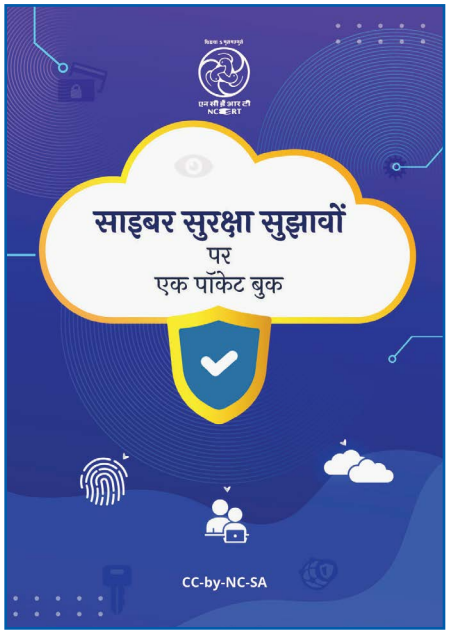
उल्लास – भाग 4

- प्रवेशिका की विषय-सामग्री का निर्धारण करते समय शिक्षार्थियों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को भी ध्यान में रखा गया है। यह बिंदु इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम भाषा और गणित की जिन बुनियादी कुशलताओं को सीखने-सिखाने की बात कर रहे हैं, वे अंतत: किसी समाज-संस्कृति विशेष में ही उपयोग में आएँगी। इसका अर्थ यह है कि भाषा और गणितीय अवधारणाओं का विकास और प्रयोग समाज से ही जुड़ा है। अत: शिक्षार्थियों से जुड़ी किसी भी संसाधन सामग्री के निर्माण में उनके सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को केंद्र में रखना होगा।
- यह ध्यान रखने योग्य तथ्य है कि इन शिक्षार्थियों का आयु वर्ग अपेक्षाकृत बड़ा है और इनके पास जीवन का समृद्ध अनुभव है, इस कारण से पाठों के परिप्रेक्ष्य में मौखिक चर्चा का स्तर भी उच्च है। साथ ही, महत्त्वपूर्ण जीवन कौशलों को पाठों की विषय-वस्तु में समाहित किया गया है। प्रवेशिका में ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जैसे – पाठ 13 '*डिजिटल साक्षरता*' में एक कहानी है –'*मोबाइल की दुनिया*'। इस पाठ में मोबाइल से जुड़ी विभिन्न प्रकार की जानकारी दी गई है और उससे संबंधित प्रश्नों में मोबाइल के सुरक्षित उपयोग को स्थान दिया गया है –
- किसी ऐसे अनुभव के बारे में बताइए जब आपको मोबाइल के कारण किसी काम में सुविधा हुई हो।
- आप अपने मोबाइल का इस्तेमाल किस-किस काम के लिए करते हैं?
- मोबाइल का इस्तेमाल करते समय किन बातों का ध्यान रखते हैं?





उल्लास – भाग 4, पाठ 13, पृष्ठ 303





उल्लास – भाग 4, पाठ 13, पृष्ठ 303

इसी प्रकार पाठ 7 '*कानूनी जानकारी*' में प्रथम सूचना रिपोर्ट (***एफ़आईआर***) के बारे में आवश्यक जानकारी दी गई है और उसी से संबंधित शिक्षार्थियों के अनुभव और चिंतन को आमंत्रित किया गया है कि जैसी–

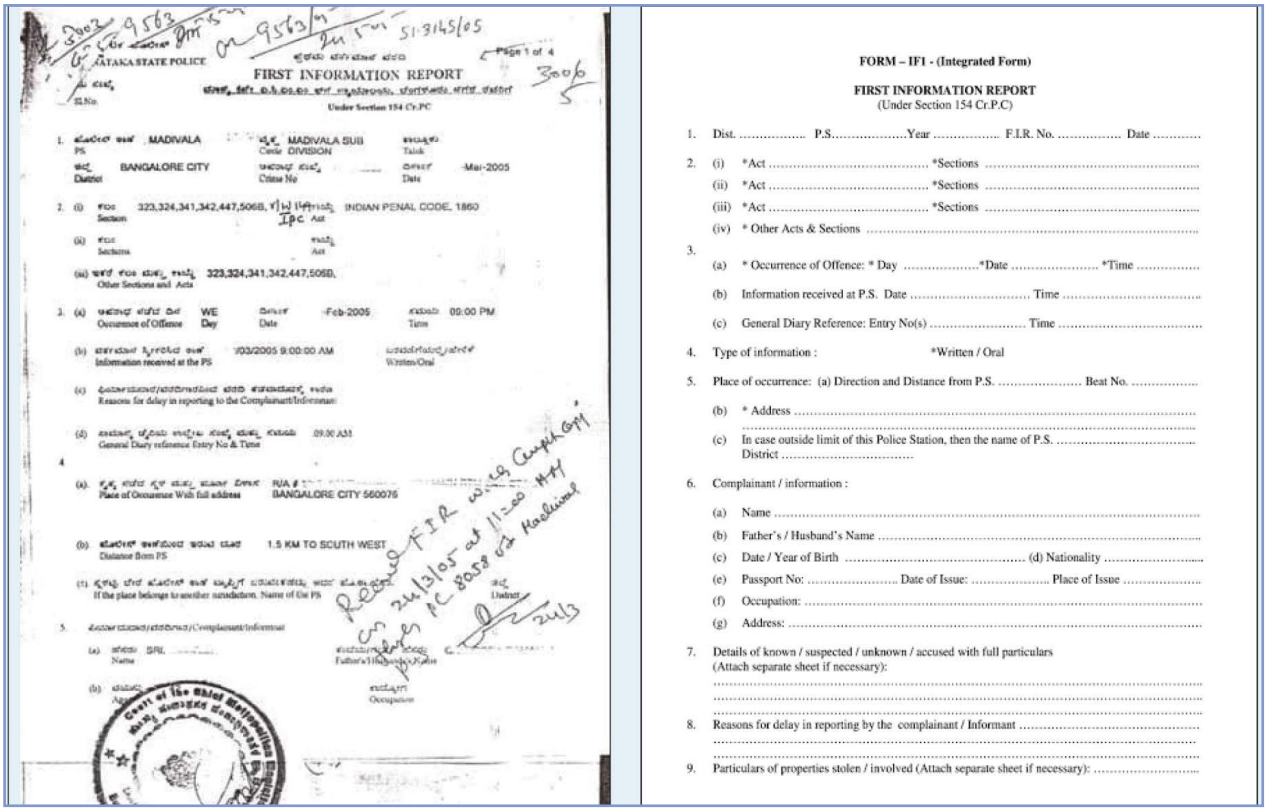
- क्या आपने कभी एफ़आईआर दर्ज करवाई है?
- आपके घर से सबसे नज़दीकी पुलिस थाना कौन-सा है?
- आवश्यकता पड़ने पर आप पुलिस की मदद किस टेलीफ़ोन नंबर पर ले सकते हैं?
- महिला सुरक्षा के लिए किस नंबर पर संपर्क किया जाता है?

▪ प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ़.आई.आर.)

पुलिस एफ़.आई.आर. दर्ज होने के बाद ही किसी अपराध की पड़ताल शुरू कर सकती है। कानून में कहा गया है कि अपराध की सूचना मिलने पर नज़दीकी थाने में फ़ौरन एफ़.आई.आर. दर्ज करनी चाहिए। पुलिस को यह सूचना मौखिक, लिखित या किसी भी रूप में मिल सकती है। एफ़.आई.आर. में आमतौर पर वारदात की तारीख, समय और स्थान को दर्ज किया जाता है। उसमें वारदात के मूल तथ्यों और घटनाओं का विवरण भी लिखा जाता है। अगर अपराधियों का पता हो तो उनके नाम तथा गवाहों के नाम को भी शामिल किया जाता है। एफ़.आई.आर. में शिकायत दर्ज कराने वाले का नाम और पता लिखा होता है। एफ़.आई.आर. के लिए पुलिस के पास एक खास फॉर्म होता है। इस पर शिकायत करने वाले के दस्तखत कराए जाते हैं। शिकायत करने वाले को पुलिस से एफ़. आई.आर. की एक नकल कॉपी मुफ़्त पाने का कानूनी अधिकार होता है।

(सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-III, एन.सी.ई.आर.टी.)

उल्लास – भाग 2, पाठ 7, पृष्ठ 185



FIRST INFORMATION REPORT

Under Section 154 Cr.PC

FORM – IF1 - (Integrated Form)

FIRST INFORMATION REPORT

(Under Section 154 Cr.P.C)

उल्लास – भाग 2, पाठ 7, पृष्ठ 185

पाठ 8 '*मुसीबतें कैसी-कैसी*' के निम्नलिखित प्रश्न भी देखे जा सकते हैं –

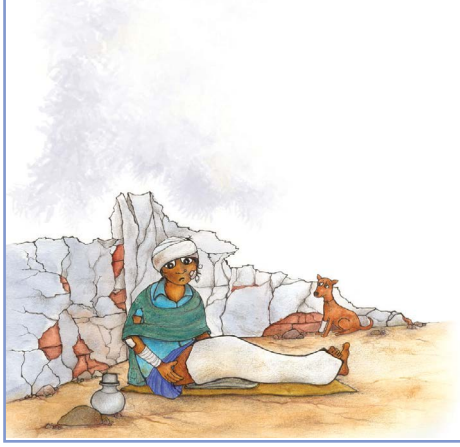
- सोचिए, अगर आपके यहाँ भूकंप आ जाए तो क्या आपके घर को भी ख़तरा होगा? यदि हाँ, तो आप कहाँ रहेंगे?
- क्या आपने अपने जीवन में सूखा, भूकंप, बाढ़ जैसी किसी प्राकृतिक आपदा का सामना किया है? यदि हाँ, तो अपना अनुभव साझा कीजिए।
- क्या आपको लगता है कि प्राकृतिक आपदाओं के लिए मनुष्य सीधे रूप से उत्तरदायी है। ऐसी किसी एक आपदा के बारे में साथियों के साथ बातचीत कीजिए और बातचीत में आए मुख्य बिंदुओं को लिखिए।

मिलकर पढ़िए

जब धरती काँपी

मेरा नाम जस्मा है। मैं गुजरात के कच्छ इलाके में रहती हूँ। बात तब की है जब मैं ग्यारह साल की थी। अचानक ज़मीन तेज़ी से हिलने लगी। सब लोग घबरा गए। कुछ ही समय में हमारा पूरा गाँव मलबे का ढेर बन गया। हमारे कपड़े, बर्तन, खाना— सब कुछ मलबे में दब गया।





बहुत सारे लोगों को चोटें भी लगीं। डॉक्टरों की टीम ने गाँव वालों की मदद की। उनकी मदद से लोग ठीक होने लगे।

ठंड का महीना था। इतनी ठंड में घर के बाहर रहना कठिन हो रहा था। ठंड और डर के मारे नींद नहीं आती थी। यही डर रहता कि कहीं फिर से भूकंप आ गया तो?

उल्लास – भाग 3, पाठ 8, पृष्ठ 200-201

- शिक्षार्थियों के सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखना और प्रवेशिका की पाठ्य सामग्री को संदर्भगत बनाने का अर्थ यह भी है कि भले ही हम स्वास्थ्य, यात्रा, आपदा प्रबंधन आदि अंतर्वस्तु/'थीम' को शामिल कर रहे हैं लेकिन इन तीनों की विषय-सामग्री राज्यों के संदर्भ के अनुसार भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, राजस्थान में 'यात्रा' अंतर्वस्तु के संदर्भ में ऊँट, ऊँटगाड़ी, रेगिस्तान आदि का उल्लेख होगा लेकिन केरल में इसी 'यात्रा' अंतर्वस्तु के संदर्भ में नदी, नाव, मल्लाह, चप्पू आदि का उल्लेख होगा। जबकि दिल्ली, बैंगलोर, कोलकाता आदि शहरों के संदर्भ में 'मेट्रो' का भी उल्लेख हो सकता है। इसी तरह 'आपदा प्रबंधन'

अंतर्वस्तु के संदर्भ में उन राज्यों की विषय-सामग्री में भेद हो सकता है, जहाँ भूकंप अधिक आता है या बाढ़ अधिक आती है। इसी तरह 'परिवार' अंतर्वस्तु के संदर्भ में परिवार के सदस्यों के क्रियाकलापों में भी भेद हो सकता है। दक्षिण भारत के राज्यों के संदर्भ में घर के द्वार पर सुबह-सुबह चावल के आटे या हल्दी आदि से रंगोली बनाने का उल्लेख हो सकता है। खान-पान में भी कहवा (कश्मीर), मक्के की रोटी और साग (पंजाब), लिट्टी-चोखा (बिहार) आदि का भेद हो सकता है। वेश-भूषा आदि में भी यह भेद दृष्टिगत हो सकता है – फिरन (कश्मीर), सलवार-कुर्ता (पंजाब), पुरुषों की धोती (दक्षिण भारत), मेखला (पूर्वोत्तर भारत) आदि।

- प्रवेशिका के सभी चारों भागों में साक्षरता/हिंदी भाषा और संख्या-ज्ञान को एकीकृत रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि जब हम गणित सीखते हैं तो किसी भाषा के माध्यम से ही सीखते हैं और

प्रश्न 6. अपने वोटर कार्ड को देखकर उसमें दी गई जानकारी की सूची बनाइए-

क्र.सं.	जानकारी
1.	मतदाता का नाम
2.	
3.	लिंग
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	

मतदान पहचान पत्र भारत के सभी नागरिकों जिनकी उम्र 18 या 18 से अधिक है, उनके लिए जारी किया जाता है। पहचान पत्र भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किया जाता है।

चर्चा कीजिए-

- वोट देना क्यों ज़रूरी है?
- लोकतंत्र किसे कहते हैं?
- आप कब-कब वोट देते हैं?
- वोट देने से पहले आप क्या-क्या सोचते है और क्यों?

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से मतदान और उससे जुड़ी आवश्यक बातों पर चर्चा करें। वोट के अधिकार विशेष और उसके सही प्रयोग पर बल दें।

उल्लास – भाग 2, पाठ 6, पृष्ठ 166

भाषा के व्यवहार या प्रयोग में गणितीय अवधारणाएँ भी सम्मिलित हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, जब हम किसी राशन की दुकान से राशन खरीदते हैं तो आटा, दाल, चावल, साबुन आदि के नाम पढ़ते हैं, उसकी दर दुकानदार से पूछते हैं या दर-सूची को भी पढ़ते हैं और फिर खरीदे गए सामान की दर और मात्रा के अनुसार यह भी निर्धारित करते हैं कि दुकानदार को कितने रुपए-पैसे देने हैं। अगर सामान 1570 रुपए का आया है और हमने दुकानदार को 2000 रुपए का नोट दिया है तो जो रुपए-पैसे दुकानदार से वापस मिलते हैं, उसका हिसाब-किताब भी रखना है। बिल को पढ़ना भी है कि दुकानदार ने सही-सही हिसाब लगाया है या नहीं और उसने 430 रुपए वापस दिए हैं न! इस पूरी प्रक्रिया में भाषा और गणित साथ-साथ और एकीकृत रूप से चलते हैं। *गणित में भाषा और भाषा में गणित*!

चुनाव में मतदान के पश्चात् वोटों की गिनती की जाती है जिसे मतगणना कहते हैं। सबसे अधिक वोट मिलने वाले को विजयी घोषित किया जाता है।



एक मतदान से संबंधित सूचना दर्शाई गई है-

लक्ष्मी	– 200 वोट
विजय	– 124 वोट
झुमरी	– 176 वोट
डाले गए कुल वोट	– 500

ऊपर दी गई सूचना को समझकर बताइए-

क. किसे सबसे अधिक वोट मिले हैं? _____

ख. सबसे कम वोट किसे मिले हैं? _____

ग. चुनाव में दूसरे स्थान पर कौन है? _____

घ. चुनाव में कुल कितने उम्मीदवार हैं? _____

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे विभिन्न संदर्भों में तीन अंकों में तुलना कर सकें तथा जोड़-घटाव करने के विविध तरीके खोजें और साथ ही दी गई जानकारी के आधार पर निर्णय ले सकें।

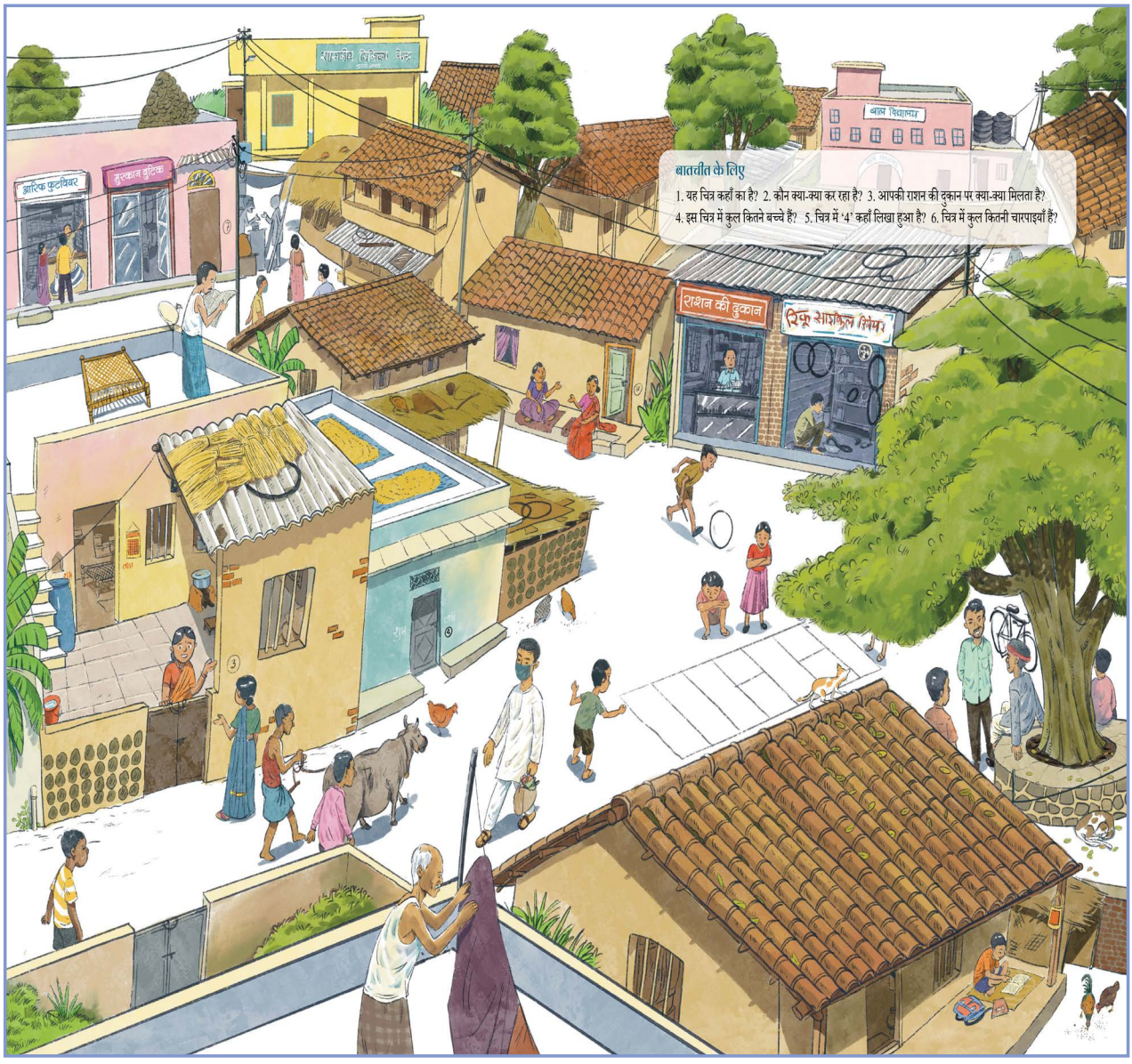
उल्लास – भाग 2, पाठ 6, पृष्ठ 169

- प्रवेशिका में हिंदी और गणित सीखने की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। एक ही पाठ की विषय-वस्तु के संदर्भ को केंद्र में रखते हुए हिंदी भाषा और गणित को साथ-साथ रखा गया है। उदाहरण के लिए 'मतदान' (पाठ 6) में भाषा संबंधी अभ्यास के अंतर्गत मतदान से संबंधित आवश्यक जानकारी दी गई है, वोट की महत्ता को दर्शाते पोस्टर्स पर बातचीत की गई है। शिक्षार्थियों को यह अवसर दिया गया है कि वे अपने वोटर कार्ड पर लिखी जानकारी को ध्यान से पढ़ें और उसके बारे में बताएँ। साथ ही आलोचनात्मक विश्लेषण के उपरांत अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी दे सकें –
  - वोट देना क्यों ज़रूरी है?
  - लोकतंत्र किसे कहते हैं?
  - आप कब-कब वोट देते हैं?
  - वोट देने से पहले आप क्या-क्या सोचते हैं और क्यों?

  इसके उपरांत 'आँकड़ों को पढ़ने और समझने' (data handling) का अभ्यास दिया गया है। इसमें मतदान से संबंधित सूचना को दर्शाते हुए यह पूछा गया है –
  - किसे सबसे अधिक वोट मिले हैं?
  - सबसे कम वोट किसे मिले हैं?
  - चुनाव में दूसरे स्थान पर कौन है?
  - चुनाव में कुल कितने उम्मीदवार हैं?

इस तरह से भाषा और गणित संबंधी अभ्यास एक ही संदर्भ से जुड़े हुए हैं।

- अधिकतर पाठों का प्रारंभ पोस्टरनुमा एक बड़े चित्र से किया गया है। उदाहरणतः, *'परिवार और पड़ोस'*, *'हमारा रहन-सहन'* आदि के पोस्टरनुमा चित्रों पर बातचीत करने से शिक्षार्थी उस थीम से संज्ञानात्मक रूप से जुड़ाव महसूस कर सकेंगे। चित्रों पर बातचीत से शिक्षार्थियों के समृद्ध अनुभव, उनके विचार, प्रतिक्रिया, टिप्पणी आदि को भी सम्मान और स्थान मिलता है। जैसे हमारे परिवेश में दीवारों पर, होर्डिंग आदि पर कुछ न कुछ लिखा हुआ मिलता है, उसी प्रकार उनके इन चित्रों में भी शिक्षार्थियों को जगह-जगह कुछ लिखा हुआ मिलेगा। चित्रों पर बातचीत करते हुए इन शब्दों-वाक्यों पर भी बातचीत की जा सकेगी। यह बातचीत शिक्षार्थियों के पढ़ने-लिखने के कौशलों को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।



उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 2-3



उल्लास – भाग 1, पाठ 3, पृष्ठ 54-55

- प्रवेशिका में प्रत्येक गतिविधि को एक शीर्षक दिया गया है। यह शीर्षक थोड़े बड़े फॉण्ट और अलग रंग में है ताकि इसे स्पष्ट रूप से पहचाना जा सके। इस शीर्षक से एक दृष्टि से ही जाना जा सकेगा कि उस गतिविधि में क्या करना है। उदाहरण के लिए – *'चित्र से अनुमान लगाकर पढ़िए'*, *'पढ़िए और लिखिए'* आदि।

चित्र से अनुमान लगाकर पढ़िए

आपके घर और आपके आस-पास इनमें से किनका इस्तेमाल होता है? सही का निशान (✓) लगाइए-



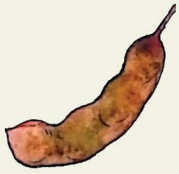
रेडियो



टेलीविजन

पढ़िए और लिखिए

इ

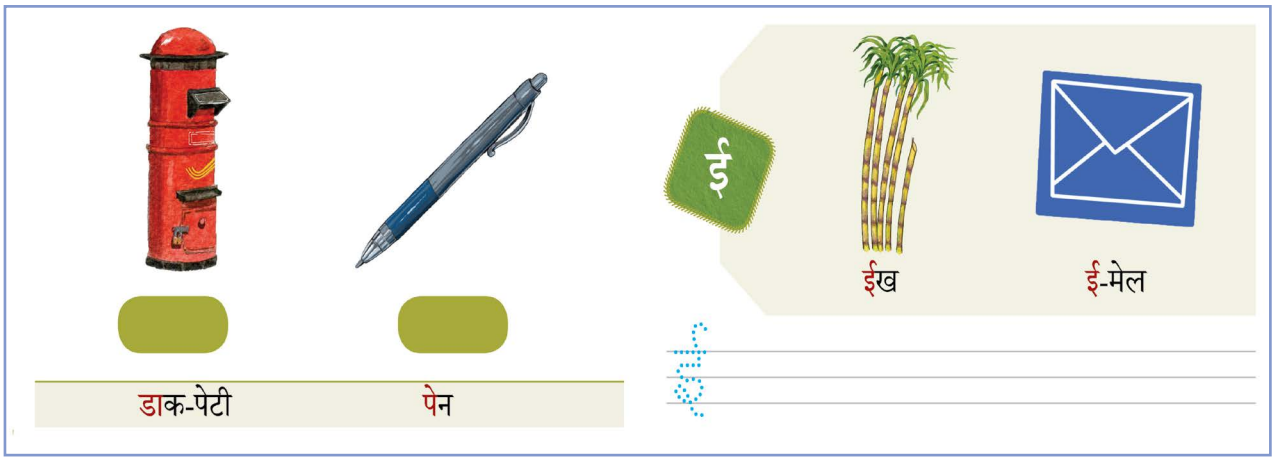


इमली



इकतारा

उल्लास – भाग 1, पाठ 2, पृष्ठ 28-29



उल्लास – भाग 1, पाठ 2, पृष्ठ 28-29

- प्रवेशिका में जहाँ तक संभव हो सके, आसान और आसानी से समझ में आने वाली भाषा का प्रयोग किया गया है ताकि इसका उपयोग करने वाले स्वयंसेवकों और शिक्षार्थियों, दोनों को आसानी हो।
- प्रवेशिका में प्रस्तुत सामग्री को पर्याप्त रूप से बड़े आकार में दिया गया है ताकि शिक्षार्थियों को देखने-पढ़ने में छोटे आकार के कारण कठिनाई न हो और उनकी आँखों पर ज़ोर न पड़े।
- प्रवेशिका को रंगों, चित्रों और रोचक विषय-वस्तु द्वारा आकर्षक बनाने का प्रयास किया गया है ताकि शिक्षार्थी पढ़ने-लिखने में रुचि लें और पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया उनके लिए उत्साहजनक और सरस बन सके।
- प्रवेशिका में हिंदी भाषा के अक्षरों या वर्णों को वर्णमाला के क्रम में प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसका प्रमुख कारण यह है कि किसी भी भाषा के दो बुनियादी कौशल (सुनना और बोलना) में हम बातचीत करते हैं और बातचीत में जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, वे वर्णक्रम के अनुसार नहीं होते, जैसे– अगर माँ और छोटे बच्चे के बीच बातचीत हो रही है तो माँ बच्चे के साथ पूरी बात कहती है – *आज तो मेरी बिटिया बहुत जल्दी उठ गई।/ आज हम सब घूमने जाएँगे।/ जाओ, दादी जी को बुला लाओ।/ आज शाम मैं ऑफिस से जल्दी आऊँगी और फिर तुम्हारे साथ खेलूँगी* आदि। इसी तरह से बड़े भी अपने-अपने संदर्भों में और आवश्यकताओं को केंद्र में रखते हुए बातचीत करते हैं और उस बात में पूरी बात कही जाती है जिससे अर्थ संप्रेषित होता है। बातचीत में कहीं भी शब्दों में आए अक्षर भाषायी वर्णक्रम में नहीं होते। इसी लिए प्रवेशिका में भी संदर्भों के अनुसार जो विषय के आस-पास बातचीत हो रही है, उसमें सहज रूप से आए वाक्य, उन वाक्यों में आए शब्द और उन शब्दों में आए अक्षर/मात्रा के अनुसार अक्षरों तथा मात्राओं का क्रम निर्धारित किया गया है।
- एक पाठ की सार्थक सामग्री या चित्र में जिन शब्दों की गुंजाइश है, उन शब्दों में प्रयुक्त अक्षरों/वर्णों को लिया गया है। प्रवेशिका का पहला पाठ 'परिवार और पड़ोस' थीम पर आधारित है और इसमें दिए गए विस्तृत चित्र के आस-पास जिस तरह की बातचीत संभव है, उसमें आए शब्दों और शब्दों में आए अक्षर *अ, आ, न,प, स,* र, *व* को इस पहले पाठ में स्थान दिया गया है। पाठ की विषय-सामग्री में सहज एवं स्वाभाविक रूप से आने वाले शब्दों और अक्षरों पर ही ध्यान केंद्रित किया गया है।



उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 8-9

- हिंदी भाषा के स्वरों के अक्षर और मात्रा-चिह्न एक साथ ही रखे गए हैं। प्रवेशिका के पहले पाठ में 'आ' और उसकी मात्रा तथा दूसरे पाठ 'बातचीत' में इ, ई, ब, त, म, ख, ट, च और उनकी मात्राओं को सिखाने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए पहले पाठ में '*आदमी, आम, आरी, नदी, नाव, सड़क, सात*' और दूसरे पाठ में '*इमली, ई-मेल, बिल, बीस, तितली, तीन*' आदि शब्द दिए गए हैं। यह बिंदु ध्यान में रखना होगा कि हिंदी जैसी भाषाओं में स्वर अपने मूल रूप में और चिह्न के रूप में यानी मात्रा के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। लेकिन यह संभव है कि अनेक क्षेत्रीय भाषाएँ ऐसी हों जिनमें स्वर अंग्रेज़ी भाषा की तरह केवल अपने मूल रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी भाषा के ये शब्द देख सकते हैं – pin/college/ car (पिन/कॉलेज/ कार)। जब हम अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों को रोमन लिपि में लिखते हैं तो स्वर (a, e, i, o, u) अपने मूल रूप में ही लिखे गए हैं जबकि उन्हीं शब्दों को जब हम हिंदी भाषा की देवनागरी लिपि में लिखते हैं तो स्वरों के मूल रूप के बजाय उनकी मात्राओं का प्रयोग करते हैं। हमें क्षेत्रीय भाषाओं के संदर्भ में इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा और उसी के अनुसार प्रवेशिका का निर्माण करना होगा। इसी तरह से देवनागरी लिपि में अक्षरों/शब्दों के ऊपर शिरोरेखा (लाइन) का प्रयोग किया जाता है जो हिंदी भाषा के लेखन में एक महत्वपूर्ण बिंदु है। लेकिन यह संभव है कि कुछ भाषाओं की लिपि में यह शिरोरेखा (लाइन) प्रयुक्त न होती हो, जैसे – तमिल, कन्नड़, उड़िया, मलयालम आदि भाषाओं की लिपि। प्रवेशिका में लेखन के कौशल में इस बिंदु को ध्यान में रखना अपेक्षित है।

पढ़िए और लिखिए



अ अ

आ आ

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से बारी-बारी चित्र की पहचान करवाएँ। चित्र के नीचे लिखे शब्दों को अँगुली रखकर पढ़वाएँ और सहभागियों से अक्षर लिखवाएँ। 'अ' और 'आ' की आवाज़ और आकृति के अंतर को भी समझाएँ। इसी तरह बाकी अक्षरों को पढ़वाने और लिखवाने का काम करें।

उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 7



स स

सा सा

उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 10



ब

बि



बा

बी

शिक्षक-निर्देश— चित्र देखकर शब्द पढ़ने में सहभागियों की मदद करें, उनसे अक्षर लिखवाएँ। दी गई जगह में चित्र का नाम लिखवाएँ।

उल्लास – भाग 1, पाठ 2, पृष्ठ 30-31

- प्रवेशिका में गणित की अवधारणाओं को अलग-अलग पाठों में प्रस्तुत नहीं किया गया है बल्कि गणित की वे अवधारणाएँ जो आपस में संबंधित हैं, उन्हें एक साथ रखा गया है। उदाहरण के लिए पाठ 11 *'मनोरंजन'* में विभिन्न प्रकार के चित्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की आकृतियों (गोल, चौकोर, तिकोन), डिज़ाइन और पैटर्न की जानकारी एवं अभ्यास दिए गए हैं। इसी तरह पाठ 9 *'समय-समय की बात'* पाठ के अंतर्गत घड़ी देखने से संबंधित अनेक अभ्यास दिए गए हैं।

किसान की सुबह

सुबह 6 बजे  से किसान घास काटना शुरू करके उसके छोटे-छोटे गट्ठे बनाता। जब 5 छोटे गट्ठे बन जाते तो उन पाँचों को बाँधकर बड़ा गट्ठा बना लेता था। 7 बजे  तक घास काटकर, 15 मिनट बाद घर पहुँच जाता था। सुबह 6 बजे से लेकर 7 बजे तक उसने घास के 4 बड़े गट्ठे बना लिए थे।

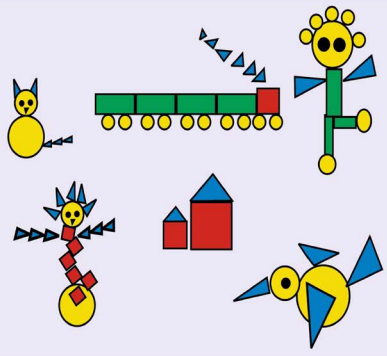
- उसने घास काटकर कितने छोटे गट्ठे बना लिए हैं?
  _____ इसे _____ × _____ भी लिख सकते हैं।
- वह घर कितने बजे वापस पहुँचा था? सुबह _____ बजे
  इस समय को घड़ी में दर्शाते हैं— 
- किसान ने घास काटना कितने बजे शुरू किया था? सुबह _____ बजे
- किसान ने घास की कटाई कितने बजे तक की? सुबह _____ बजे
- घास काटने में किसान को कितना समय लगा? _____ घंटा = _____ मिनट
- घास काटने और घर वापस पहुँचने में किसान को कुल समय लगा–
  1 घंटा + 15 मिनट = _____ मिनट

शिक्षक-निर्देश — दैनिक जीवन के कामों में लगने वाले समय के कई उदाहरणों को लेकर चर्चा कीजिए।

उल्लास – भाग 3, पाठ 9, पृष्ठ 226

तरानी के बनाए हुए चित्र

तरानी के बनाए चित्र सिनेमाघर की दीवारों पर भी लगे हैं। वह तिकोन (▲), चौकोर (■ या ▬) और गोल (●) की मदद से तरह-तरह के चित्र बनाती है।



सीमा गिनकर पता लगाना चाहती है कि तरानी ने कुल कितने गोल, तिकोन और चौकोर से यह चित्र बनाया है। क्या आप सीमा की मदद करेंगे—

कुल तिकोन (▲) _____

कुल चौकोर (■ या ▬) _____

कुल गोल (●) _____

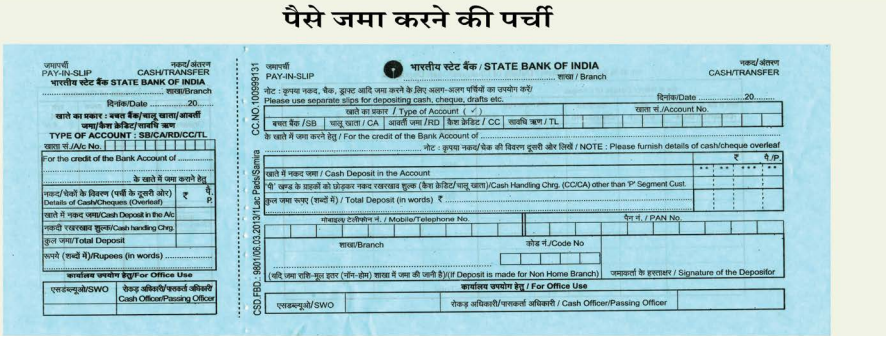
शिक्षक-निर्देश— अपने आस-पास एवं दैनिक जीवन में पाई जाने वाली आकृतियों को पहचानने में सहभागियों की मदद करें।

उल्लास – भाग 4, पाठ 11, पृष्ठ 259

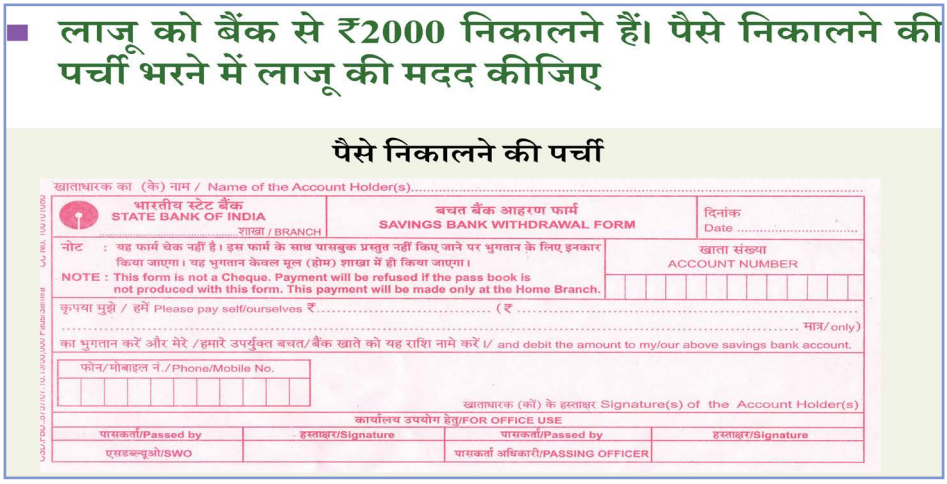
- गणित की अवधारणाएँ सीखने-सिखाने के लिए दैनिक जीवन से जुड़े विषयों को लिया गया है, जैसे – खरीदारी, बैंक, टैक्स से संबंधित कार्य आदि। उदाहरण के लिए पाठ 12 *'वित्तीय साक्षरता'* में काल्पनिक परिस्थितियों के द्वारा बैंक में रुपया जमा करना और निकालना सिखाया गया है।

जॉन को बैंक में ₹1700/- जमा करने हैं। पैसे जमा करने की पर्ची भरने में जॉन की मदद कीजिए

पैसे जमा करने की पर्ची



उल्लास – भाग 4, पाठ 12, पृष्ठ 276



■ लाजू को बैंक से ₹2000 निकालने हैं। पैसे निकालने की पर्ची भरने में लाजू की मदद कीजिए

पैसे निकालने की पर्ची

खाताधारक का (के) नाम / Name of the Account Holder(s).....

भारतीय स्टेट बैंक
STATE BANK OF INDIA
.....शाखा / BRANCH

बचत बैंक आहरण फार्म
SAVINGS BANK WITHDRAWAL FORM

दिनांक
Date .....

नोट : यह फार्म चेक नहीं है। इस फार्म के साथ पासबुक प्रस्तुत नहीं किए जाने पर भुगतान के लिए इनकार किया जाएगा। यह भुगतान केवल मूल (होम) शाखा में ही किया जाएगा।
NOTE : This form is not a Cheque. Payment will be refused if the pass book is not produced with this form. This payment will be made only at the Home Branch.

खाता संख्या
ACCOUNT NUMBER

कृपया मुझे / हमें Please pay self/ourselves ₹..... (₹ .....
..... मात्र/ only)
का भुगतान करें और मेरे /हमारे उपर्युक्त बचत/बैंक खाते को यह राशि नामे करें।/ and debit the amount to my/our above savings bank account.

फोन/मोबाइल नं./Phone/Mobile No.

खाताधारक (कों) के हस्ताक्षर Signature(s) of the Account Holder(s)

कार्यालय उपयोग हेतु/FOR OFFICE USE

पासकर्ता/Passed by	हस्ताक्षर/Signature	पासकर्ता/Passed by	हस्ताक्षर/Signature
एसडब्ल्यूओ/SWO		पासकर्ता अधिकारी/PASSING OFFICER	

उल्लास – भाग 4, पाठ 12, पृष्ठ 276

- किसी अक्षर की ध्वनि और आकृति की पहचान करवाने के लिए अंतर्वस्तु/'थीम'के इर्द-गिर्द दैनिक जीवन में उपयोग किए जाने वाले शब्दों, वस्तुओं के नामों, गिनती, दिनों के नामों आदि का प्रयोग किया गया है। इन नामों में वे ध्वनियाँ शब्द के प्रारंभ, मध्य या अंत में आ रही हैं। इस प्रकार के उदाहरण लेना महत्वपूर्ण है ताकि शिक्षार्थी यह देख सकें कि शब्द में विभिन्न स्थानों पर किसी अक्षर के आने से शब्द के उच्चारण और रूप पर क्या प्रभाव पड़ता है। साथ ही, वे किसी अक्षर की ध्वनि को किसी शब्द-विशेष से ही जोड़कर देखने की प्रवृत्ति विकसित न कर लें। उदाहरण के लिए, 'ब' से केवल 'बकरी' न समझने लगें। इसीलिए बातचीत, अखबार, मोबाइल जैसे शब्द दिए गए हैं।
- शिक्षार्थियों को लिखने में संकोच और कठिनाई हो सकती है लेकिन उन्हें विभिन्न अभ्यासों के माध्यम से यह आत्मविश्वास दिलाना होगा कि जो बात हम कहते हैं उसे कुछ चिह्नों के माध्यम से लिखा जा सकता है। हमारे बोलने और लिखने की भाषा में अंतर नहीं होता।
- प्रवेशिका में अक्षरों की आकृति बनाना सीखने के लिए उन्हें बिंदुओं के रूप में भी दिया गया है। इससे शिक्षार्थियों को आत्मविश्वासपूर्वक अक्षरों की पठनीय आकृति बनाने में सहायता मिलेगी। उदाहरण के लिए पाठ 1 में 'स' और 'सा' को देखा जा सकता है।



उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 10

- यह बात समझना आवश्यक है कि शिक्षार्थी अपने आस-पास की चीज़ों को पहचानते हैं, उनके नाम जानते हैं, चीज़ों के नाम बोलते हैं और दैनिक जीवन में अनेक तरह के शब्द कहते हैं। इसका यह अर्थ है कि बिना मात्रा वाले या मात्रा वाले शब्दों को वे एक क्रम से नहीं बोलते बल्कि चीज़ों, व्यक्तियों, घटनाओं आदि के बारे में अर्थपूर्ण बातचीत करते हैं। उनकी इसी कुशलता का प्रयोग लेखन कार्य में किया जा सकता है और एक अक्षर में उन सभी मात्राओं का प्रयोग करने के अवसर दिए जा सकते हैं जो उन्होंने पहले पाठों में सीखी हैं। उदाहरण के लिए पाठ 3 में 'ग', 'गा', 'गि' 'गी' आदि से बनने वाले शब्दों को पढ़ना और इन अक्षरों को लिखना। इससे एक लाभ यह होगा कि शिक्षार्थियों को सीखी गई मात्राओं को दोहराने के अवसर मिलेंगे और साथ ही वे दो स्वरों में अंतर करने की कुशलता भी प्राप्त कर सकेंगे, जैसे – *गधा, गमछा/ गागर, गाय/ गिलहरी, गिरगिट/ गीला, गीत/ गोभी, गोबर/ गौरैया, गौशाला* । प्रवेशिका में इस तरह के लेखन संबंधी अभ्यास पर्याप्त मात्रा में देने से ही शिक्षार्थियों को लिखने के अवसर मिल सकेंगे।



उल्लास – भाग 1, पाठ 3, पृष्ठ 69



उल्लास – भाग 1, पाठ 3, पृष्ठ 70

- लेखन के अभ्यासों में अक्षर लिखने से आगे बढ़ते हुए शब्द में एक अक्षर विशेष की पहचान के बाद उस शब्द को लिखने के लिए भी कहा जा सकता है। इस तरह से पढ़ना और लिखना साथ-साथ होता है। प्रवेशिका में ऐसे अवसर बहुतायत में देने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए पाठ 1 में '*देखिए, पढ़िए और लिखिए*' अभ्यास के अंतर्गत अलग-अलग शब्दों में *अ, आ, व, वा*, आदि अक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानकर उन्हें लिखना है। गणित में भी लिखने का अभ्यास साथ-साथ चलना चाहिए, जैसे पाठ 1 में ही मोबाइल में अंकों

को पहचानना है, बिंदुओं में दिए गए अंकों को लिखना है और फिर अलग से दिए गए स्थान पर अंकों को लिखना है।

- लेखन के अगले स्तर पर चित्रों को देखकर, पहचानकर उनके नाम लिखने का अभ्यास शिक्षार्थियों की लेखन कुशलता में सहायक होगा। जैसा कि पहले भी स्पष्ट किया गया है कि शिक्षार्थी चीज़ों, व्यक्तियों आदि को पहचानते हैं और उनके पूरे नाम लेते हैं। उनकी इसी कुशलता के माध्यम से चित्रों के नाम लिखने के अवसर और अभ्यास दिए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए पाठ 7 में *'चित्र देखिए और शब्द लिखिए'* अभ्यास में शिक्षार्थियों को '17' और 'स्त्री'/ 'त्रिकोण' और 'रावण' शब्द लिखने के लिए कहा गया है।
- अधिकतर पाठों के अंत में 'मेरे शब्द' लिखने के लिए स्थान दिया गया है। इसका उद्देश्य यह है कि शिक्षार्थी यहाँ अपने मन से ऐसे शब्द स्वयंसेवी शिक्षक की मदद से, देखकर या बिना देखे लिखेंगे जो उन्होंने उस पाठ से सीखे हैं।

■ **मेरे शब्द**

शिक्षक-निर्देश— 'खान-पान और सेहत' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े 3–4 शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे— 'हैंडपंप' के लिए 'चापाकल' आदि।

उल्लास – भाग 2, पाठ 5, पृष्ठ 142

■ **ध्यान से देखिए, पढ़िए और आपस में चर्चा कीजिए**







■ **मेरे शब्द**

शिक्षक-निर्देश— 'मतदान' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े 3–4 शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'वोट देना' के लिए 'वोट पड़ना' आदि।

उल्लास – भाग 2, पाठ 6, पृष्ठ 168

- लिखने के अभ्यासों में शिक्षार्थियों की सृजनात्मक लेखन की कुशलता को भी पोषित करने की आवश्यकता है। वे जो सोचते हैं, जैसा सोचते हैं, जिस भाषा में सोचते हैं, वैसा लिखने के अवसर देना अपेक्षित होगा। उदाहरण के लिए पाठ 7 में ही *'चित्र देखकर खाली जगह पर स्वयं की कहानी बनाइए और लिखिए'* अभ्यास में कहानी एक सिरे से शुरू होती है और शिक्षार्थियों को अपने मन से कहानी लिखनी है। दिए गए चित्रों को देखकर स्वयं कहानी बनाने से सृजनात्मक सोच को आगे बढ़ाने और सृजनात्मक लेखन के अवसर प्राप्त होंगे।
- लिखने की कुशलता का अभ्यास कराने के लिए शब्दों से वाक्य-निर्माण और लिखित रूप में अपनी बात कहने के अवसर जुटाने की आवश्यकता होती है। इस तरह के अभ्यास 'उल्लास' के पाठ 9 में दिए गए हैं – *शब्दों का इस्तेमाल करते हुए वाक्य बनाकर लिखिए* (समय, ज़माना, काल, युग, दिन आदि)।/ *आप कौन-से काम समय पर कर पाते हैं और कौन-से नहीं*? आदि।
- प्रवेशिका में लेखन के ऐसे अभ्यास देने की आवश्यकता है जिसमें उन्हें मुहावरों का प्रयोग करने के अवसर मिल सकें और वाक्य-प्रयोग के लिए सही शब्द का चयन करते हुए लिख सकें। अपने अनुभवों को लिखने के अवसर भी दिए जाने चाहिए ताकि लिखना शिक्षार्थियों के लिए रुचिकर बन सके। उदाहरण के लिए पाठ 1 के लेखन संबंधी ये अभ्यास –

■ **कविता में से नीचे दिए अक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों को पहचान कर लिखिए—**

आ..... प.....

न..... पा.....

■ **चित्र देखकर खाली स्थान भरिए—**

1. सा.....स 

2. वान..... 

3. अ.....र 

4. व..... 

5. .....म 

6. .....ल 

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों के साथ मिलकर कविता में अक्षरों और शब्दों की पहचान कराएँ। अक्षर और शब्दों को लिखने में सहभागियों की मदद करें। कविता को गाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 23

- प्रत्येक पाठ में शिक्षार्थियों के पढ़ने के लिए अतिरिक्त सामग्री भी दी गई है जिन्हें वे प्रारंभ में स्वयंसेवी शिक्षक की मदद से पढ़ेंगे, स्वयं अनुमान लगाकर पढ़ेंगे। अपेक्षा यह है कि बाद में वे इस सामग्री को स्वतंत्र रूप से पढ़ सकेंगे।
- प्रवेशिका में दी गई विषय-सामग्री को शिक्षार्थी कभी भी पढ़ सकते हैं, मदद के साथ भी और स्वतंत्र रूप से भी। पाठों को क्रम से आगे पढ़ते, सीखते हुए शिक्षार्थी के पास यह स्वतंत्रता रहती है कि जब वे पढ़ने का आत्मविश्वास महसूस करें तो स्वतंत्र रूप से या बिना किसी की मदद से पाठों या विषय सामग्री को पढ़ लें। उदाहरण के लिए, शिक्षार्थी पहले पाठ 'परिवार और पड़ोस' में अतिरिक्त पठन के लिए दी गई कविता '*आओ बादल*' को बाद में भी स्वतंत्र रूप से पढ़ सकते हैं, जो '*आ, बा, पा, ल, झ, ज, छा*' आदि अक्षरों पर आधारित है जबकि आगे के पाठों में '*ल, झ, ज, छा*' आदि अक्षर लिए गए हैं।
- चूँकि हमारे शिक्षार्थियों के पास जीवन के विस्तृत अनुभव हैं और उनकी समझ अधिक विकसित है, अत: प्रवेशिका में केवल अक्षर-मात्रा पर केंद्रित न रहकर उनके स्तर और रुचि के अनुरूप समृद्ध पठन सामग्री का

■ वोट देने की तैयारी



मतदान के दिन छुट्टी दी जाती है तो आपको काम पर जाने की भागदौड़ नहीं करनी है।

अपना नाम मतदाता सूची में देख लें। यह आप चुनाव अधिकारी की वेबसाइट पर भी देख सकते हैं।





घर से निकलते समय अपना मतदाता पहचान-पत्र (वोटर कार्ड) ले जाना न भूलें। पर मोबाइल, कैमरा आदि न लेकर जाएँ। मतदान केंद्र में ये चीज़ें ले जाने की अनुमति नहीं है।





मतदान केंद्र के बाहर कतार में खड़े हों। आप ज़रूर चाहेंगे कि अगर किसी के लिए कतार में खड़े रहना मुश्किल है तो आप उन्हें वोट पहले डालने दें।

स्रोत— http://ecisveep.nic.in/gallery/image/1349-general-voters-guide/?context=new

उल्लास – भाग 2, पाठ 6, पृष्ठ 167

उपयोग किया गया है। यह प्रयास किया गया है कि शिक्षार्थियों के आलोचनात्मक चिंतन को प्रखर किया जा सके। वे पाठ में आए हर चित्र, शब्द, पाठ्य-वस्तु को समझते हुए उसे अपने अनुभवों से जोड़कर उस पर मनन कर सकें, अपनी राय दे सकें और अपनी राय के बारे में तर्क दे सकें। यह आलोचनात्मक चिंतन शिक्षार्थियों को जीवन की सभी स्थितियों को बेहतर तरीके से समझने में सहायक होगा ताकि वे संदर्भ के अनुसार उचित निर्णय ले सकें। उदाहरण के लिए, पाठ 6 'मतदान' में उससे जुड़े शब्दों की गहराई को समझ सकें, जैसे – मतदान, मतदान सूची, पहचान-पत्र, चुनावी स्याही, ई.वी.एम. मशीन, उम्मीदवार आदि। मतदान अपने आप में एक छोटा-सा शब्द है लेकिन इसी मतदान से लोकतंत्र का स्वरूप निर्धारित होता है – किस उम्मीदवार को चुना जाए? कोई हमारे पहचान-पत्र का गलत उपयोग तो नहीं कर रहा? सरकार कैसी बनेगी? जनता के प्रतिनिधि के रूप में कैसे लोग चुने जाएँ? क्या वे जनता के लिए कल्याणकारी योजनाओं को बनाने और उन्हें क्रियान्वित करने में ठोस कदम उठाएँगे? क्या वे अपने वादों को पूरा करेंगे? ऐसे अनेक सवाल 'मतदान' जैसे शब्द से जुड़े हुए हैं। लोकतंत्र को बनाए रखने में इसी मतदान का सबसे बड़ा योगदान है जिसके लिए सोच-विचार, आलोचनात्मक चिंतन की आवश्यकता होती है। मतदाता का उचित निर्णय ही उत्कृष्ट लोकतंत्र की नींव रखता है।

प्रवेशिका में इसी प्रकार के विषयों और संदर्भों द्वारा शिक्षार्थियों के जीवन-कौशलों के विकास का प्रयास किया गया है।

- पुनरावृत्ति और अभ्यास द्वारा प्रयास किया गया है कि समय के साथ-साथ शिक्षार्थियों के मौखिक और लिखित शब्द भंडार में वृद्धि होती रहे। एक संदर्भ विशेष और उससे इतर संदर्भ – दोनों संदर्भों में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है, उन्हें उन संदर्भों में समझना, पढ़कर समझने की एक महत्वपूर्ण कुशलता है। हालाँकि एक प्रवेशिका या एक पुस्तक की अपनी सीमाएँ होती हैं कि हम वहीं 'बहुत कुछ' नहीं दे सकते। लेकिन उसके लिए दिशा-निर्देश दे सकते हैं, एक-दो उदाहरण दे सकते हैं जिससे शिक्षार्थी और स्वयंसेवी शिक्षक उस प्रक्रिया को स्वयं आगे बढ़ा सकें।

  उदाहरण के लिए पाठ 1 'परिवार और पड़ोस' में पाँच अन्य अक्षरों (व्यंजन) के साथ *'आ'* और उसकी मात्रा के प्रयोग को लिया गया है तो पाठ 2 'बातचीत' में छह अन्य अक्षरों (व्यंजन) के साथ *'इ'/'ई'* को लिया गया है। पाठ 2 में नए अक्षरों (*ब, त, म, ख, ट, च*) के साथ तीनों मात्राओं के प्रयोग को सीखने के अवसर दिए गए हैं – *'बर्फ़ी, बच्चे, बस, बादल, बातचीत, बाल, बिजली, बिल, बिल्ली, बीज, बीस, बीन'/ 'तबला, तकिया, तवा, तारा, ताला, तार, तितली, तिजोरी, तिपाई, तीन, तीली, तीर'* आदि शब्द लिए गए हैं। चित्रों पर की जाने वाली बातचीत भी शिक्षार्थियों के शब्द-भंडार को बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाएगी। प्रवेशिका में शुरू से अंत तक इसी तरह से लगातार शब्द-भंडार को बढ़ाने का प्रयास किया गया है।



उल्लास – भाग 1, पाठ 1, पृष्ठ 8-9

- इसी प्रकार गणित की अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए भी अभ्यास के पर्याप्त अवसर दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, पाठ 1 में 1 से 9 तक की गिनती (संख्या और संख्यांक) सिखाने के लिए मोबाइल का प्रयोग किया गया है जिस पर अंक लिखे होते हैं। इससे आगे बढ़ते हुए पाठ 2 में पुनरावृत्ति एवं अभ्यास के रूप में पाँच रुपए के नोटों में 5 की पहचान के अवसर दिए गए हैं। इसी पाठ में सीखे गए अंकों के आधार पर जमा और घटा करने की प्रक्रिया को लिया गया है।



उल्लास – भाग 1, पाठ 2, पृष्ठ 45

- प्रवेशिका के पाठों/'थीम' में भी एक तरह का विकास प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। एक व्यक्ति के जीवन में जो-जो बातें समझना, सीखना और उनका उपयोग आवश्यक है उन सभी को प्रवेशिका में स्थान देने का प्रयास किया गया है। ये पाठ/ 'थीम' *'परिवार और पड़ोस'* से शुरू होकर *'डिजिटल साक्षरता'* तक जाते हैं और उससे जुड़ी विषय-सामग्री को सम्मिलित करने की कोशिश करते हैं। परिवार भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पड़ोस और परिवार एवं पड़ोस में स्वच्छता भी आवश्यक है जो हमारी सेहत, हमारे स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। पाठ 13 *'डिजिटल साक्षरता'* में वित्तीय साक्षरता को भी जोड़ा गया है ताकि हम डिजिटल उपकरणों के माध्यम से धन के लेन-देन को समझ सकें, सावधानी बरत सकें और जीवन में उसका उपयोग कर सकें। पाठ 12 *'वित्तीय साक्षरता'* में बैंक, धन की बचत, जमा पर्ची, ए.टी.एम. कार्ड आदि के साथ 'भीम ऐप' (BHIM) के प्रयोग को सिखाया गया है जो कि एक डिजिटल माध्यम है। इसी तरह से प्रवेशिका के सभी पाठ इस तरह से एक-दूसरे से संयोजित हैं कि वे एक-दूसरे के पूरक के रूप में काम करते हैं।

भीम ऐप (BHIM)

भीम ऐप (BHIM) पैसों के लेन-देन का मोबाइल ऐप है। इसे 'ई-पेमेंट' भी कहते हैं। इसमें आप अपने मोबाइल के ज़रिये पैसे का लेन-देन कर सकते हैं।

- दूर बैठे किसी व्यक्ति को पैसे भेज सकते हैं।
- बच्चों के स्कूल की फ़ीस दे सकते हैं।
- बिजली के बिल का भुगतान कर सकते हैं।
- किराने की दुकान वाले को पैसा दे सकते हैं।
- ऋण का भुगतान कर सकते हैं।



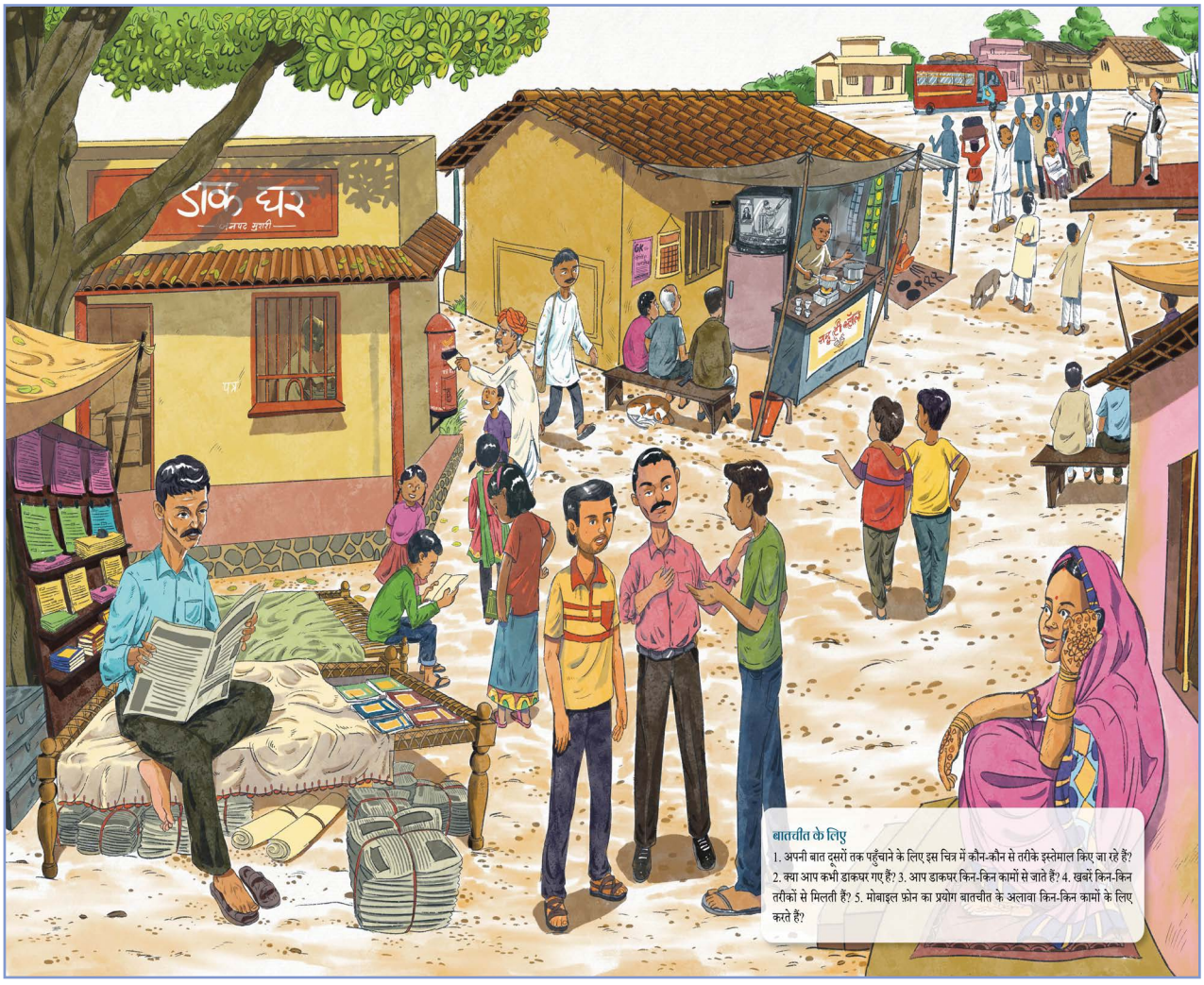
सबसे पहले आपको अपने मोबाइल में भीम ऐप को डाउनलोड और इंस्टॉल करना होगा। इसमें आप हिंदी के साथ-साथ 12 भारतीय भाषाओं में भी काम कर सकते हैं। इस ऐप में आप भारतीय स्टेट बैंक के साथ दूसरे लगभग 30 भारतीय बैंक खातों का इस्तेमाल कर सकते हैं।



(*स्रोत*— https:// https://www.npci.org.in/www.npci.org.in/ https://www.npci.org.in/product-overview/bhim-product-overview)

उल्लास – भाग 4, पाठ 12, पृष्ठ 280

- प्रवेशिका में चित्रों का विशेष महत्व है। वे अनुमान लगाकर पढ़ना सीखने और वस्तु विशेष के बारे में अवधारणा बनाने में मदद करते हैं। पाठ के प्रारंभ में एक पोस्टरनुमा चित्र है जिसमें एक स्थिति या घटना को दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए '*परिवार और पड़ोस*', '*हमारा रहन-सहन*' आदि का पोस्टरनुमा चित्र। यह चित्र शिक्षार्थियों के परिवेश से संबंधित है जिससे वे इस पर मौखिक रूप से बातचीत कर सकें, अपने अनुभव साझा कर सकें और उससे संबंधित शब्दों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें। पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया के प्रारंभ में लिखित भाषा अनेक शिक्षार्थियों के लिए एक तस्वीर या चित्र मात्र हो सकती है जिसे वे बाद में पढ़ना सीख जाएँगे।



उल्लास – भाग 1, पाठ 2, पृष्ठ 24-25

- इन चित्रों के साथ बातचीत के बिंदु दिए गए हैं ताकि स्वयंसेवक और शिक्षार्थियों को बातचीत के लिए कुछ संकेत मिल जाएँ। लेकिन ये संकेत केवल सुझाव-मात्र हैं। शिक्षार्थी और स्वयंसेवक बातचीत को किसी भी स्वाभाविक दिशा में ले जाने के लिए स्वतंत्र हैं।

- प्रवेशिका में यह प्रयास किया गया है कि अक्षरों की पहचान के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाए जिसके चित्र उपलब्ध हो सकें या जिन्हें चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सके।



उल्लास – भाग 5, पाठ 5, पृष्ठ 118-119

- प्रवेशिका में कुछ चित्र बार-बार आते हैं। इसका उद्देश्य यह है कि शिक्षार्थी उन चित्रों की सहायता से उनके नाम और अक्षरों को भी पहचानने लगें। इससे उन्हें पढ़ना-लिखना सीखने में सहायता मिलेगी।
- चित्रों के साथ-साथ वास्तविक फोटोग्राफ़ का भी प्रयोग किया गया है। विशेष रूप से किसी प्रक्रिया को दर्शाने के लिए वास्तविक फोटोग्राफ़ मदद करते हैं ताकि शिक्षार्थी यह देख सकें कि जब वे इस उपकरण का प्रयोग करेंगे या किसी प्रक्रिया से गुज़रेंगे तो चीज़ें कैसी दिखाई देंगी। यह वास्तविकता उन्हें आत्मविश्वास प्रदान करेगी। उदाहरण के लिए पाठ 12 में वित्तीय साक्षरता के अंतर्गत ए.टी. एम. मशीन, बैंक में पैसे जमा करने और निकालने के फ़ॉर्म, ए.टी. एम. कार्ड आदि के वास्तविक फ़ोटो उन्हें बैंक से जुड़े कार्यों की एक स्पष्ट तस्वीर दिखाएँगे।

■ ए.टी.एम. कार्ड की संक्षिप्त जानकारी

ए.टी.एम. बैंक से पैसा निकालने व जमा करने का एक इलेक्ट्रॉनिक कार्ड होता है जिसकी सहायता से कहीं भी, कभी भी नकद पैसे निकाल सकते हैं और बैंक खाते का लेखा-जोखा भी जान सकते हैं। पैसों के लेन-देन के मामले से जुड़ी किसी समस्या के समाधान के लिए केवल बैंक से ही संपर्क करना चाहिए। ए.टी.एम. कार्ड से पैसे निकालने के लिए ए.टी.एम. मशीन का इस्तेमाल किया जाता है।





याद रखें

चैक की वैधता अंकित तिथि से 3 महीने तक मान्य होती है। 'क्रॉस चैक' केवल खाताधारक के खाते में देय होता है।

कभी किसी से साझा न करें

1. ओ.टी.पी.
2. पिन
3. सी.वी.वी.
4. खाता संबंधी जानकारी
5. व्यक्तिगत जानकारी

■ के.वाई.सी. (KYC) क्या होता है?

के.वाई.सी. (KYC) (Know Your Customer) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बैंक किसी व्यक्ति की पहचान और पते की पुष्टि करता है। अब आधार कार्ड से भी के.वाई.सी. कर सकते हैं।

के.वाई.सी. (KYC) के लिए ज़रूरी दस्तावेज़

1. पैन कार्ड
2. बिजली का बिल
3. आधार कार्ड
4. आवासीय पता

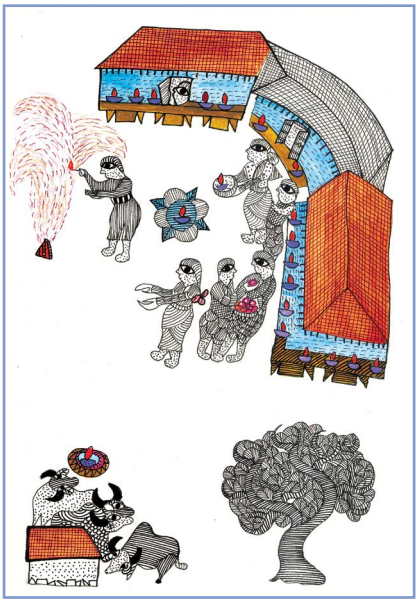
उल्लास – भाग 4, पाठ 12, पृष्ठ 278

- चित्रों में लोक कला को भी पर्याप्त स्थान और सम्मान दिया गया है। जब शिक्षार्थी अपने परिवेश से जुड़ी लोक-कलाओं को प्रवेशिका में देखेंगे तो इससे उन्हें सुखद आत्मीयता और गौरव का अनुभव होगा। यह अनुभव उन्हें पढ़ना-लिखना सीखने के लिए और अधिक प्रेरित करेगा। परिचित चीजों के साथ-साथ आने वाली अपरिचित आकृतियों को पहचानना आसान हो जाता है। विभिन्न क्षेत्रों की लोक शैलियों में बने चित्र शिक्षार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं कि वे भी अपनी लोक कला, संस्कृति को आगे बढ़ाएँ। साथ ही इस तरह की लोक कला को वे अपने व्यवसाय के रूप में भी अपना सकते हैं।

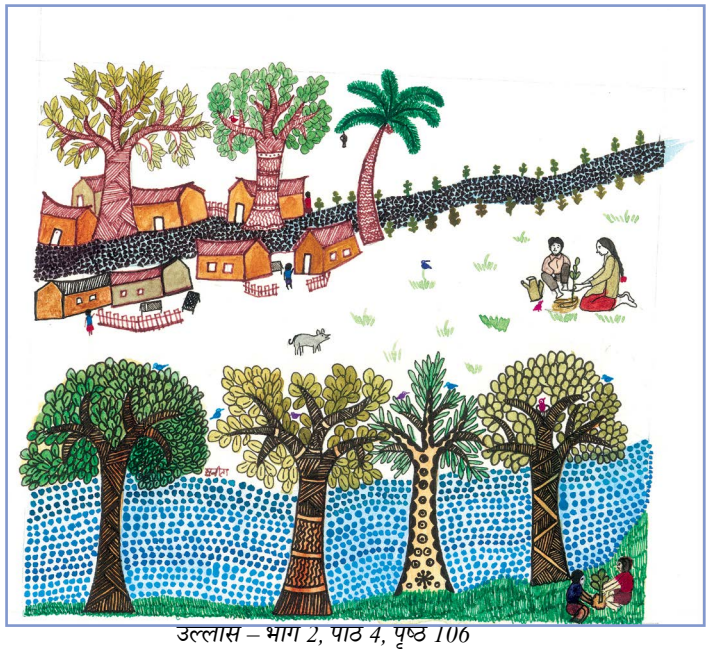
- 'उल्लास' का आवरण पृष्ठ बिहार की मधुबनी लोक चित्रकला का उदाहरण है तो 'दीवाली के दीये' और 'सुखोमाजरी गाँव' पाठों में क्रमश: मध्य प्रदेश की गोंड और राजस्थान की मांडना लोक चित्रकला के दर्शन होते हैं। ये चित्र एक ओर जहाँ भारतीय लोक संस्कृति से जुड़ने में सहायक होंगे, वहीं शिक्षार्थियों में संवेदना, सराहना और सौंदर्य बोध का भी संचार करने में सहायक होंगे।



'उल्लास' का आवरण पृष्ठ



उल्लास – भाग 1, पाठ 3, पृष्ठ 74

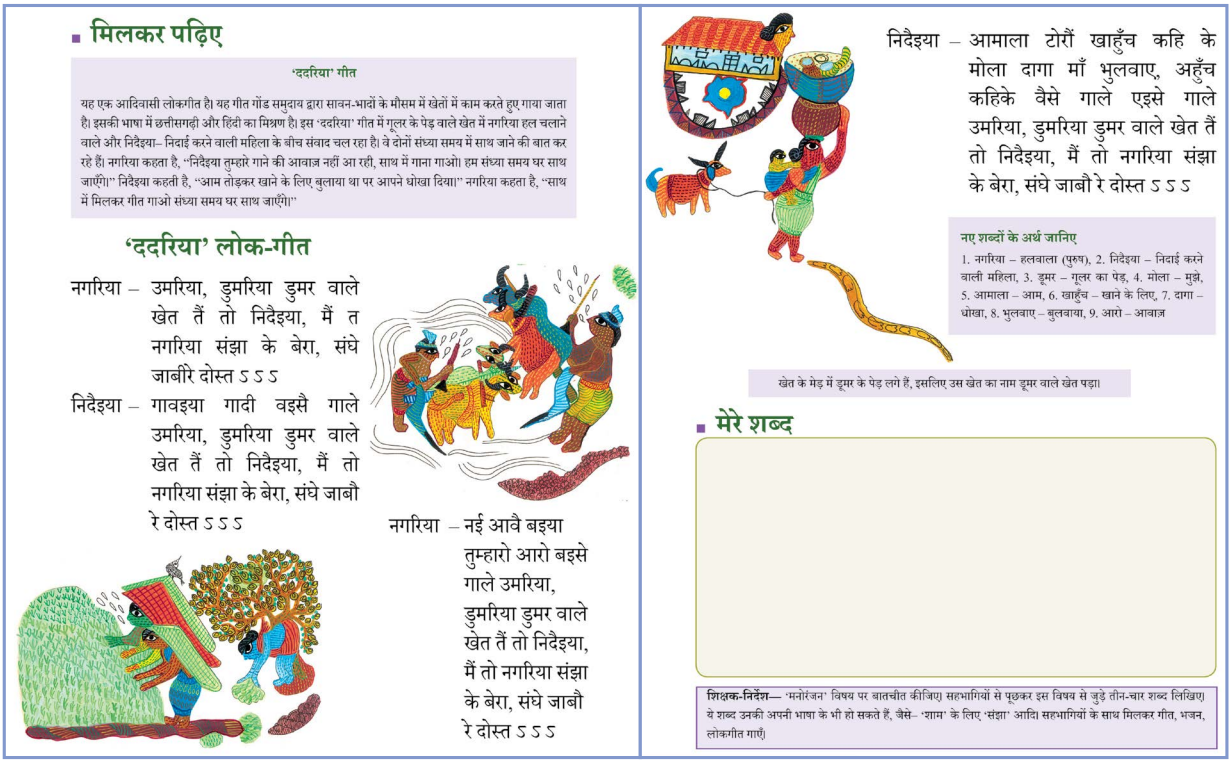


उल्लास – भाग 2, पाठ 4, पृष्ठ 106

- प्रवेशिका में लोक-गीतों और लोक-कथाओं को भी स्थान दिया गया है। राज्य अपने लिए प्रवेशिकाओं का विकास करते समय अपने राज्य के प्रचलित लोक-गीतों, लोक-कथाओं को प्रवेशिका में स्थान दे सकते हैं। राज्यों के लोक साहित्य से जुड़ी विभिन्न प्रकार की सामग्री को अतिरिक्त पठन के लिए लिया जा सकता है। उदाहरण के लिए राजस्थान में बेटी की विदाई के समय गाया जाने वाला औल्यूंगीत – *कंवर बाई री ओल्यु आवे ओ राज।'* इसी तरह आदिवासी क्षेत्रों में गाये जाने वाले गीत भी प्रवेशिका का हिस्सा बन सकते हैं, उदाहरण के लिए, यह मुंडारी लोकगीत –

एला रे सातो सए संता
एला रे बिसो नागपुर
तजना कंचिगड़ा लिंगि तना
कारो कुइल रे बुअल तना

(अर्थ – हे सातों इलाकों के भाइयो/ हे बीसों नागपुर के/ यहाँ तजना-काँची नदियाँ बह रही हैं/कारो-कोयल उमड़ रही है।)



■ मिलकर पढ़िए

'ददरिया' गीत

यह एक आदिवासी लोकगीत है। यह गीत गोंड समुदाय द्वारा सावन-भादों के मौसम में खेतों में काम करते हुए गाया जाता है। इसकी भाषा में छत्तीसगढ़ी और हिंदी का मिश्रण है। इस 'ददरिया' गीत में गूलर के पेड़ वाले खेत में नगरिया हल चलाने वाले और निदैइया– निदाई करने वाली महिला के बीच संवाद चल रहा है। वे दोनों संध्या समय में साथ जाने की बात कर रहे हैं। नगरिया कहता है, "निदैइया तुम्हारे गाने की आवाज़ नहीं आ रही, साथ में गाना गाओ। हम संध्या समय घर साथ जाएँगे।" निदैइया कहती है, "आम तोड़कर खाने के लिए बुलाया था पर आपने धोखा दिया।" नगरिया कहता है, "साथ में मिलकर गीत गाओ संध्या समय घर साथ जाएँगे।"

'ददरिया' लोक-गीत

नगरिया – उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं त नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबीरे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – गावइया गादी वइसै गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नगरिया – नई आवै बइया तुम्हारो आरो बइसे गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – आमाला टोरौं खाहुँच कहि के मोला दागा माँ भुलवाए, अहुँच कहिके वैसे गाले एइसे गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नए शब्दों के अर्थ जानिए

1. नगरिया – हलवाला (पुरुष), 2. निदैइया – निदाई करने वाली महिला, 3. डूमर – गूलर का पेड़, 4. मोला – मुझे, 5. आमाला – आम, 6. खाहुँच – खाने के लिए, 7. दागा – धोखा, 8. भुलवाए – भुलवाया, 9. आरो – आवाज़

खेत के मेड़ में डूमर के पेड़ लगे हैं, इसलिए उस खेत का नाम डूमर वाले खेत पड़ा।

■ मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'मनोरंजन' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'शाम' के लिए 'संझा' आदि। सहभागियों के साथ मिलकर गीत, भजन, लोकगीत गाएँ।

उल्लास – भाग 4, पाठ 11, पृष्ठ 263-264

- शिक्षार्थियों की भाषा और मौखिक अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि मौखिक भाषा के सहारे ही पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है। मौखिक रूप से अपनी बात कहने का आत्मविश्वास शिक्षार्थियों को पढ़ने, लिखने और गणितीय अवधारणाओं को समझने में मदद करेगा। अत: प्रवेशिका में शिक्षार्थियों के साथ बातचीत के पर्याप्त अवसर दिए गए हैं।

- प्रवेशिका में भारत की बहुभाषिक विशेषताओं को पूरा सम्मान दिया गया है। यद्यपि प्रवेशिका हिंदी भाषा में है और हिंदी पढ़ना-लिखना सिखाने के दृष्टिकोण से विकसित की गई है लेकिन इसमें शिक्षार्थी की स्थानीय /क्षेत्रीय भाषा-बोली को पूरा सम्मान दिया गया है। अनेक स्थानों पर शिक्षार्थियों को अपनी भाषा-बोली में बातचीत करने, उत्तर देने के अनेक अवसर दिए गए हैं। इससे शिक्षार्थियों को अपनी बात करने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलेगा और वे आत्मविश्वासपूर्वक बातचीत में भाग लेंगे।

राजू की माँ

फूलों की माला बनाने में राजू अपनी माँ की सहायता कर रहा था। वह एक-एक करके फूल अपनी माँ को देता गया और संख्या बोलता गया।

10 फूलों की एक माला यानी, हर माला में 10 फूल। राजू फूल देता गया और माला बनती गई। तो आइए, समझें कि कितने फूलों के बाद एक माला तैयार होती है।

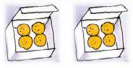
50 + 1=51	पाँच दहाई 	+	एक इकाई 	=	**51 इक्यावन**
50 + 2=52	पाँच दहाई 	+	दो इकाई 	=	**52 बावन**
50 + 3=53	पाँच दहाई 	+	तीन इकाई 	=	**53 तिरेपन**
50 + 4=54	पाँच दहाई 	+	चार इकाई 	=	**54 चौवन**

उल्लास – भाग 2, पाठ 4, पृष्ठ 109

■ **विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बच्चों को लड्डू के डिब्बे बाँटे गए। एक डिब्बे में चार लड्डू आ सकते हैं। आइए पता लगाते हैं कि 10 बच्चों को डिब्बे देने हैं तो कितने लड्डू चाहिए?**

1 बच्चे को मिलेंगे  अर्थात् 1 डिब्बा 4 लड्डुओं का
1 बार 4
1 गुणा 4
या $1 \times 4 = 4$ लड्डू

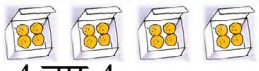
---

2 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 2 डिब्बे 4 लड्डुओं के
$4 + 4$
2 बार 4
2 गुणा 4
या $2 \times 4 = 8$ लड्डू

---

3 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 3 डिब्बे 4 लड्डुओं के
$4 + 4 + 4$
3 बार 4
3 गुणा 4
या $3 \times 4 = 12$ लड्डू

---

4 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 4 डिब्बे 4 लड्डुओं के
$4 + 4 + 4 + 4 = 4$ बार 4
या 4 गुणा $4 = 4 \times 4 = 16$ लड्डू

---

5 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 5 डिब्बे 4 लड्डुओं के
$4 + 4 + 4 + 4 + 4 = 5$ बार 4
या 5 गुणा $4 = 5 \times 4 = 20$ लड्डू

शिक्षक-निर्देश— किसी संख्या को बार-बार जोड़ने की संक्षिप्त प्रक्रिया को गुणा कहते हैं। सहभागियों को विभिन्न संदर्भों (जैसे कुर्सी के पैरों की संख्या) का प्रयोग करके 1 अंकीय संख्याओं के गुणन बनाने और लिखने के लिए प्रेरित करें।

उल्लास – भाग 2, पाठ 5, पृष्ठ 144

- प्रवेशिका में गणित की संक्रियाओं के सवालों में दैनिक जीवन के उदाहरणों का प्रयोग किया गया है; जैसे- फूलों की मालाएँ बनाना, रुपए-पैसे जोड़ना, घटाना, लड्डू गिनना आदि। इन उदाहरणों को अच्छी तरह समझने के लिए परिवेश में आसानी से उपलब्ध वास्तविक वस्तुओं का प्रयोग भी किया जा सकता है।

- स्वयंसेवकों और शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ में शिक्षा-निर्देश दिए गए हैं। ये निर्देश आसान भाषा में यह समझने में सहायता करेंगे कि उस पाठ को शिक्षार्थी और स्वयंसेवक मिलकर कैसे आगे ले जा सकते हैं।



■ चित्र देखिए और शब्द लिखिए

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से 'कुछ ऊँट ऊँचा' वाले वाक्य को बार-बार बुलवाने का प्रयास करें।

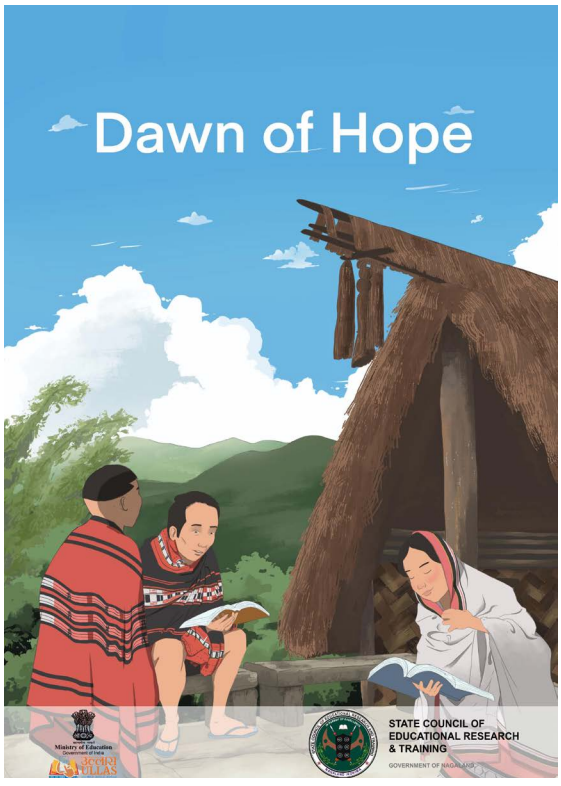
उल्लास – भाग 2, पाठ 5, पृष्ठ 129

- प्रवेशिका के बेहतर उपयोग के लिए इसके साथ इसके उपयोग के विस्तृत निर्देश भी तैयार किए गए हैं ताकि स्वयंसेवक शिक्षक इस प्रवेशिका का सही तरीके से उपयोग कर सके और इसका अधिकतम लाभ शिक्षार्थियों को प्राप्त हो सके।

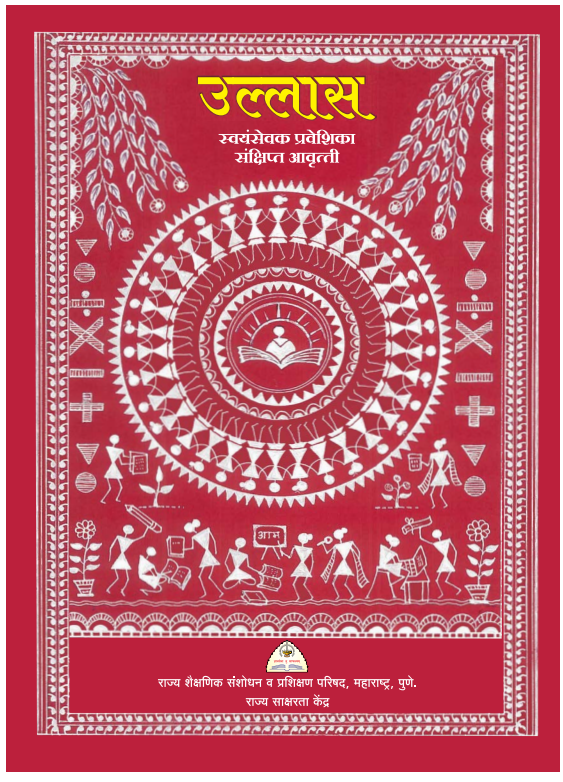
प्रवेशिका के निर्माण में यह बिंदु ध्यान रखने योग्य है कि भाषा और गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। बुनियादी साक्षरता (भाषा और संख्या-ज्ञान) के लिए शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन के संदर्भों को शामिल करना आवश्यक है ताकि बुनियादी साक्षरता (भाषा और संख्या-ज्ञान) और जीवन जीने के बीच कोई दूरी न रहे और शिक्षार्थी यह समझ सकें कि पढ़ना-लिखना तथा संख्या-ज्ञान अंतत: जीवन जीने में उनकी मदद के लिए ही है। प्रवेशिका के पाठ और जीवन के बीच का यह जुड़ाव बुनियादी साक्षरता (भाषा और संख्या-ज्ञान) के अर्जन में मदद करेगा।

प्रवेशिका निर्माण के साथ-साथ उसमें आए पाठों के अनुक्रम के अनुसार ऑडियो- वीडियो कार्यक्रम भी बना सकते हैं।

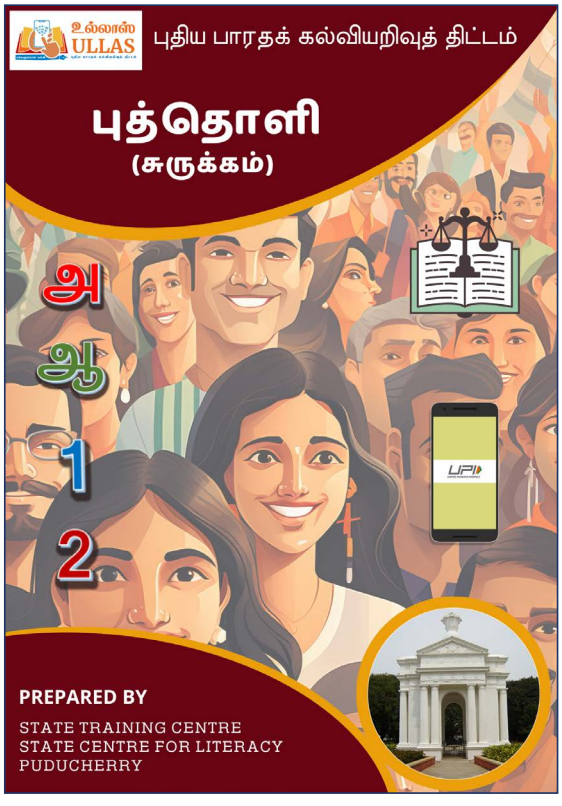
आशा है कि प्रवेशिका के निर्माण से संबंधित इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए राज्य अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में और स्थानीय संदर्भों, परिवेश को केंद्र में रखते हुए प्रवेशिका एवं अन्य संसाधन सामग्री का निर्माण करेंगे। यह आवश्यक नहीं है कि एक ही प्रवेशिका सभी शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके। अत: शिक्षार्थियों के स्तर, क्षमता, संदर्भ और परिवेश को ध्यान में रखते हुए अन्य सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।



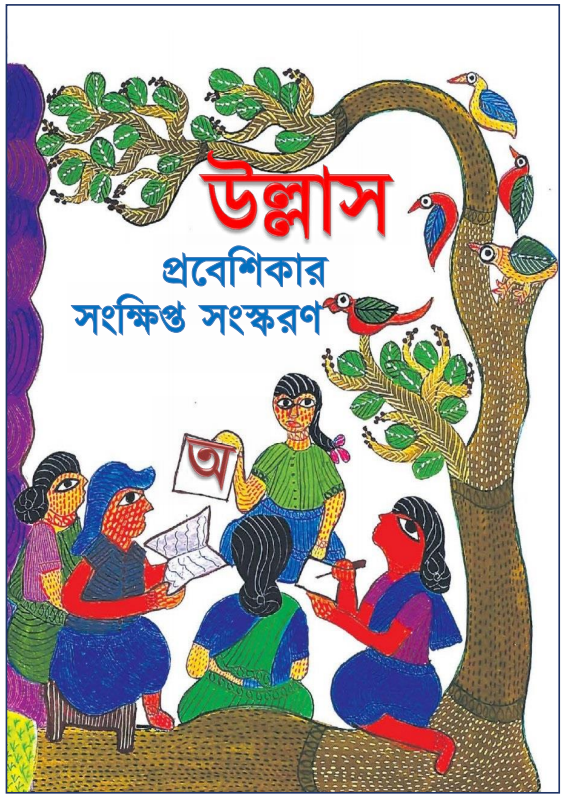
नागालैंड (अंग्रेज़ी)



महाराष्ट्र (मराठी)



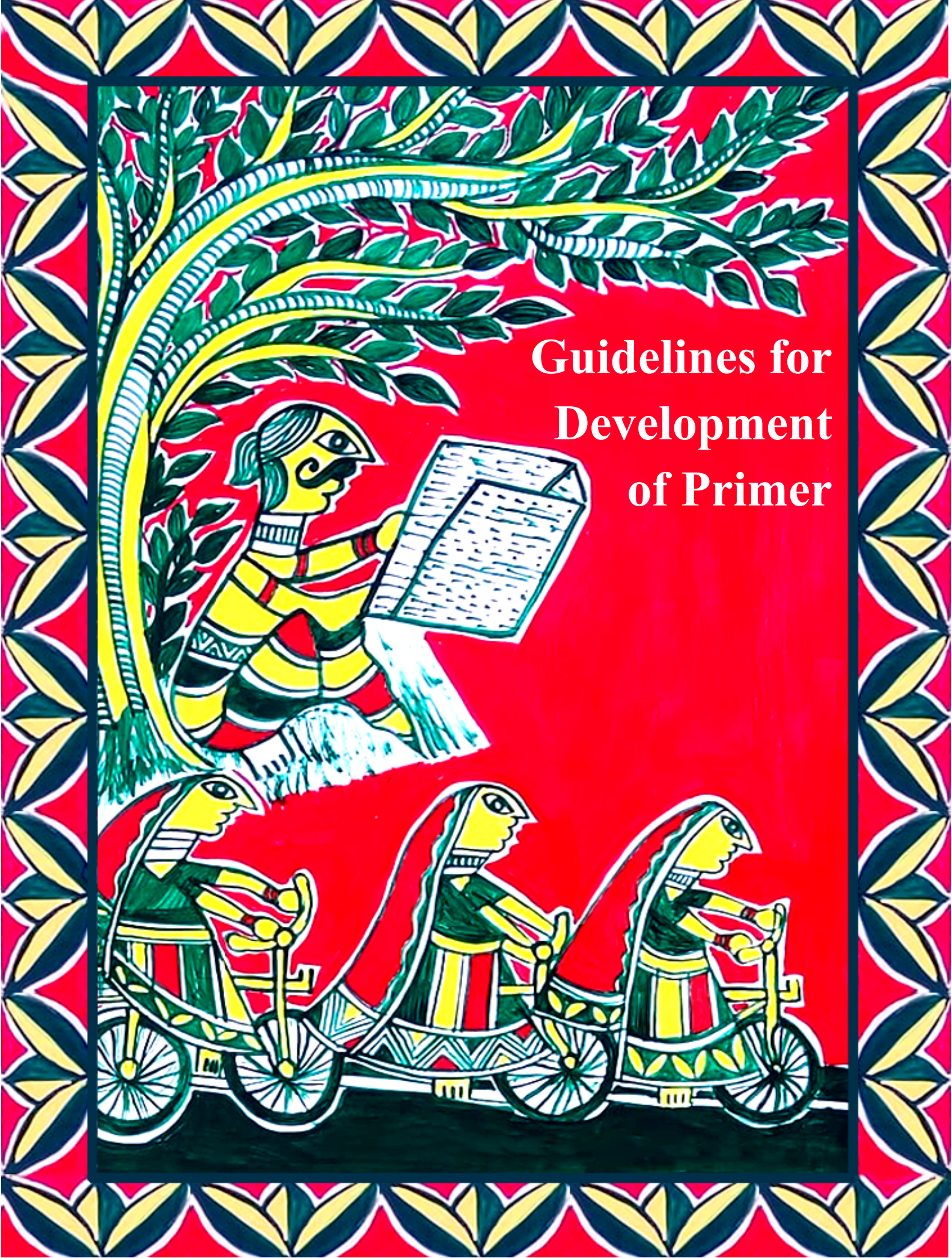
पुदुच्चेरी (तमिल)



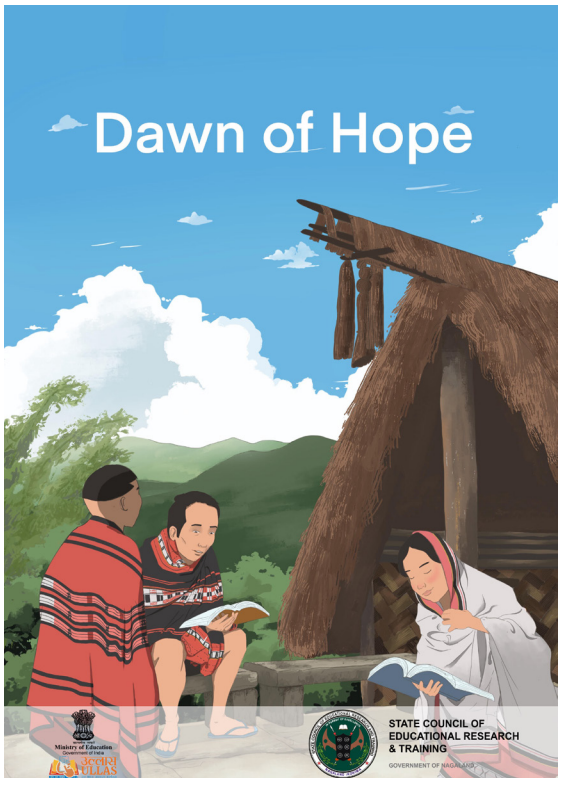
अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह (बांग्ला)



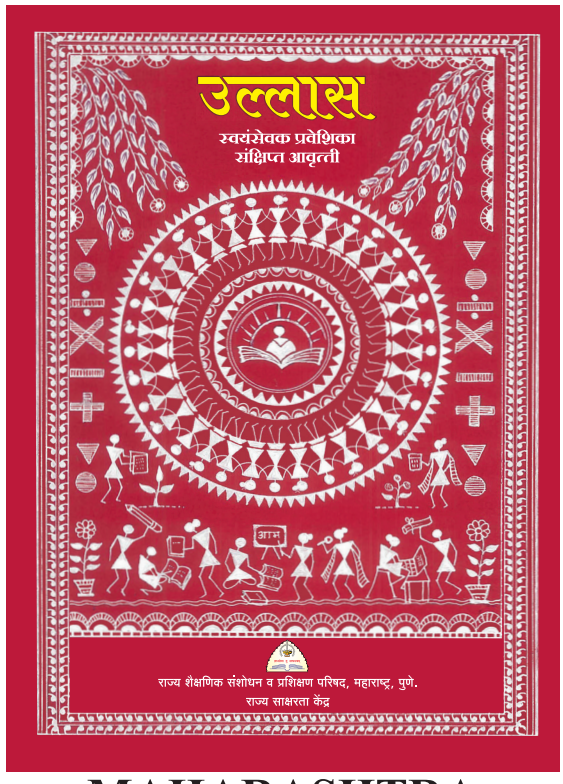
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



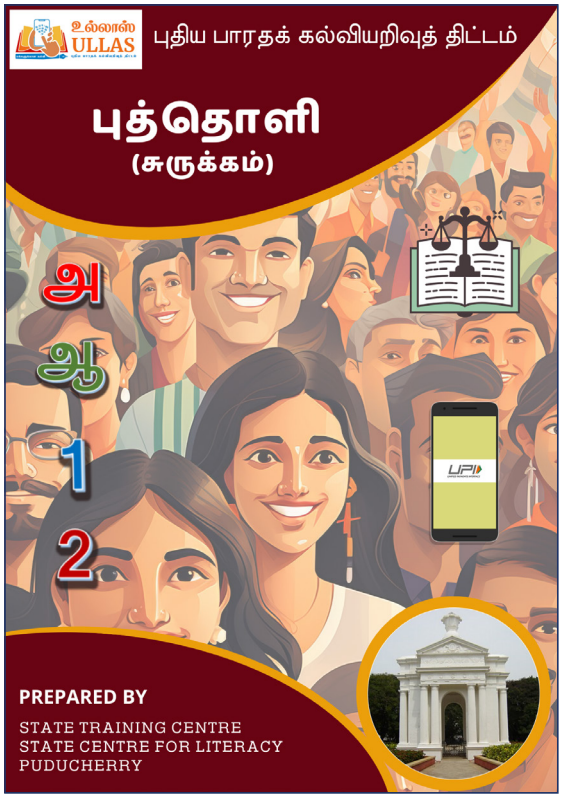
Guidelines for Development of Primer



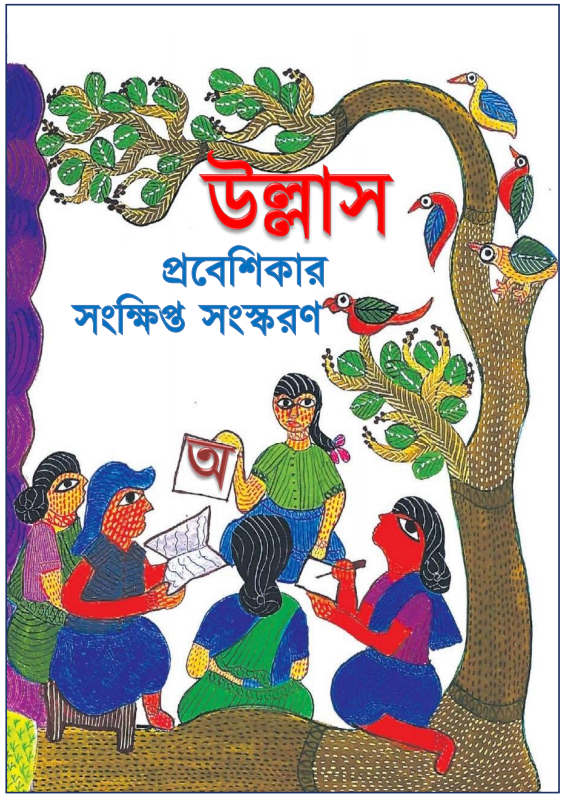
Nagaland (English)



MAHARASHTRA (MARATHI)



Puducherry (Tamil)



Andaman and Nicobar Islands (Bangla)

Guidelines for Development of Primer

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



Foreword

National Education Policy (NEP) 2020 lays a special emphasis on 'Education for All' (erstwhile Adult Education), focusing on 'the need for firm and innovative initiatives by the government' – 'especially, in order to facilitate community participation along with a smooth and beneficial integration of technology'. This shall help in speeding up the process of attaining the goal of 100% literacy in India.

The National Education Policy 2020 sets the essential target of achieving 100% literacy by the year 2030. Efforts are continuously being made in this direction, at the national as well as state level. To bring into force the recommendations of NEP 2020, the government of India has been in the process of implementing the centrally sponsored scheme *ULLAS – Nav Bharat Saaksharta Karyakram* since 01 April, 2022. The primary objective of the scheme is to empower the learners aged 15 years and above, who have not had the opportunity to attain a formal school education as well as basic literacy and numeracy skills. Known throughout the country as *Nav Bharat Saaksharta Karyakram,* ***ULLAS*** stands for **Understanding of Lifelong Learning for All** in Society with the tagline, *Jan-Jan Saakshar*.

The *ULLAS* scheme asserts the importance of imparting literacy to the non-literates and bringing them into the mainstream, thereby giving them the opportunity to contribute towards the development of the nation.

Keeping in mind the recommendations of NEP 2020 and *ULLAS*, as well as the needs of the learners, Cell for National Centre for Literacy (CNCL), NCERT has developed a primer – ***Ullas***, in four volumes – and a concise primer – ***Ullas***: **Concise Edition**, both which, developed as exemplars, consist of themes associated with the lives of the learners. These themes aid in the understanding and development of foundational literacy, numeracy and other critical life skills such as, digital literacy, financial literacy, legal literacy, environmental literacy etc.

Additionally, a *Margdarshika*, primarily for the volunteer teachers, has also been developed to help the learners acquire basic reading, writing and numeracy skills. It discusses the teaching-learning process and the broad perspectives of literacy, language and numeracy in great detail.

This journey of the development of primers and book of guidelines has been an interesting and unforgettable one. The resource materials have been tried out

and tested in the field, at actual work-places, by the learners, on the basis of which, improvements have been done over-time to make them more beneficial. It is important to note here that the primers developed by the Cell are exemplars and the states and union territories are expected to develop their own primers as per their socio-cultural contexts, in their respective regional languages. These guidelines for the development of the primers are, thus, being presented to guide and support the states and union territories for the same.

These guidelines are mere suggestions and all the stakeholders can work as per these guidelines or use them at their own discretion.

The Guidelines for the Development of Primer consists of two chapters. Chapter one gives a brief introduction of 'Education for All' and '*ULLAS – Nav Bharat Saaksharta Karyakram*'. It also details the progress of the *ULLAS* scheme. Chapter two consists of the guidelines that can be taken into consideration while developing the primer, which would help in understanding that the *Ullas* primer is only a medium, a tool which can be used to achieve the learning outcomes of Foundational Literacy and Numeracy. The examples in the primer have been taken up purposefully and similar resource materials can be employed to help the learners acquire literacy and numeracy skills,

The material has been presented in a simple language, with the help of examples and illustrations so that more information can be disseminated using less words.

The Council gratefully acknowledges the efforts and contributions of all subject-matter experts, faculty members, and project staff towards the development of these guidelines. It is hoped that all states, union territories, volunteers working in the field of education and academicians would be able to benefit greatly from them. Your suggestions and comments are welcome with regards to these guidelines.

February, 2024

Dinesh Prasad Saklani
Director
National Council of Educational Research & Training
New Delhi

Preface

Education is the cornerstone of a quality life. It is essential, along with lifelong learning, in order to lead a dignified life. The concept of learning – formal as well as informal – is both broad and deep. This refers to the fact that learning is not confined within the walls of any school and that we keep on learning continuously – from our surroundings, from the people around us and from the experiences of others as well as our own! Education is a fundamental human right and a key life goal. The Universal Declaration of Human Rights (1948) also states that 1. *Everyone has the right to education.* 2. *Education shall be directed to the full development of the human personality and to the strengthening of respect for human rights and fundamental freedoms.* (Article 26). This vision connecting education with life and human rights also influences the development of the country. According to Swami Vivekananda, "A nation is advanced in proportion to education and intelligence spread among the masses…if we are to rise again, we shall have to do it by spreading education among the masses." Since the path of progress of a country also passes through the educational realm, it becomes necessary to focus on the education of the masses.

As a matter of fact, human life is the pivot of education; and liberty and equality are the two fundamental aspects when it comes to its dignity and also to the success of the democracy. The Indian Constitution gives every citizen the Right to Equality before law – "*The State shall not deny to any person equality before the law or the equal protection of the laws within the territory of India.*" (Article 14, Right to Equality, Constitution of India). The Constitution also gives the Right to Freedom to the citizens –"*All citizens shall have the right to freedom of speech and expression.*"(Article 19 (1) (a)); "*All citizens shall have the right to practise any profession, or to carry on any occupation, trade or business.*" (Article 19 (1) (g)) and "*No person shall be deprived of his life or personal liberty except according to procedure established by law.*" (Article 21). "*The State shall provide free and compulsory education to all children of the age of six to fourteen years in such manner as the State may, by law, determine.*" (Article 21A). These fundamental rights provide people with a sense of dignity, respect, and identity. Literacy, in turn, helps in preserving this dignity, respect and identity as well as in helping people opt for an appropriate livelihood and make a living. Thus, the development of reading, writing and numeracy skills becomes an essential requirement for all.

The Government of India's scheme *ULLAS* provides the opportunity to all non-literates in the age group of 15 and above to become literate, keeping in mind the importance of literacy and lifelong learning. While the Constitution of India provides education as a fundamental right to children between ages 6 and 14, provisions have been made for the education of people of ages 15 and above in the *Nav Bharat Saksharta Karyakram*. In this context, the teaching-learning materials become as essential as the teaching-learning process for the learners. We learn from our surroundings, hence, the materials available around us become learning materials. This means that the resource materials should be contextual and related to the socio-cultural environment of the learner. Learning should also be such that it is helpful in living a fulfilling life; a learning that proves useful in different circumstances in life. Therefore, it is important to keep in mind the context, language, usage, time as well as the objective while developing the resource materials. Additionally, one should also note that learners' surroundings, experiences, thinking abilities as well as level, language, socio-cultural and economical contexts are also different. Thus, it is not necessary that the same kind of resource material be equally useful for all the learners, however, it can be combined or modified as per their needs.

It is worth noting that no resource material, whether it be the primer or any other resource material, can be definitive when it comes to learning reading, writing and numeracy on the part of the learners, and that it shall always have room for improvement according to their needs. From this perspective, not only shall we have to keep revising the previously developed material, but also keep developing more suitable material.

Language skills and mathematical concepts are integrated in the sense that while language becomes the medium for learning those concepts, their expression is only possible through language. For instance, reading the names and prices of the items in a shop, deciding which ones to buy, asking the shopkeeper for the required items, reading the bill of the items purchased and to finally pay for them – calls for integrated language (reading) and numeracy (determining the total amount according to the rate, calculating it by looking at the bill, making payment and getting the balance amount back) skills. Thus, there is a need to develop an integrated content of literacy and numeracy while developing the primer. Keeping the learning outcomes of foundational literacy and numeracy in the centre and increasing the possibilities of their use in different circumstances of life would be helpful in developing the primer and other resource materials.

The points for the development of primer are mere proposals in the context of achieving the goal of "Education for All" under the ULLAS scheme, your suggestions are always welcome to make them more comprehensive.

Best Wishes!

February, 2024

Usha Sharma
Professor & In-charge
Cell for National Centre for Literacy
National Council of Educational Research & Training
New Delhi

Development Committee

Chairperson

Dinesh Prasad Saklani, *Director*, N.C.E.R.T, New Delhi

Development Committee

Akshay Kumar Dixit, *Mentor*, Directorate of Education, Government of Delhi, Delhi

Bhawna Khera, *Junior Project Fellow*, Cell for National Centre for Literacy, N.C.E.R.T, New Delhi

Jyoti Tiwari, *Consultant*, Cell for National Centre for Literacy, N.C.E.R.T, New Delhi

Nishat Farooq, *Former Director*, State Resource Centre, Jamia Millia Islamia, New Delhi

Satyavir Singh, *Principal*, Government Inter College, Baghpat, Uttar Pradesh

Review Committee

Ayushman Goswami, *Professor and Head*, Department of Education, Regional Institute of Education, Ajmer, Rajasthan

Chandkiran Saluja, *Director*, Sanskrit Promotion Foundation, New Delhi

Kanchan Devrari, *Additional Director*, S.C.E.R.T, Dehradun, Uttarakhand

Prashant Pandey, *Assistant Director*, S.C.E.R.T, Raipur, Chhattisgarh

Sanjeev Kumar, *Former Principal*, DIET, R.K. Puram, New Delhi

Satyavir Singh, *Principal*, Government Inter College, Baghpat, Uttar Pradesh

Usha Sharma, *Professor and In-charge*, Cell for National Centre for Literacy, N.C.E.R.T, New Delhi

Member Coordinator

Usha Sharma, *Professor and In-charge*, Cell for National Centre for Literacy, N.C.E.R.T, New Delhi

Acknowledgements

National Council of Educational Research and Training is grateful to all the subject-matter experts whose knowledge, guidance and experience has contributed towards the development of the book, Guidelines for the Development of Primer. The Council appreciates the contributions of the writers whose work has enriched the content while also encouraging the learners to understand and acquire basic literacy and numeracy skills.

Additionally, the council is grateful to the illustrators whose illustrations have given a more concrete form to the subject-matter by visually enhancing and complementing it. These illustrations have been successful in bringing out the depth in the different dimensions of life.

The Council also expresses gratitude towards Ms. Jyoti Kumari, Ms. Nutan Srivastava and Ms. Anukriti Kumari from Bihar, for beautifully designing the cover page in the traditional Manjusha folk art form.

The Council also gratefully acknowledges the contributions of Mr. Aman Gupta, *Consultant*, Mr. Yogesh Pratap Singh, *D.T.P Operator*, Ms. Ishveen Kaur Baluja, *Graphic Artist and Animator*, Mr. Shubham Kumar, *Senior Graphic Designer*, Mr. Jitendra, *Typist*, towards shaping this book.

The Council is extremely grateful for the support by the Publication Division.

Table of Contents

Foreword iii

Preface v

Development Committee viii

Acknowledgements ix

1.Jan-Jan Ho Sakshar – A Journey 44–51

- *Education For All: An Introduction*
- *National Education Policy 2020 and and Education for All*
- *ULLAS: Nav Bharat Saksharta Karyakram*
- *The process of Development of the primer 'ULLAS'*

Primer: Points of Reflection 52–54

2.Development of Primer: Guidelines 55–90

Chapter 1

Jan-Jan Ho Sakshar – A Journey

Education is an important and indispensable component of human life. It not only brings stability in life but is also an important factor in our mental development and social upliftment.Thus, it is vital that we look for possibilities and opportunities for teaching and learning and that these are extended to the masses as well. Goal 4 of the Agenda for Sustainable Development (2015) talks about quality education and supports the idea of ensuring *inclusive and equitable quality education and promoting lifelong learning opportunities for all*. Target 4.6 under the same talks about *universal literacy and numeracy* and explicitly states that by 2030, *ensure that all youth and a substantial proportion of adults, both men and women, achieve literacy and numeracy.* National Education Policy 2020 echoes the same sentiment by determining the goal of achieving 100% literacy by 2030. To attain this goal, the Government of India launched a centrally sponsored scheme known as the New India Literacy Program (*Nav Bharat Saksharta Karyakram*). It is an important initiative in the direction of imparting literacy to the non-literates. It is primarily for those who have ample experience, understanding and knowledge of different aspects of life but face innumerable challenges due to their inability to read, write and perform basic mathematical operations. This program encourages us all to move enthusiastically towards new prospects for the growth and development of the country by helping non-literate learners attain literacy.

Education for All: An Introduction

Education for All (erstwhile Adult Education) is notably for people who are considered adults by the society. Now, the question is, what is the importance of adult education and how does it change a person's life. As has been mentioned before, education is not restricted to the classrooms but is extremely helpful in our everyday activities as well. It makes us capable, efficient, and aware. It enables an individual to enhance his/her technical or vocational skills, further develop their capabilities, and enrich their knowledge with one or more of the following goals in mind-

- To achieve a certain level of formal education
- To acquire knowledge, skills, and competencies in a new domain
- To refresh or update knowledge in a specific area or domain.

The history of Education for All (erstwhile Adult Education) dates back decades and while it is also known as 'continuing education,' 'recurring education' and 'second chance education.' throughout the history of adult education, the concept has evolved with several changes to its name. Until the year 1947, the fundamental notion was 'basic education' which was based on a traditional methodology while being centred on a night school curriculum. The concept of 'civic literacy,' which was based on a life-oriented approach and focused on social education, was operational between the years 1949 and 1966. From 1967 to 1977, the concept of 'functional literacy,' based on a work-oriented approach, was promoted under adult education with an emphasis on farmers' education and literacy. After this, the concept of 'developmental literacy' became popular, beginning from the year 1978, which centred on the holistic learning initiative and strategy for social change.With the advent of night schools, which received grants-in-aid in 1929, the notion of basic literacy emerged. Its curriculum was laid out within a period of more than two years, and it included the 3 R's – reading, writing and arithmetic, classical tales along withprimary lessons in basic health, hygiene and first aid training.The training under this program would go on for two to three hours in the evening.

National Education Policy 2020 and Education for All

A strong emphasis has been laid on Education for All (erstwhile Adult Education) in the National Education Policy 2020. Article 21.4 of the policy states that *"Strong and innovative government initiatives for adult education - in particular, to facilitate community involvement and the smooth and beneficial integration of technology"* – which will help speed up the process of attaining the goal of 100% literacy in India. NEP 2020 also recommends the inclusion of the five components of Education for All (erstwhile Adult Education), which are-

- Foundational Literacy and Numeracy
- Critical Life Skills (financial literacy, digital literacy, vocational skills, health care and awareness, childhood care and education, and family welfare)
- Vocational Skills Development (with a view of seeking local employment)
- Basic education (including elementary, middle, and secondary level equivalence)

- Continuing Education (including holistic adult education curriculum with advanced content on important life skills,as well as other topics of interest or use for local learners such as arts, science, technology, culture, sports, and recreation)

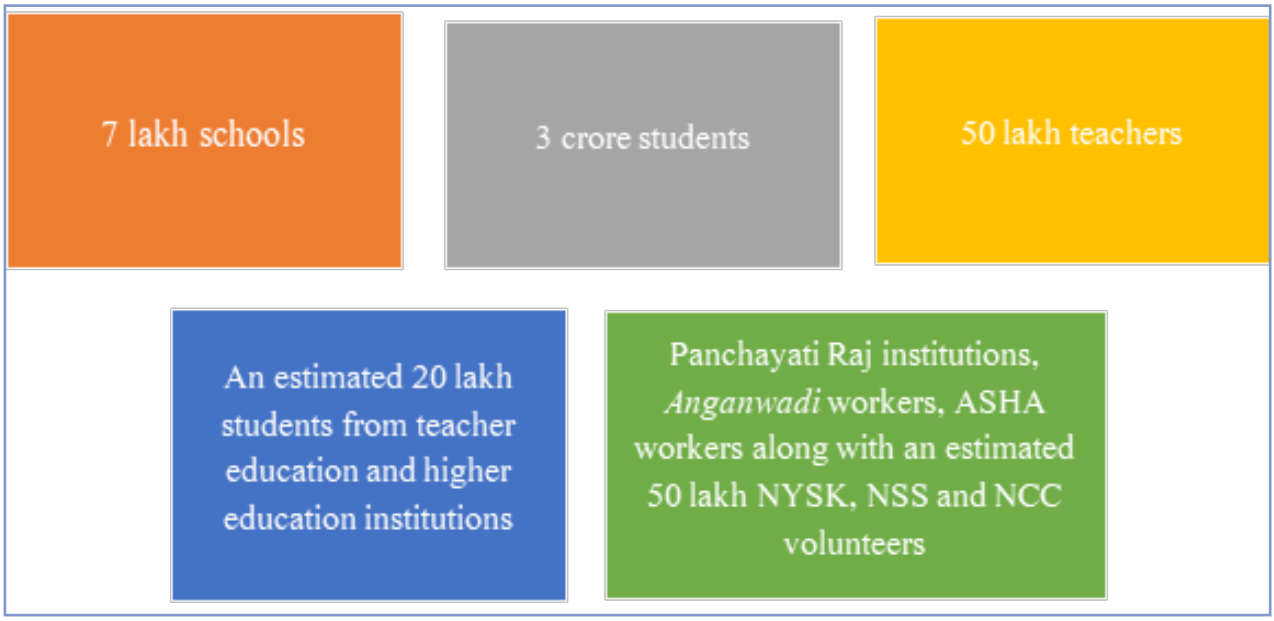
These five components, when observed carefully, are found to be the important dimensions that would prove useful in maintaining the dignity of human life.

ULLAS: *Nav Bharat Saksharta Karyakram*

In light of the National Education Policy 2020 and the Union Budget Announcements for the financial year 2021-22, the Government of India has launched a centrally sponsored scheme called **New India Literacy Program** (*Nav Bharat Saksharta Karyakram*) which is popularly known as ***ULLAS*** – **Understanding of Lifelong Learning for All in Society**. Under this program, the term 'Adult Education' has been replaced by 'Education for All' to include all those non-literates aged 15 years and above who have not had the opportunity to attain a formal education due to a variety of reasons and who ought to be brought into the mainstream society, so that they, too, become capable and help in the betterment of the society. All the five components referred to in NEP 2020 have been included in the program. The objective of the program is to impart foundational literacy and numeracy to the non-literate learners besides providing them the opportunity to develop skills pertaining to the components necessary for 21st century citizens. The goal for the attainment of foundational literacy and numeracy for the financial year 2022-27 is 5 crore learners at the rate of 1 crore learners per year, who are to be imparted literacy by blending online and offline learning methods with the help of national institutions such as National Informatics Centre, National Council of Educational Research and Training (NCERT) and National Institute of Open Schooling (NIOS). There is a provision to register non-literate learners and volunteer teachers on the '*ULLAS*' app where one can find all the important information such as name, date of birth, sex, AADHAR card number, phone number etc. There is also the provision for the training and orientation of volunteer teachers as well as organization of workshops in face-to-face mode. The application also allows the easy availability of all kinds of resource materials through digital modes like TV, radio, free/open-source app or portal on the mobile phones etc for the registered volunteer teachers.

The program designates schools as the units of implementation under the scheme and they are currently being used to conduct surveys of non-literate learners and volunteer teachers.

In fact, *ULLAS (Nav Bharat Saksharta Karyakram)* is inspired by the spirit of volunteerism and relentless efforts to make everyone literate are being made turning it into a mass movement.



(Source: numbers from schools registered under UDISE
https://nilp.education.gov.in/nilp/#/about-us)

A lot of work needs to be done to help on the non-literate youth and adults become literate while also working on their overall development and empowerment. India being a diverse country, gives the states the flexibility to develop their own strategies to achieve this goal, keeping in mind their local contexts. The establishment of Samajik Chetna Kendras, the collective expertise and sense of dedication of the volunteers, promotion of a strong sense of community involvement are all important factors in the dissemination of social duty or Kartavya Bodh towards the development of the country. Provisions for the students participating in this movement to be rewarded through credits, certificates, appreciation letters etc in schools/ universities are being made.

Process of Development of the Primer *'ULLAS'*

Keeping in mind the recommendations of the National Education Policy 2020 and *Nav Bharat Saksharta Karyakram* as well as the needs of the learners, a primer titled '*ULLAS*' was developed by the Cell for National Centre for Literacy (CNCL) in the National Council of Educational Research and Training (NCERT) in the year 2021-22 as an example. The primer is divided into 4 parts which comprise of a total of 13 themes associated with the lives of the learners. It consists of Foundational Literacy and Numeracy as well as Critical Life Skills both. A dedicated space has



ULLAS- Part 4, Chapter 13, Page 302

been given to various skills such as financial literacy, digital literacy, legal literacy, and environmental literacy etc under the component of Critical Life Skills.

All the four parts include Language (here, Hindi) and Numeracy in an integrated

manner. An emphasis has been laid on developing an understanding of language wherein both – understanding while reading and reading with understanding – have been efficiently incorporated. Here, the idea of understanding and explaining, forming one's own opinion, expressing oneself, writing with an understanding have also been included along with reading and writing. Similarly, it comprises of numerical knowledge besides an understanding of mathematical concepts and their use in daily life.

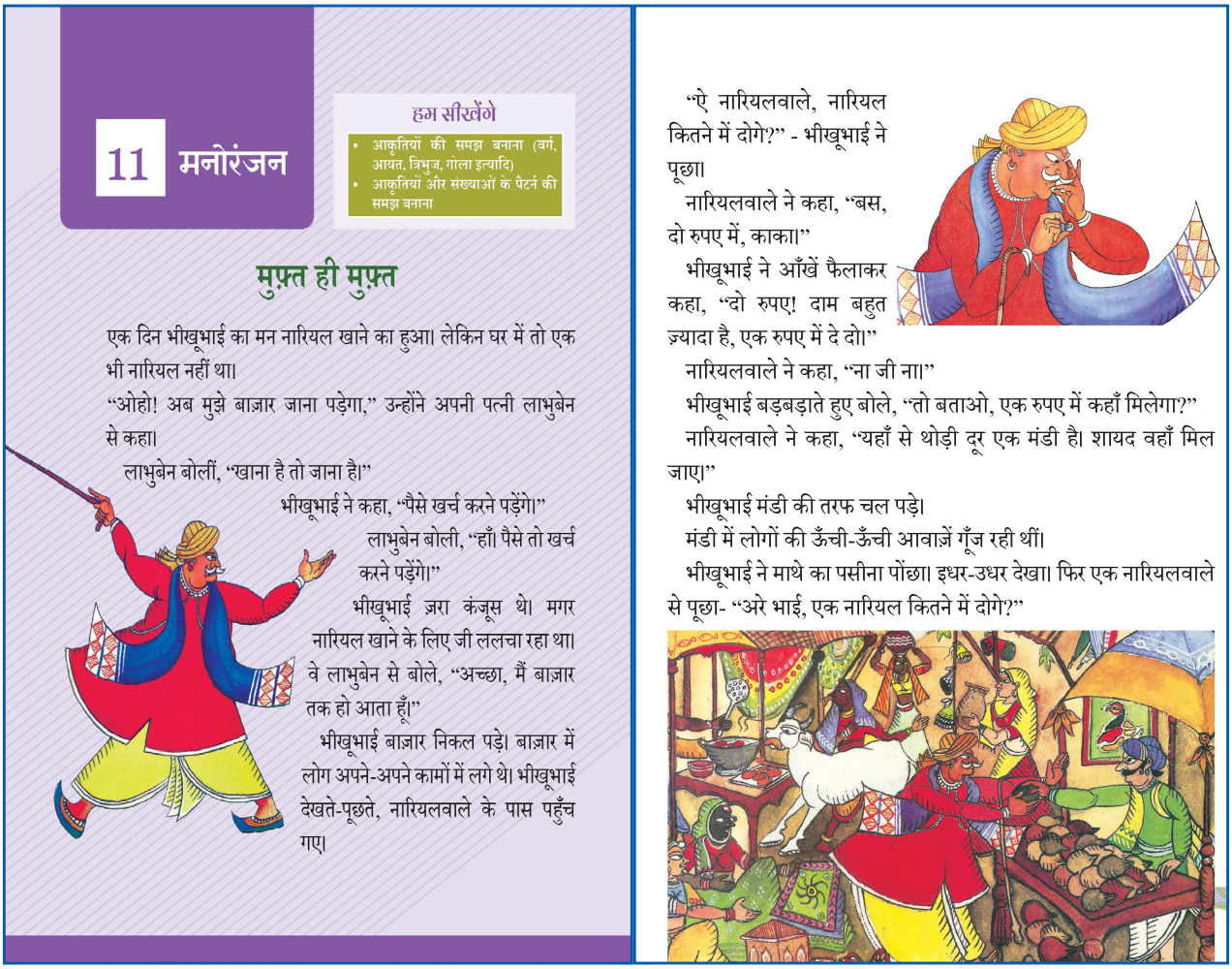
The primer has been divided into 4 parts and 13 themes. Each chapter has been designed in such way that the learner is able to associate with it and is able to talk about his/her life experiences in connection with the themes given. Following themes have been included in the primer –



ULLAS- Part 3, Chapter 8, Page 196-197

Parivar aur Pados (Family and Neighbourhood), Baat-cheet (Conversation), Khaan-paan aur Swasthya (Food and Health), Vittiya Saksharta (Financial Literacy), Kanooni Saksharta (Legal Literacy), Paryavaran (Environment), Chunaavi Saksharta (Electoral Literacy), Aapada Prabandhan (Disaster Management), Paise (Currency), Samay (Time), Yatra Karna (Travel) and Manoranjan (Entertainment)

Folk tales, stories, poems etc. from different states have been used to develop cohesion at the national level.Experts from various fields in relation to the themes, were invited to participate in the development of the primer.For instance, the cover page of the primer showcases Madhubani art which is a very well-known art form from the state of Bihar. Similarly, many other art forms such as the Gond art from the state of Madhya Pradesh have been included in other chapters as well. An effort has been made to showcase everyday realities like people walking on the streets, a group of children playing together, women talking to each other, the scene of a marketplace, scenes from villages, semi-urban towns and images related to the environment etc. The primer has been, thus, designed in such a manner that the learners are able to associate with it which will, in turn, help them learn and understand various concepts with ease..



11 मनोरंजन

हम सीखेंगे

- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना

मुफ़्त ही मुफ़्त

एक दिन भीखूभाई का मन नारियल खाने का हुआ। लेकिन घर में तो एक भी नारियल नहीं था।

"ओहो! अब मुझे बाज़ार जाना पड़ेगा," उन्होंने अपनी पत्नी लाभुबेन से कहा।

लाभुबेन बोलीं, "खाना है तो जाना है।"

भीखूभाई ने कहा, "पैसे खर्च करने पड़ेंगे।"

लाभुबेन बोली, "हाँ पैसे तो खर्च करने पड़ेंगे।"

भीखूभाई ज़रा कंजूस थे। मगर नारियल खाने के लिए जी ललचा रहा था। वे लाभुबेन से बोले, "अच्छा, मैं बाज़ार तक हो आता हूँ।"

भीखूभाई बाज़ार निकल पड़े। बाज़ार में लोग अपने-अपने कामों में लगे थे। भीखूभाई देखते-पूछते, नारियलवाले के पास पहुँच गए।

"ऐ नारियलवाले, नारियल कितने में दोगे?" - भीखूभाई ने पूछा।

नारियलवाले ने कहा, "बस, दो रुपए में, काका।"

भीखूभाई ने आँखें फैलाकर कहा, "दो रुपए! दाम बहुत ज़्यादा है, एक रुपए में दे दो।"

नारियलवाले ने कहा, "ना जी ना।"

भीखूभाई बड़बड़ाते हुए बोले, "तो बताओ, एक रुपए में कहाँ मिलेगा?"

नारियलवाले ने कहा, "यहाँ से थोड़ी दूर एक मंडी है। शायद वहाँ मिल जाए।"

भीखूभाई मंडी की तरफ चल पड़े।

मंडी में लोगों की ऊँची-ऊँची आवाज़ें गूँज रही थीं।

भीखूभाई ने माथे का पसीना पोंछा। इधर-उधर देखा। फिर एक नारियलवाले से पूछा- "अरे भाई, एक नारियल कितने में दोगे?"

ULLAS – Part 11, Chapter 4, Page 250-251

The chapters described above have been developed based on foundational literacy, numeracy, and critical life skills in an integrated manner so that the learners are able to read, write and understand cumulatively. A story titled "*Bhiku Bhai ki Kahani*" has been incorporated in a section of the fourth part of the primer which gives us a glimpse of the Gujarati culture. Keeping the need of imparting digital, financial, and legal literacy, recent policies have been assimilated in the form of stories and poems for the learners to understand them easily. Some folk songs such as the ones from the states of Chhattisgarh and Madhya Pradesh have been included in the primer, for example, '*Dadariya Lokgeet*.'

A review committee, comprising of experts from various fields such as adult education, language and foundational literacy and numeracy, was constituted to review the primer prepared on the said parameters.Based on their recommendations and suggestions, changes were made in the primer. Since the primer needs to be tested once it has been developed, therefore, eight Hindi- speaking states namely Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Chhattisgarh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Jharkhand, and Haryana were selected to test the primer regionally. The primer has been primarily developed in Hindi languages hence Hindi-speaking states were selected for field testing. All the 13 themes in the four parts of the primer were tested in these states wherein necessary modifications were made based on the information collected on the practical aspects on the primer by the learners, the people associated with it and the CNCL team members. It was only after this the field testing the primer was finalised to be uploaded on the DIKSHA portal for its maximum use by everyone.

We hope that the primer will prove beneficial in imparting literacy to all which will help the learners be capable and empowered enough to contribute towards the development of the country.

Primer: Points of Refection

The primer is, essentially, a resource material, by means of which a suitable and conducive environment can be created to teach reading, writing and basic mathematical concepts to those learners who haven't been able to do so in their formative years, due to a variety of reasons. It serves two primary purposes-

- Providing material to the learners to read and write
- Guiding volunteer teachers towards understanding the main aim and how to achieve it

It is indubitably true that in order to teach and learn how to read and write along with understanding mathematical concepts, we must have the appropriate materials for the same. This way, basic literacy and numeracy are attainable and the primer and other resource materials become the means to attain them. It is worth keeping in mind that there are individual differences. As a result, it is natural to have differences in the purposes for achieving basic literacy and numeracy as well.The learners' environment, experience, thinking-ability and level, language, socio-cultural and economic contexts differ.That is why it is not necessary that one particular kind of primer be useful for all of them. Instead, the material has to be modified and contextualised as per their needs. No resource material is final in itself. Alternatively, changes as per the need would always be expected. Keeping this in focus, we would not only have to keep improving upon the previously developed materials, but also keep developing new ones.

The primer is a doorway to learning and teaching foundational literacy and numeracy, passing through which it is important that one gets guidance on what to do and how to do it. Apart from the primer, various kinds of audio-visual materials are also helpful in achieving basic literacy and numeracy. We would have to keep developing and using those materials as well. '

Education for All" (formerly, Adult Education) needs to be viewed in the light of the recommendations of National Education Policy 2020. Here, it is expected that, beginning with basic literacy, the learners would become adept at working with the various digital devices. Literacy, in this sense, is a broad concept that is not limited to the knowledge of letters and numbers but *is also the ability to recognize, understand, compose, calculate and communicate using visual, audio and digital content in a variety of contexts.****[Excerpt from International Literacy Association (ILA)]***.

This huge blanket of literacy would help the learners to lead a life of quality and dignity.

Further, the Ministry of Education, Government of India launched the ***New India Literacy Program*** in April, 2022 which aims at providing learning opportunities to all the learners of ages 15 and above, who could not acquire literacy and numeracy due to certain reasons. The primer (ULLAS), thus, helps in achieving the basic linguistic and mathematical skills.

It is evident that every language has a unique structure. This can be seen at each level, whether it is at the level of sound, words or sentences. Words get their meanings from the language communities. This is why, while on one hand, we find different words in different languages for one particular object, on the other hand, we find one word having different meanings in different linguistic communities. Therefore, language has to be understood in its socio-cultural perspective because, ultimately, it is used in the society and for various purposes.

Moreover, the spoken and written forms of language are equally important. Both are extensively used in the teaching-learning process. The learners, already enriched in oral language and well-equipped in putting their thoughts across, need only to learn how to read and write. Many learners might be partially adept in both these forms; thus, efforts need to be made to access the written form of language through the oral form. This not only instils self-confidence in the learners, but also makes them desirous of learning to read and write. It means, then, that reading and writing would not be a completely new exercise for them. They would begin to feel as if a large part of a journey has already been covered. The remaining distance would be covered once they learn to read and write.

In the context of basic numeracy, it is essential to understand that learners use mathematical operations orally in their daily lives and can do the everyday calculations well. The learners who aren't familiar with numbers and their written forms, only need to be helped in gaining a little more knowledge of the same for them to be skilled and be able to use this skill in several aspects of their lives. They need to be reassured that only a little distance remains to be covered.

While creating the primer, there should be several opportunities providing the learners the reassurance that they can understand and effectively use language and mathematical operations. These opportunities should be closely related to their surroundings because

these basic skills would ultimately be used there. Furthermore, digital devices and the related digital, legal, financial, environmental, health and hygiene literacy also form a part of the learners' lives. It would hence be appropriate to include these points in the primer so that we can lead a life of quality and take advantage of every aspect of it.

The points of development of the primer are for consultation. A lot of examples have been taken from the primer titled '*ULLAS*' so that the points related to literacy and numeracy can be explained through direct and concrete examples. It is expected from the states to develop primers in their respective regional languages, keeping in mind their socio-cultural environment as well as the need of the learners. The states can modify the contents of '*ULLAS*' as per the specific structures of their languages or can also develop a new primer based on the given guidelines.

Chapter 2

Development of Primer: Guidelines

ULLAS Primer has been principally designed in Hindi language and then translated into and contextualised as per English and the various regional Indian languages. It has been designed keeping in mind all those learners who-

- have significant life experience, the courage to face the struggles and challenges of life
- are knowledgeable but non-literates.

These are the learners who are of ages 15 years and above and use the oral form of their mother tongue in different contexts of their lives skillfully.

These learners have the ability to put their thoughts across, understand what others say and know as well as understand the practical application of mathematics. But they lack basic literacy and numeracy skills. As a result, it is possible that-

- These learners might have had to, and perhaps often do, face failure, disappointment, or cheating at different stages of life.
- Their hard-earned money might have been wasted or could be getting wasted instead of being saved.
- They may often be deprived of the convenience that comes with the use of modern ways of communication.
- The lack of digital literacy might deprive them of several facilities and information.
- Be it
    - Financial literacy,
    - Legal literacy,
    - Environmental literacy or
    - Literacy in the context of Health and Hygiene

being literate helps in managing every and circumtance situation.

The primer designed keeping in mind the daily life situations of the learners helps

them develop foundational language and numeracy skills along with the opportunity to use these skills effectively. It should be noted that reading and writing does not only mean having the knowledge of alphabets, but also understanding language, forming one's opinions, expressing one's thoughts and writing with an understanding of the same.

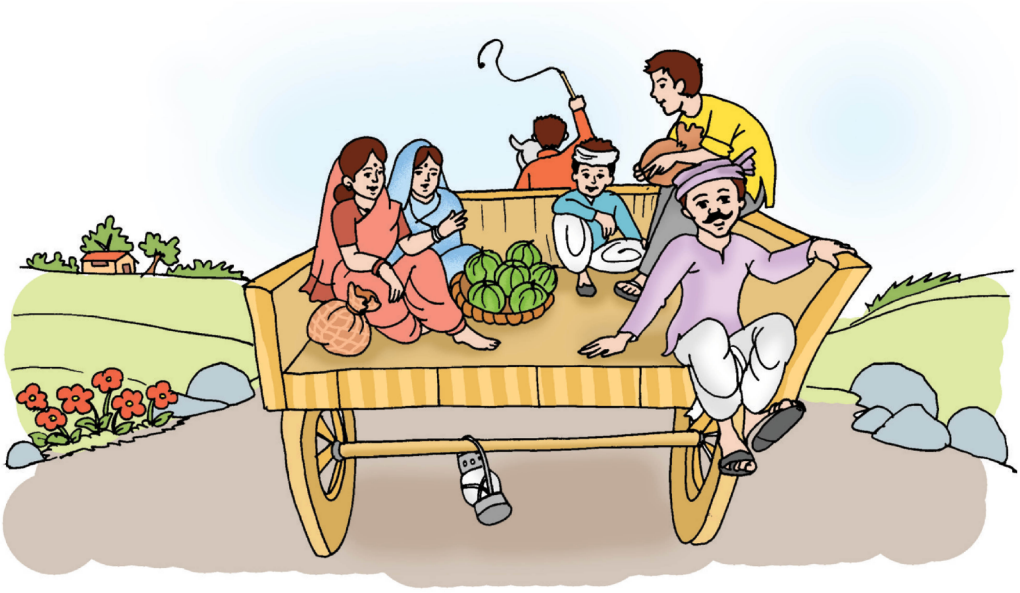
Similarly, the understanding of mathematical concepts is not only limited to the recognition of numbers, but also expands to their understanding and use in daily life.

These learners have their unique experiences and consequently their priorities too. One of the most important amongst those is learning to read and write the language (Hindi, English as well as regional) and mathematics. Keeping this in the foreground, opportunities have been provided in the primer to think, speak, read and write, which also guide us to explore and offer other options. More opportunities for reading and writing can also be created as per the level and abilities of the learners. One of the prime characteristics of the primer is that it contains language/literacy and numeracy in an integrated manner.

We know that language acts as a medium in reading, writing or understanding any subject. Similar is the situation with numeracy. Numeracy has its own language and it is presented only with the help of that language. In this respect, language acts as a medium. Both, critical reflection as well as specific contexts have been included in the primer and that acts as a starting point for the activities under hindi language reading and writing. Attempts have been made to connect the foundational numeracy skills with these contexts to facilitate the teaching-learning process. For instance- an image of '*राजा का परिवार*'has been given in the primer and the learners have been asked to observe it carefully. The questions that follow are numeracy centered. 'How many people are there in the cart ?'/ 'How many watermelons are there in the basket ?'/ 'How many lanterns are there in the cart ?'etc. the learners have to read them in Hindi language with the help of a volunteer teacher and respond in numbers. Similar examples of integrated language and numeracy concepts can be found in all the four volumes of the primer.

Some significant pointers pertaining to the primer have been given in detail ahead The following key pointers for developing the primers in various regional languages will act as proposed guidelines along with examples taken from the *ULLAS* Primer to explain and elaborate each point–

■ **राजा का परिवार बैलगाड़ी से जा रहा है। देखिए, गिनिए और लिखिए—**



- गाड़ी में कुल कितने व्यक्ति हैं?
- गाड़ी में कितने पुरुष हैं?
- गाड़ी में कितनी महिलाएँ हैं?
- टोकरी में कितने तरबूज़ हैं?
- गाड़ी में कितने पहिये हैं?
- गाड़ी में कितनी लालटेन हैं?

शिक्षक-निर्देश — सहभागियों से वस्तुओं को गिनकर सही संख्या लिखने का अभ्यास करवाएँ। संख्या पढ़ने और लिखने में सहभागियों की मदद करें। आप चाहें तो आस-पास मौजूद चीज़ों की गिनती भी करवा सकते हैं।

ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 21

Theme-based Lessons– The subject matter of the lessons in the primer has been developed around 13 themes. The various needs and aspects of the lives of learners have been taken into consideration when deciding on the themes for the Primer. For example, *Family and Neighbourhood (parivaar aur pados), Interactions(baatcheet),*

Our Surroundings (hamare aas-paas), Food and Health (khan-paan aur swasthya), Voting (matdaan), Legal Information (kanooni jaankaari), Disaster Management (aapda parbandhan), Time(Samay), Travel(Yatra), Entertainment(Manoranjan), Financial literacy(vitya saksharta), Digital literacy(digital saksharta), Environmental awareness, etc.

विषय-सूची

आमुख *iii*
प्रस्तावना *v*
स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें *vii*
निर्माण-समिति *xi*
आभार *xiii*

1. परिवार और पड़ोस **1–23**
- अ, आ, न, प, स, र, व
- अनवरी का परिवार
- 1 से 9 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- आओ बादल

2. बातचीत **24–53**
- इ, ई, ब, त, म, ख, ट, च
- स्कूल को चिट्ठी
- 10 से 20 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- 20 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना
- अंधेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा

3. हमारा रहन-सहन **54–86**
- ओ, औ, झ, द, ल, ग, क, य
- दीवाली के दीये
- 21 से 50 तक की संख्याएँ पहचानना, पढ़ना और लिखना
- इकाई और दहाई समूहों में गिनना
- 50 तक की संख्याओं का जोड़ और घटा करना
- कहानियाँ

ULLAS – Part 1

विषय-सूची

आमुख *iii*
प्रस्तावना *v*
स्वयंसेवी शिक्षकों से दो बातें *vii*
निर्माण-समिति *xi*
आभार *xiii*

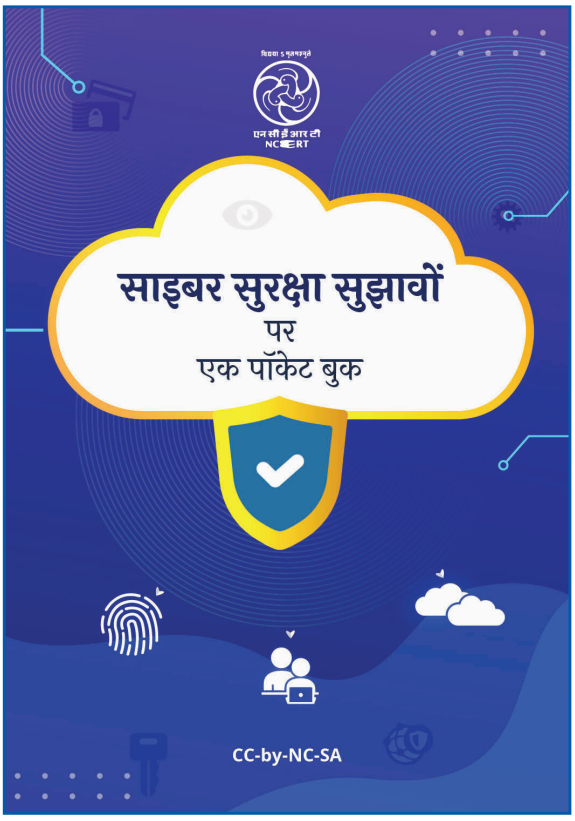
11.मनोरंजन **248–267**
- मुफ़्त ही मुफ़्त
- आकृतियों की समझ बनाना (वर्ग, आयत, त्रिभुज, गोला इत्यादि)
- आकृतियों और संख्याओं के पैटर्न की समझ बनाना
- 'ददरिया' लोकगीत
- जादुई लालटेन

12. वित्तीय साक्षरता **268–287**
- मेरा खाता मेरी शान
- बैंक खाता खुलवाने संबंधित जानकारी का उपयोग करना
- बैंक संबंधित फॉर्म पढ़ना, समझना और भरना (चैक, जमा पर्ची, नकद निकासी पर्ची)
- दान का हिसाब

13. डिजिटल साक्षरता **288–306**
- अब राह हुई आसान
- डिजिटल अंकों की पहचान एवं लिखना
- चित्र में प्रदर्शित आँकड़ों की समझ
- मोबाइल फ़ोन से संबंधित दैनिक जीवन की समस्या हल करना।
- मोबाइल की दुनिया

ULLAS – Part 4

- **Socio–cultural perspective-** The socio–cultural perspective of the learners has also been kept in mind while deciding on the subject matter of the primer since the use and development of language and mathematical concepts is linked to the society itself. Therefore, while creating any resource material related to the learners, their socio-cultural perspective has to be kept in mind. It is worth keeping in mind that the age group of these learners is relatively large (minimum age of 15 years – no upper limit for maximum age) and they have a rich life experience. This is why the level of oral discussion is wide and varied in the lessons. Further, critical life skills have been included in the lessons as well.There are numerous such examples in the primer, like-





ULLAS – Part 4, Chapter 13, Page 303





ULLAS – Part 4, Chapter 13, Page 303

There is a story titled '*मोबाइल की दुनिया*' in Lesson 13 '*डिजिटल साक्षरता*'. Different kinds of information has been given regarding mobile phones in this lesson and the concept of safe use of mobile has been included in the related questions-

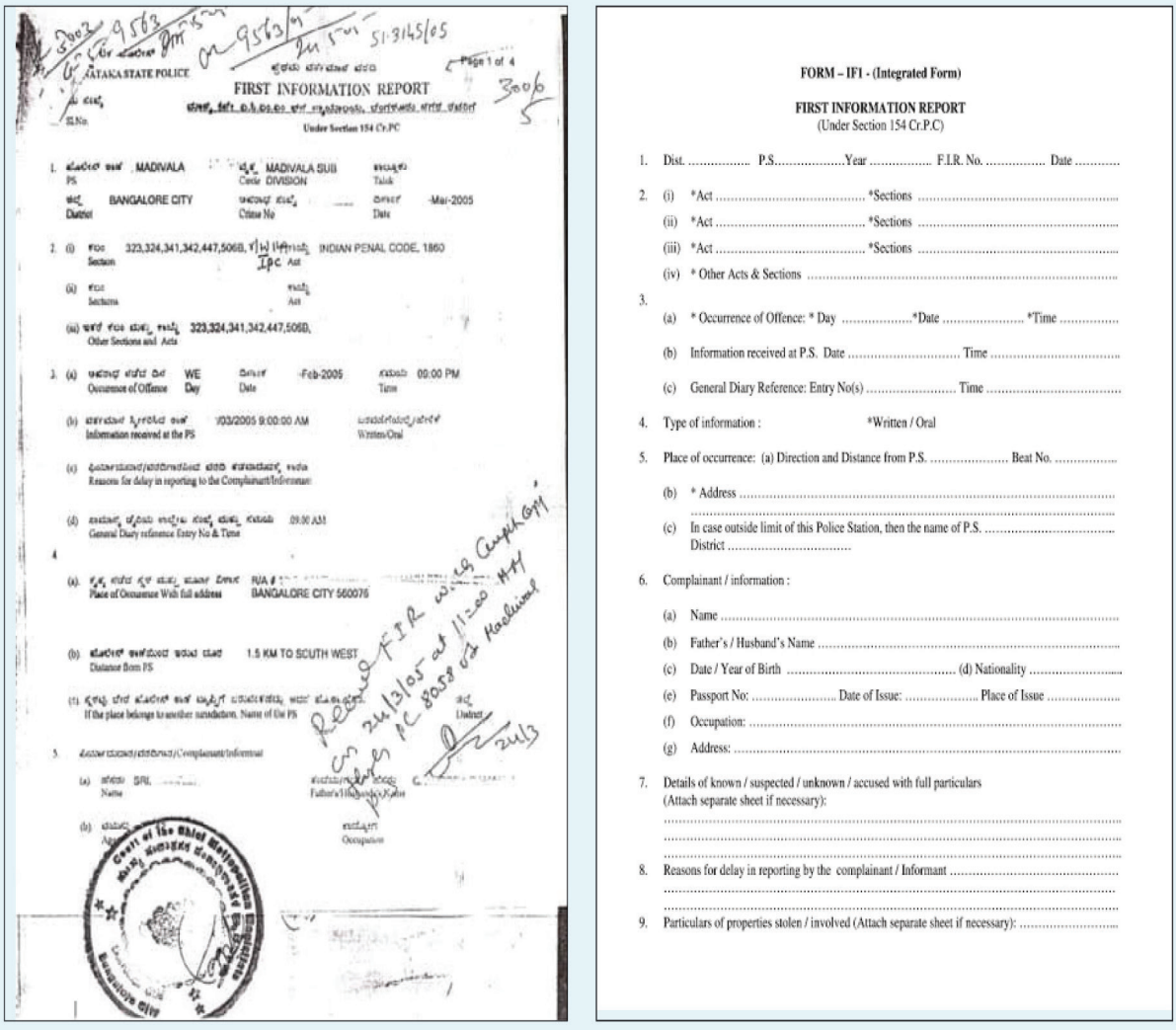
- Talk about an experience where using a mobile proved helpful in a work situation.
- For what kinds of work do you use your mobile phone?
- What are the things that you keep in mind while using a mobile phone?

■ प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ़.आई.आर.)

पुलिस एफ़.आई.आर. दर्ज होने के बाद ही किसी अपराध की पड़ताल शुरू कर सकती है। कानून में कहा गया है कि अपराध की सूचना मिलने पर नज़दीकी थाने में फ़ौरन एफ़.आई.आर. दर्ज करनी चाहिए। पुलिस को यह सूचना मौखिक, लिखित या किसी भी रूप में मिल सकती है। एफ़.आई.आर. में आमतौर पर वारदात की तारीख, समय और स्थान को दर्ज किया जाता है। उसमें वारदात के मूल तथ्यों और घटनाओं का विवरण भी लिखा जाता है। अगर अपराधियों का पता हो तो उनके नाम तथा गवाहों के नाम को भी शामिल किया जाता है। एफ़.आई.आर. में शिकायत दर्ज कराने वाले का नाम और पता लिखा होता है। एफ़.आई.आर. के लिए पुलिस के पास एक खास फॉर्म होता है। इस पर शिकायत करने वाले के दस्तखत कराए जाते हैं। शिकायत करने वाले को पुलिस से एफ़. आई.आर. की एक नकल कॉपी मुफ़्त पाने का कानूनी अधिकार होता है।

(सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन-III, एन.सी.ई.आर.टी.)

ULLAS – Part 2, Chapter 7 , Page 185



KARNATAKA STATE POLICE

FIRST INFORMATION REPORT

Under Section 154 Cr.PC

1. PS: MADIVALA; Circle: MADIVALA SUB DIVISION; Taluk
District: BANGALORE CITY; Crime No; Date: Mar-2005

2. (i) Section: 323,324,341,342,447,506B, IPC Act: INDIAN PENAL CODE, 1860
(ii) Sections; Act
(iii) Other Sections and Acts: 323,324,341,342,447,506B,

3. (a) Occurrence of Offense: WE Day; Date: Feb-2005; Time: 09:00 PM
(b) Information received at the PS: /03/2005 9:00:00 AM; Written/Oral
(c) Reasons for delay in reporting to the Complainant/Informant:
(d) General Diary reference Entry No & Time: 09:30 AM

4. (a) Place of Occurrence With full address: N/A & BANGALORE CITY 560076
(b) Distance from PS: 1.5 KM TO SCUTH WEST
(c) If the place belongs to another satisdiction, Name of the PS; District

5. (a) Name: SRI.; Father's/Husband's Name
(b) Occupation

Please FIR with Complaint Copy
24/3/05 at 11:20 AM
PC 8058 of Hadkinal

Court of the Chief Metropolitan Magistrate, Bangalore

FORM – IF1 - (Integrated Form)

FIRST INFORMATION REPORT

(Under Section 154 Cr.P.C)

1. Dist. ..... P.S. ..... Year ..... F.I.R. No. ..... Date .....

2. (i) *Act ..... *Sections .....
(ii) *Act ..... *Sections .....
(iii) *Act ..... *Sections .....
(iv) * Other Acts & Sections .....

3.
(a) * Occurrence of Offence: * Day .....*Date ..... *Time .....
(b) Information received at P.S. Date ..... Time .....
(c) General Diary Reference: Entry No(s) ..... Time .....

4. Type of information : *Written / Oral

5. Place of occurrence: (a) Direction and Distance from P.S. ..... Beat No. .....
(b) * Address .....
.....
(c) In case outside limit of this Police Station, then the name of P.S. .....
District .....

6. Complainant / information :
(a) Name .....
(b) Father's / Husband's Name .....
(c) Date / Year of Birth ..... (d) Nationality .....
(e) Passport No: ..... Date of Issue: ..... Place of Issue .....
(f) Occupation: .....
(g) Address: .....

7. Details of known / suspected / unknown / accused with full particulars
(Attach separate sheet if necessary):
.....
.....
.....

8. Reasons for delay in reporting by the complainant / Informant .....
.....
.....

9. Particulars of properties stolen / involved (Attach separate sheet if necessary): .....

ULLAS – Part 2, Chapter 7 , Page 185

Similarly, in Lesson 7 '*कानूनी जानकारी*', important information has been given about First Informatino Report (F.I.R) and the experience and reflections of the learners have been invited regrading the same, Such as-

- Have you ever lodged and F.I.R?
- Which is the nearest police station to your house?
- On which number do you call to get police assistance when needed?
- What is the number for woman safetly?

Following questions from Lesson 8 *'मुसीबतें कैसी-कैसी'* can also be considered-

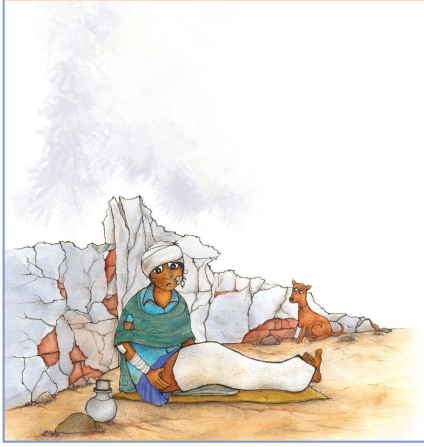
- Would your house be in danger if your area experiences an earthquake? If yes, where would you live then?
- Have you ever been faced with natural disasters like drought, earthquake, flood etc.? If yes, share your experiences.
- Do you think human beings are directly responsible for the natural calamities? Talk about one such calamity with your friends and write down the key points.

मिलकर पढ़िए

जब धरती काँपी

मेरा नाम जस्मा है। मैं गुजरात के कच्छ इलाके में रहती हूँ। बात तब की है जब मैं ग्यारह साल की थी। अचानक ज़मीन तेज़ी से हिलने लगी। सब लोग घबरा गए। कुछ ही समय में हमारा पूरा गाँव मलबे का ढेर बन गया। हमारे कपड़े, बर्तन, खाना— सब कुछ मलबे में दब गया।





बहुत सारे लोगों को चोटें भी लगीं। डॉक्टरों की टीम ने गाँव वालों की मदद की। उनकी मदद से लोग ठीक होने लगे।

ठंड का महीना था। इतनी ठंड में घर के बाहर रहना कठिन हो रहा था। ठंड और डर के मारे नींद नहीं आती थी। यही डर रहता कि कहीं फिर से भूकंप आ गया तो?

Keeping the socio-cultural perspective of the learners in mind along with contextualizing the subject matter of the primer also suggests that even though we are including the themes like health, travel, disaster management, etc., their subject mattermay vary as per the context of the states. For instance, travel in the context of Rajasthan will have references to camels, camel carts, deserts, etc., whereas in the context of Kerala, it will refer to rivers, boats, sailors, paddles, etc. whereas metro train can also be referred to in case ofcities such as Delhi, Bangalore, and Kolkata. Similarly, when talking about disaster management, there may be a difference in the contentof the states which are prone to earthquakes or floods than those which aren't. Further,there can be differences in the activities of the members of the family when talking about the theme of family. In the context of South Indian states, there might be a mention of making rangoli at the door of the house early in the morning with rice flour or turmeric etc. Under food and drink, there can be a difference between Kahwa (Kashmir), Makke ki Roti and Saag (Punjab), Litti-Chokha (Bihar) etc. This distinction can also be seen in clothes – Phiran (Kashmir), Salwar-Kurta (Punjab), Men's Dhoti (South India), Mekhla (Northeast India) etc.

- **Integrated Literacy and Numeracy**- A distinctive characteristic of the ULLAS Primer is that all of its four volumes contain literacy and numeracy in an integrated manner as we acquire mathematics through language, and the behaviour and use of language can also be influenced by mathematical notions. When purchasing rations from a ration shop, for instance, we read the names of flour, pulses, rice, soap, etc., ask the shopkeeper for the price or read the price list, and then, determine the amount to be paid to the shopkeeper according to the price and quantity of the goods purchased. If the goods cost Rs. 1570 and we give the shopkeeper a 2000 rupee note, the money we get back from the shopkeeper is also to be accounted for.The bill has to be read to see whether the shopkeeper has calculated correctly or not and has returned Rs 430. Mathematical accuracy and correct language are intertwined in this process. Mathematics in Language and Language in Mathematics!

- The process of learning Hindi as well as numeracy goes hand-in-hand in the primer. Keeping the context of the subject matter of a particular lesson at the centre, Hindi language and numeracy have been put simultaneously.

For instance, In Lesson 6 '*मतदान*', in the exercises related to language, important information related to voting has been given. Posters depicting the importance of vote have been discussed. The learners have been given this opportunity so that they read the information on their voter ID card carefully and talk about it, while simultaneously

giving their feedback/ comments after a thorough critical analysis-

- Why is it important to vote?
- What is democracy?
- How often do you vote?
- What do you consider before casting the vote and why?

प्रश्न 6. अपने वोटर कार्ड को देखकर उसमें दी गई जानकारी की सूची बनाइए–

क्र.सं.	जानकारी
1.	मतदाता का नाम
2.	
3.	लिंग
4.	
5.	
6.	
7.	
8.	

मतदाता पहचान पत्र भारत के सभी नागरिकों जिनकी उम्र 18 या 18 से अधिक है, उनके लिए जारी किया जाता है। मतदाता पहचान पत्र भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी किया जाता है।

चर्चा कीजिए—

- वोट देना क्यों ज़रूरी है?
- लोकतंत्र किसे कहते हैं?
- आप कब-कब वोट देते हैं?
- वोट देने से पहले आप क्या-क्या सोचते हैं और क्यों?

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों से मतदान और उससे जुड़ी आवश्यक बातों पर चर्चा करें। वोट के अधिकार विशेष और उसके सही प्रयोग पर बल दें।

ULLAS – Part 2, Chapter 6, Page 166

चुनाव में मतदान के पश्चात् वोटों की गिनती की जाती है जिसे मतगणना कहते हैं। सबसे अधिक वोट मिलने वाले को विजयी घोषित किया जाता है।



एक मतदान से संबंधित सूचना दर्शाई गई है-

लक्ष्मी	–	200 वोट
विजय	–	124 वोट
झुमरी	–	176 वोट
डाले गए कुल वोट	–	500

ऊपर दी गई सूचना को समझकर बताइए-

क. किसे सबसे अधिक वोट मिले हैं? _____

ख. सबसे कम वोट किसे मिले हैं? _____

ग. चुनाव में दूसरे स्थान पर कौन है? _____

घ. चुनाव में कुल कितने उम्मीदवार हैं? _____

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे विभिन्न संदर्भों में तीन अंकों में तुलना कर सकें तथा जोड़-घटाव करने के विविध तरीके खोजें और साथ ही दी गई जानकारी के आधार पर निर्णय ले सकें।

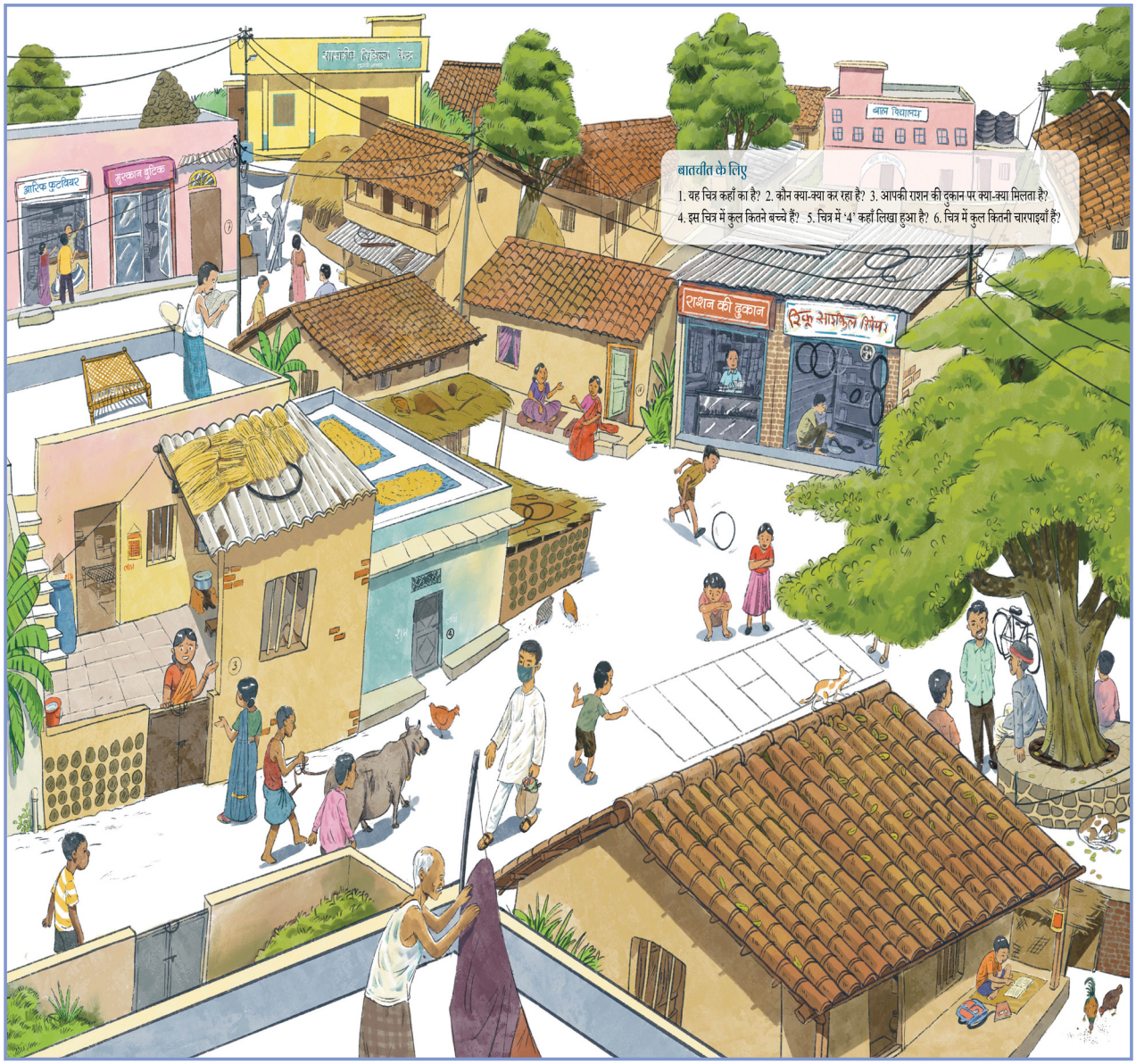
ULLAS – Part 2, Chapter 6, Page 169

After this, a data handling exercise has been given in which the following questions have been asked by depicting information related to voting-

- Who has got the highest votes?
- Who has got the lowest votes?
- Who is at the second position in the polls?
- How many candidates are there in the election?

This is how language and math related exercises are linked in the same context.

- **Poster–like Pictures-** Most of the chapters in the primer begin with a large poster-like picture. A discussion on the poster-like pictures will help the learners to relate to that theme cognitively. The rich experience of the learners, their opinions, feedback, comments etc., will also get respect and space through such a discussion. Just like we find something written on the walls, hoardings etc., in our surroundings,the learners will find something written everywhere in these pictures.These words and sentences can also be discussedwhile talking about the pictures. This interaction will prove helpful in enhancing the reading and writing skills of the learners.



ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 2-3

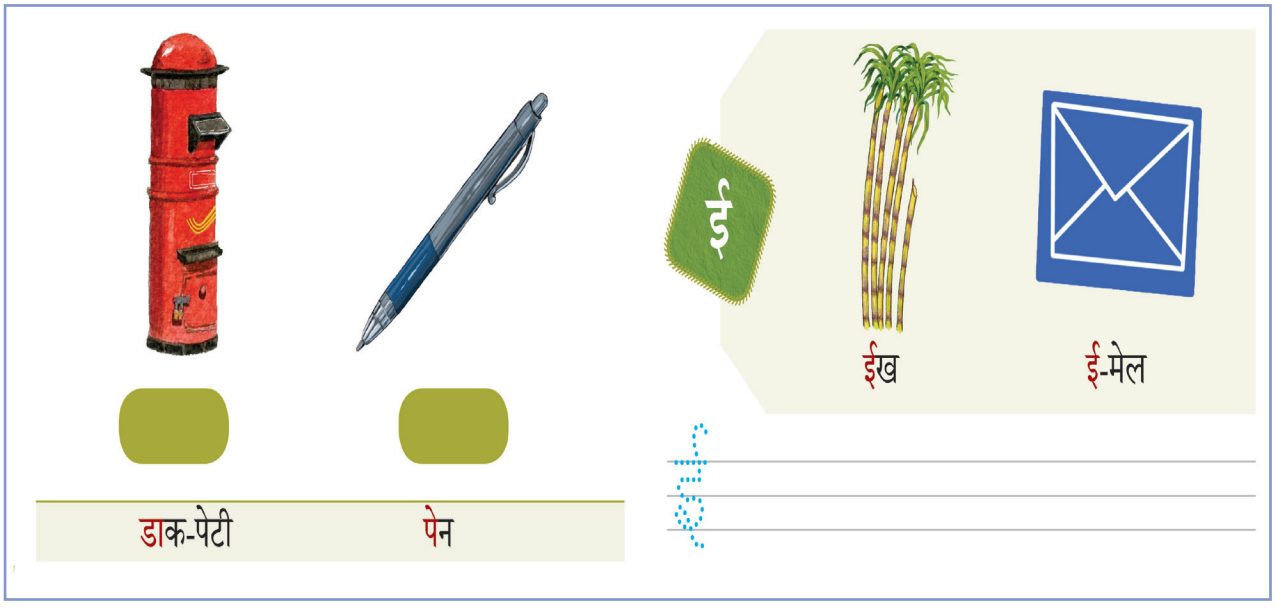


ULLAS – Part 1, Chapter 3, Page 54-55

- **Titles of Activities**- Each activity has been given a title in the primer. This title is in a slightly larger font and a different colour so that it is clearly recognised. This will help the reader know what to do in that activity. For instance, 'Read by guessing with the help of the picture', 'read and write' etc.

- As far as possible, easy-to-understand language has been used in the primer so that both the volunteers and the learners can use it effortlessly.
- The content in the primer is presented in a size that is sufficiently large to prevent the learners from straining their eyes since the small print makes it difficult for the learners to read.
- The needs and convenience of the users should be kept in mind while making the primer in the future as well.
- Efforts have been made to make primer attractive with colours, pictures, and interesting content so that learners take an interest in reading and writing and the process of learning to read and write becomes exciting and enjoyable for them.





ULLAS – Part 1, Chapter 2, Page 28-29

- The letters or alphabets of Hindi language are not presented in alphabetical order in the primer. The primary reason for this is that we communicate using the two fundamental abilities of every language (hearing and speaking), and the words we use in conversation are not alphabetical, such as when a mother and a child are communicating, the mother converses properly with the child-

My daughter got up very early today.

Today all of us willgo out together.

Go and get your grandmother.

I will come back early from work in the evening and then I will play with you, etc.

In the same way, elders also communicate in their respective contexts keeping their needs at the centre, and the whole thing is conveyed meaningfully. Nowhere in the conversation are the letters in alphabetic order. That is why, according to the context around which the topic is being discussed, the order of letters and quantities has been determined according to the sentences, the words used in those sentences and the letters/diacritics in those words in the primer as well.

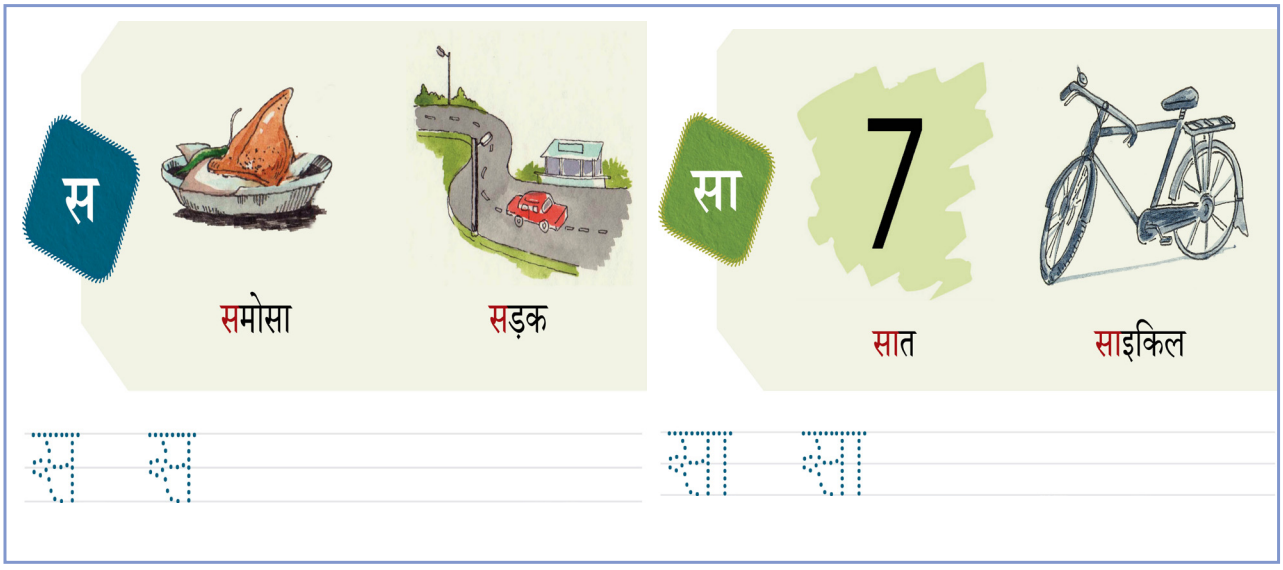


ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 8-9

- Only the letters/characters of those words are taken which are used in the lesson's content or in the picture given in the lesson. The first lesson of the primer is centred on the theme 'Family and Neighbourhood' and the kind of conversation that is possible around the detailed picture given in it, the words and letters in the words अ, आ,न,प,स, र, व have been given a place in this lesson.The focus is on words and letters that come easily and naturally to the subject matter of the lesson.



ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 7



ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 10

- The letters and the diacritics of the vowels of Hindi language have been kept together. The first chapter of the primer makes an effort to teach 'आ' and its diacritical marks, while the second lesson, "बातचीत," makes an effort to teach ' इ, ई (ब, त, म, ख, ट, च)' and its diacritical marks. For instance, the words like 'man, mango, saw, river, boat, road, seven'have been given in the first lesson and 'tamarind, e-mail, bill, twenty, butterfly, three,' etc., have been given in the second. It is

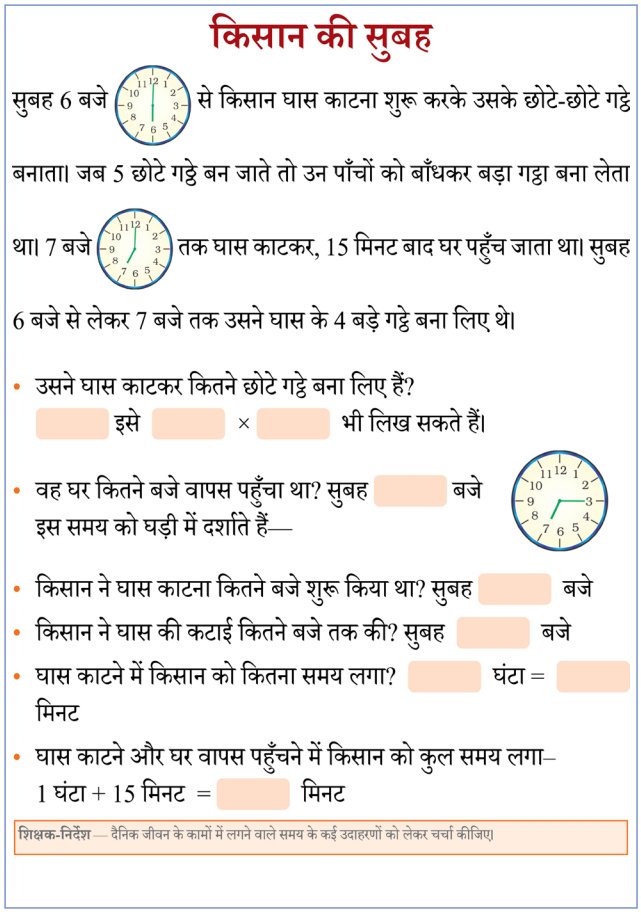


ULLAS – Part 1, Chapter 2, Page 30-31

important to keep in mind that vowels are employed both in their natural form and as a symbol, or a diacritic in languages like Hindi. However, it is possible that many regional languages utilise vowels solely in their original form, as is the case in English language. As an example, consider the English words pin/ college/car. Vowels (a, e, i, o, u) are written in their original form when English words are written in Roman script, while they are written as diacritics when

Hindi words are written in Devanagari script. We need to take special care of this key point and prepare the primer accordingly in regional languages.Similarly in Devanagari script, *Shirorekha* (line) is used above the letters/words, which is an important in the writing of Hindi language.But it is possible that this line is not used in the script of some languages, such as the script of language like Tamil, Kannada, Oriya, Malayalam etc. It is important to keep this point in mind with reference to the use of writing skills in the primer.

- The mathematical concepts in the primer have not been presented separtely in different chapters, instead, the concepts that are interconnected have been print together. For example lesson 11 '*मनोरंजन* ' contains information and exercises on different types of shapes (circle, square and triangle), designs, and patterns with the help of different illustrations. Similarly in lesson 9 '*समय-समय की बात* ', many exercises for reading the clock have been given.



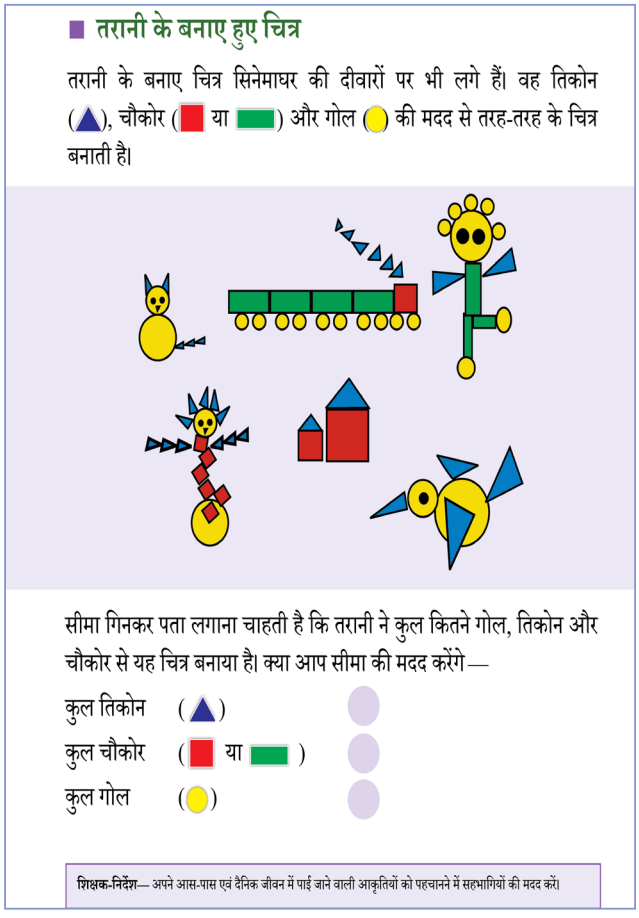
किसान की सुबह

सुबह 6 बजे से किसान घास काटना शुरू करके उसके छोटे-छोटे गट्ठे बनाता। जब 5 छोटे गट्ठे बन जाते तो उन पाँचों को बाँधकर बड़ा गट्ठा बना लेता था। 7 बजे तक घास काटकर, 15 मिनट बाद घर पहुँच जाता था। सुबह 6 बजे से लेकर 7 बजे तक उसने घास के 4 बड़े गट्ठे बना लिए थे।

- उसने घास काटकर कितने छोटे गट्ठे बना लिए हैं?
  _____ इसे _____ × _____ भी लिख सकते हैं।
- वह घर कितने बजे वापस पहुँचा था? सुबह _____ बजे
  इस समय को घड़ी में दर्शाते हैं—
- किसान ने घास काटना कितने बजे शुरू किया था? सुबह _____ बजे
- किसान ने घास की कटाई कितने बजे तक की? सुबह _____ बजे
- घास काटने में किसान को कितना समय लगा? _____ घंटा = _____ मिनट
- घास काटने और घर वापस पहुँचने में किसान को कुल समय लगा–
  1 घंटा + 15 मिनट = _____ मिनट

शिक्षक-निर्देश— दैनिक जीवन के कामों में लगने वाले समय के कई उदाहरणों को लेकर चर्चा कीजिए।

ULLAS – Part 3, Chapter 9, Page 226



तरानी के बनाए हुए चित्र

तरानी के बनाए चित्र सिनेमाघर की दीवारों पर भी लगे हैं। वह तिकोन (▲), चौकोर (■ या ▬) और गोल (●) की मदद से तरह-तरह के चित्र बनाती है।

सीमा गिनकर पता लगाना चाहती है कि तरानी ने कुल कितने गोल, तिकोन और चौकोर से यह चित्र बनाया है। क्या आप सीमा की मदद करेंगे—

कुल तिकोन (▲) ○

कुल चौकोर (■ या ▬) ○

कुल गोल (●) ○

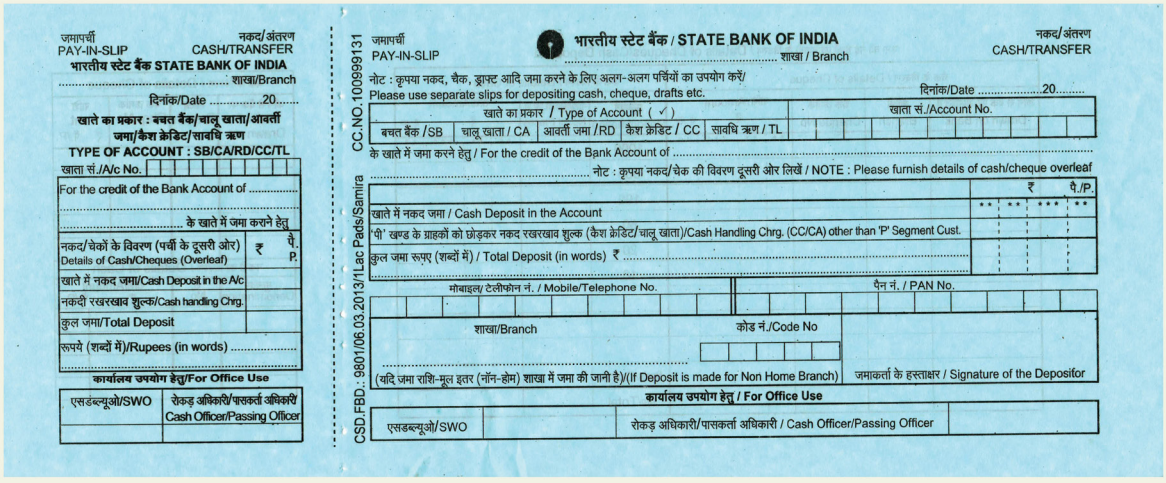
शिक्षक-निर्देश— अपने आस-पास एवं दैनिक जीवन में पाई जाने वाली आकृतियों को पहचानने में सहभागियों की मदद करें।

ULLAS – Part 4 Chapter 11, Page 259

- Topics or themes pertaining to daily life have been included for the teaching-learning of the mathematical concepts like - sales-purchase, bank, taxes etc. For Example, in the lesson - 12 "*वित्तीय साक्षरता*", deposit and withdrawal of money has been taught with the help of imaginary sitiations.

■ जॉन को बैंक में ₹1700/- जमा करने हैं। पैसे जमा करने की पर्ची भरने में जॉन की मदद कीजिए

पैसे जमा करने की पर्ची



जमापर्ची PAY-IN-SLIP नकद/अंतरण CASH/TRANSFER

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

..... शाखा/Branch

दिनांक/Date .....20.....

खाते का प्रकार : बचत बैंक/चालू खाता/आवर्ती जमा/कैश क्रेडिट/सावधि ऋण

TYPE OF ACCOUNT : SB/CA/RD/CC/TL

खाता सं./A/c No.

For the credit of the Bank Account of .....

..... के खाते में जमा करने हेतु

नकद/चेकों के विवरण (पर्ची के दूसरी ओर) Details of Cash/Cheques (Overleaf) ₹ पै. P.

खाते में नकद जमा/Cash Deposit in the A/c

नकदी रखरखाव शुल्क/Cash handling Chrg.

कुल जमा/Total Deposit

रूपये (शब्दों में)/Rupees (in words) .....

कार्यालय उपयोग हेतु/For Office Use

एसडब्ल्यूओ/SWO	रोकड़ अधिकारी/पासकर्ता अधिकारी/ Cash Officer/Passing Officer

CC.NO.100999131

जमापर्ची PAY-IN-SLIP भारतीय स्टेट बैंक / STATE BANK OF INDIA ..... शाखा / Branch नकद/अंतरण CASH/TRANSFER

नोट : कृपया नकद, चैक, ड्राफ्ट आदि जमा करने के लिए अलग-अलग पर्चियों का उपयोग करें/ Please use separate slips for depositing cash, cheque, drafts etc.

दिनांक/Date .....20.....

खाते का प्रकार / Type of Account (✓)						खाता सं./Account No.
बचत बैंक /SB	चालू खाता / CA	आवर्ती जमा /RD	कैश क्रेडिट / CC	सावधि ऋण / TL		

के खाते में जमा करने हेतु / For the credit of the Bank Account of .....

..... नोट : कृपया नकद/ चेक की विवरण दूसरी ओर लिखें / NOTE : Please furnish details of cash/cheque overleaf

	₹	पै./P.
खाते में नकद जमा / Cash Deposit in the Account	**	**
'पी' खण्ड के ग्राहकों को छोड़कर नकद रखरखाव शुल्क (कैश क्रेडिट/चालू खाता)/Cash Handling Chrg. (CC/CA) other than 'P' Segment Cust.	***	**
कुल जमा रूपए (शब्दों में) / Total Deposit (in words) ₹		

मोबाइल/ टेलीफोन नं. / Mobile/Telephone No. | पैन नं. / PAN No.

शाखा/Branch | कोड नं./Code No

(यदि जमा राशि-मूल इतर (नॉन-होम) शाखा में जमा की जानी है)/(If Deposit is made for Non Home Branch) | जमाकर्ता के हस्ताक्षर / Signature of the Depositor

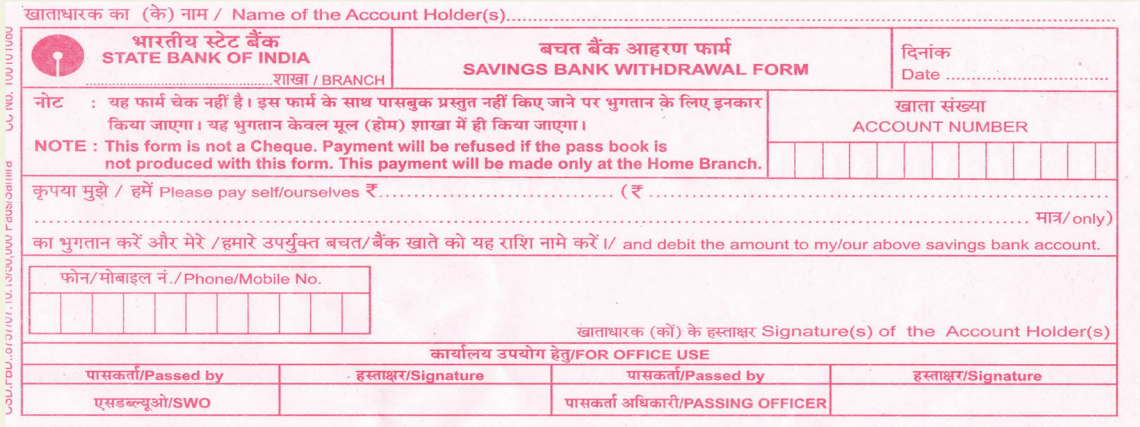
कार्यालय उपयोग हेतु / For Office Use

एसडब्ल्यूओ/SWO		रोकड़ अधिकारी/पासकर्ता अधिकारी / Cash Officer/Passing Officer	

CSD.FBD.: 9801/06.03.2013/1Lac Pads/Samira

■ लाजू को बैंक से ₹2000 निकालने हैं। पैसे निकालने की पर्ची भरने में लाजू की मदद कीजिए

पैसे निकालने की पर्ची



खाताधारक का (के) नाम / Name of the Account Holder(s).....

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA .....शाखा / BRANCH

बचत बैंक आहरण फार्म SAVINGS BANK WITHDRAWAL FORM

दिनांक Date .....

नोट : यह फार्म चेक नहीं है। इस फार्म के साथ पासबुक प्रस्तुत नहीं किए जाने पर भुगतान के लिए इनकार किया जाएगा। यह भुगतान केवल मूल (होम) शाखा में ही किया जाएगा।

NOTE : This form is not a Cheque. Payment will be refused if the pass book is not produced with this form. This payment will be made only at the Home Branch.

खाता संख्या ACCOUNT NUMBER

कृपया मुझे / हमें Please pay self/ourselves ₹..... (₹ .....

..... मात्र/ only)

का भुगतान करें और मेरे /हमारे उपर्युक्त बचत/बैंक खाते को यह राशि नामे करें I/ and debit the amount to my/our above savings bank account.

फोन/मोबाइल नं./Phone/Mobile No.

खाताधारक (कों) के हस्ताक्षर Signature(s) of the Account Holder(s)

कार्यालय उपयोग हेतु/FOR OFFICE USE

पासकर्ता/Passed by	हस्ताक्षर/Signature	पासकर्ता/Passed by	हस्ताक्षर/Signature
एसडब्ल्यूओ/SWO		पासकर्ता अधिकारी/PASSING OFFICER	

CSD.FBD.: 9801/06.03.2013/1Lac Pads/Samira

ULLAS – Part 4, Chapter 12, Page 276

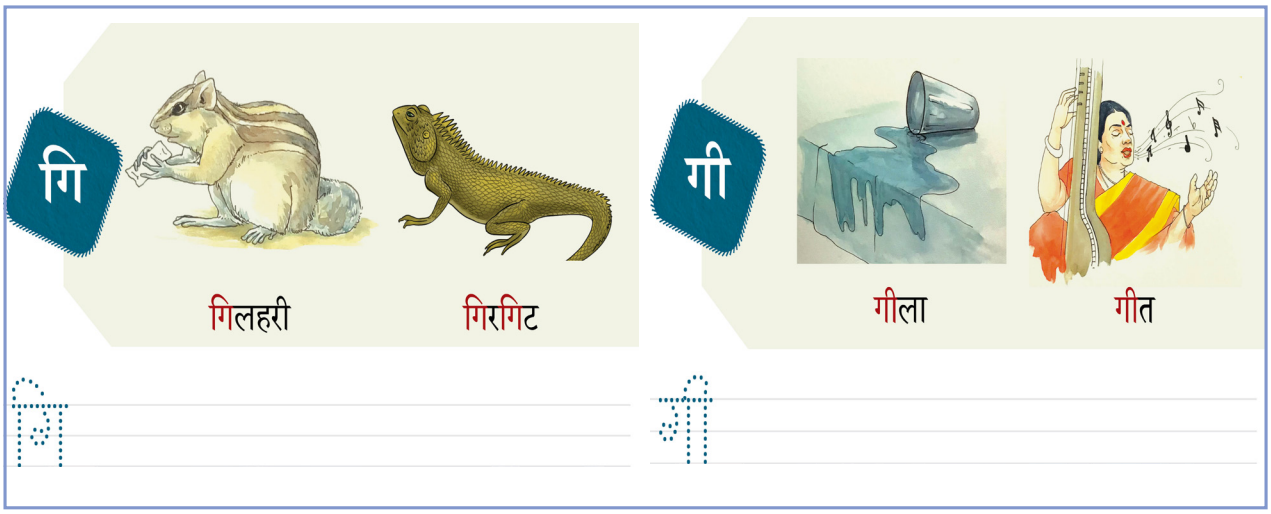
- Words used in daily life, names of objects, counting, names of days, etc. have been used as per the theme to identify the sound and shape of a letter. In these names, those sounds come at the beginning, middle or end of the word.It is important to take such examples so that the learners can see how the occurrence of a letter at different places in a word affects the pronunciation and form of the word. Also, they should not develop a tendency to associate the sound of a letter with a particular word. For example, thinking of just 'goat' with the letter 'G'. That is why words like conversation, newspaper and mobile have been given.
- Learners may have hesitation and difficulty in writing, but they have to be given confidence through various exercises that what we say can be written using certain symbols. There is not much difference between our spoken and written languages.
- Letters are also given in the form of dots to learn how to draw the shape of the letters. This will help the learners to make readable shapes of letters confidently. For example 'स' and 'सा' in Lesson 1.



ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 10



ULLAS – Part 1, Chapter 3, Page 69



ULLAS – Part 1, Chapter 3, Page 70

- It is essential to understand that learners do recognise the objects around themselves;they can say the names of things and speak various words in their daily lives. This indicates that they talk meaningfully about things, people, events, etc., rather than saying a series of diacritical or non-diacritical words in a particular order. This skill can also be used in writing and chances can be given to them to use all the diacritics that they have learnt in previous lessons, in one letter. For instance, in lesson 3, reading and writing the words formed using the letters 'ग', 'गा', 'गि' 'गी' etc. A benefit of this would be that the learners would have the chance to repeat the diacritics previously learnt and would also learn to differentiate between two vowels, such as in words like गधा, गमछा/ गागर, गाय/ गिलहरी, गिरगिट/ गीला, गीत/ गोभी, गोबर/ गौरैया, गौशाला (donkey, towel/ pitcher, cow/ squirrel, chameleon/ wet, song/ cauliflower, cow dung/ sparrow, cowshed). Only by giving adequate amount of such writing related exercises in primer, will the learnersdevelop the writing skills.
- Moving on from writing letters to writing exercises, the learners may also be asked to write a word after identifying a particular letter in that word. In this way reading and writing happen simultaneously. There is a need to give ample examples such as these in the primer.
- For example, in Lesson 1, the exercise 'See, Read and Write' consists of identifying and writing different words starting with the letters अ, आ, व, वा etc. Writing exercises in maths should be done simultaneously, as in Lesson 1, the numbers in a mobile have to be recognised, the numbers given in dots have to be written and then the numbers have to be written in the space provided separately

- At the next level of writing, the exercise of seeing, recognizing and writing the names of the pictures will help the learners in their writing skills. As explained earlier, learners recognize things, people, etc., and can say their full names. It is basis this skill that opportunities and exercises can be given to write the names of the pictures. For example, in lesson 7, in the exercise 'Look at the picture and write the word', the learners have been asked to write the words '17' and 'woman'/'triangle' and 'ravan'.
- At the end of most of the chapters, there is space to write 'my words'. The purpose of this is to let the learners write those wordson their own, with the help of a volunteer teacher, with or without seeing,that they have learnt in that lesson.

■ मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'खान-पान और सेहत' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े 3–4 शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे— 'हैंडपंप' के लिए 'चापाकल' आदि।

ULLAS – Part 2, Chapter 5, Page 142

■ ध्यान से देखिए, पढ़िए और आपस में चर्चा कीजिए







■ मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'मतदान' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े 3–4 शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'वोट देना' के लिए 'वोट पड़ना' आदि।

ULLAS – Part 2, Chapter 6, Page 168

- Writing exercises also need to nurture the creative writing skills of the learners. It would be expected to give the learners the opportunities to write what they think and how they think, in whichever language. For example, in lesson 7, the exercise 'Look at the picture and write a story in the space given', the story

begins from a certain point and the learners have to complete it on their own. Writing a story by looking at the the given picture will help enhance the creative thinking and writing skills.

- • To practice writing skills, there is a need to create sentences from words and take opportunities to express one-self in writing. Exercises for the same have been given in Lesson 9 of ULLAS – Form sentences using the words given - समय, ज़माना, काल, युग, दिन आदि(time, world, period, era, day etc.) / What are the things that you are able to do on time and which are the ones that you aren't? etc.
- • There is a need to provide writing exercises in the primer, in which the learners can get opportunities to use idioms and write sentences by choosing the right words. Opportunities should also be given to write about their experiences so that writing becomes interesting to the learners.For example, the writing exercises of Lesson 1.



■ **कविता में से नीचे दिए अक्षरों से शुरू होने वाले शब्दों को पहचान कर लिखिए—**

आ..... प.....

न..... पा.....

■ **चित्र देखकर खाली स्थान भरिए—**

1. सा.....स

2. वान.....

3. अ.....र

4. व.....

5. .....म

6. .....ल

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों के साथ मिलकर कविता में अक्षरों और शब्दों की पहचान कराएँ। अक्षर और शब्दों को लिखने में सहभागियों की मदद करें। कविता को गाकर पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

ULLAS – Part 1, Chapter 1, Page 23

- Additional reading materials have been given in each lesson for the learners that they will initially read with the help of volunteer teachers. It is expected that they will then be able to read it using guesswork and later on, independently.
- The learner can read the contents given in the primer at any time, with help or even independently. While reading the lessons in sequence, the learners have the liberty to read the lessons or the contenton their own, once they feel confident enough. For example, learners can read the poem '*आओ बादल*' given as an additional reading material in Lesson 1 '*परिवार और पड़ोस*', on their own later on as well; which is based on letters like 'आ, बा, पा, ल, झ, ज, छा' etc. whereas letters like 'ल, झ, ज, छा' have been given in lessons ahead.
- Since the learners have varied life experiences and a broad understanding regarding life i general, the learning material in the primer has been developed keeping in mind not only the letters and their diacritical marks but also the level and interests of the learners. An attempt has been made in the primer to sharpen the critical thinking of the learners, so that they can understand every picture, word, and text that comes in the lesson and contemplate on it, give their opinions and the reasons behind their opinions by relating them with their experiences. This will help learners to understand every situation of their lives better so that they can take appropriate decisions accordingly.
- Today, there are several life skills which might not have been a part of the learners' direct environment until a few years ago. But in ULLAS, such critical life skills are included in the subject matter of the lessons. For instance,

➢ Adhering to the civilized conduct or the code of conduct of internet usage

➢ Digital enablement as per regional environment.

Many such references and examples have been included in the primer through which the life and work of the learner can be more secure and convenient, like-

For eg. In Lesson 6 'Voting', efforts have been made so that the learners understand the true meaning of the words associated with it, such as - voting list, identity card, voting ink, EVM machine, candidates, etc. Voting, although a small word, determines the structure of democracy. It answers questions like-

- ➢ Which candidate should be selected?
- ➢ Is someone misusing our voter indentity card?
- ➢ How will the government be formed?
- ➢ What kind of people will be elected as public representatives?

- Will they take concrete steps in formulating and implementing welfare schemes for the public?
- Will they keep their promises?

Many Such questions are associate with the word "Voteing".It has the biggest contribution in the functioning and maintenance of democracy, which requires critical analysis and contemplation. Sound decision of the voter lays the foundation of an excellent democracy.

■ वोट देने की तैयारी



मतदान के दिन छुट्टी दी जाती है तो आपको काम पर जाने की भागदौड़ नहीं करनी है।

अपना नाम मतदाता सूची में देख लें। यह आप चुनाव अधिकारी की वेबसाइट पर भी देख सकते हैं।





घर से निकलते समय अपना मतदाता पहचान-पत्र (वोटर कार्ड) ले जाना न भूलें। पर मोबाइल, कैमरा आदि न लेकर जाएँ। मतदान केंद्र में ये चीज़ें ले जाने की अनुमति नहीं है।





मतदान केंद्र के बाहर कतार में खड़े हों। आप ज़रूर चाहेंगे कि अगर किसी के लिए कतार में खड़े रहना मुश्किल है तो आप उन्हें वोट पहले डालने दें।

स्रोत— *http://ecisveep.nic.in/gallery/image/1349-general-voters-guide/?context=new*

ULLAS – Part 2, Chapter 6, Page 167

Similar subjects and references have been used throughout the primer in order to develop the life skills of the learners.

- Efforts have been made to increase the oral and written vocabulary of the learners with time through repetition and practice. Understanding how words are used, both in a particular context and out-of-context, is an important reading comprehension skill.However, a primer or a book has its limits because of which a lot of additional content cannot be included But we can give guidelines and a few examples with the help of which the volunteer teachers and learners can carry forward that process. For example, in Lesson 1 'परिवार और पड़ोस ', 'आ' and its diacritic have been used with 5 other letters while in Lesson 2 'बातचीत ', six other letters along with 'इ'/'ई' have been used. In Lesson 2 opportunities have been given to learn the use of new letters (ब, त, म, ख, ट, च) along with the three diacritics - 'बर्फ़ी, बच्चे, बस, बादल, बातचीत, बाल, बिजली, बिल, बिल्ली, बीज, बीस, बीन'/ 'तबला, तकिया, तवा, तारा, ताला, तार, तितली, तिजोरी, तिपाई, तीन, तीली, तीर' (sweet, children, bus, cloud, conversation, hair, lightning, bill, cat, seed, twenty, harp/ table, pillow, griddle, star, lock, wire, butterfly, safe, tripod, three, matchstick, arrow) etc. Discussion on pictures will also play an active role in increasing the vocabulary of the learners. In the primer, an attempt has been made to continuously increase the vocabulary this way, from beginning to end.
- Similarly, ample opportunities for practice have been given to understand the concepts of mathematics. For instance, In Lesson 1, a mobile with numbers written on it has been used to teach counting (numbers and numerals) from 1 to 9. Moving on, in Lesson 2, opportunities have been given to identify the number 5 in five rupee notes with the help ofas repetition and practice.In this lesson, the process of addition and subtraction has been presented on the basis of numbers learnt.

■ **आइए, गिनती पहचानें**

इस नोट में 5 कितनी बार छपा है, निशान लगाइए और लिखिए—



इस नोट में 10 कितनी बार छपा है, निशान लगाइए और लिखिए—

■ **आइए, मिलकर गिनें**



दस नल 10



ग्यारह पलंग 11

शिक्षक-निर्देश— सहभागियों को प्रोत्साहित करें कि वे नोटों के आगे-पीछे वाले हिस्से पर लिखे अंकों को पहचानें और चित्र में दी गई वस्तुओं की संख्या को गिनें। चाहें तो आस-पास मौजूद चीज़ें भी गिन कर लिख सकते हैं।

- Thematic progression has been introduced in the lessons throughout the primer, along with giving a place to all those things necessary to understand, learn and use in a person's life.
- These lessons/themes begin from 'परिवार और पड़ोस' and go up to 'डिजिटल साक्षरता', trying to incorporate the subject matter associated with it. Family is as important as neighbourhood, and cleanliness in family and in the neighbourhood is also important which is essential for our health and fitness. Lesson 12 '*वित्तीय साक्षरता*' includes information of bank, saving, deposit slip, ATM card, etc., as well as the use of 'BHIM App' (BHIM) which is a digital medium. Financial literacy has also been added to '*डिजिटल साक्षरता*' in Lesson 13 so that we can understand monetary transactions through digital means, be cautious about them, and use them in our lives. In this way, all the lessons of the primer are interrelated and are planned in a way that they are complementary to each other.

■ भीम ऐप (BHIM)

भीम ऐप (BHIM) पैसों के लेन-देन का मोबाइल ऐप है। इसे 'ई-पेमेंट' भी कहते हैं। इसमें आप अपने मोबाइल के ज़रिये पैसे का लेन-देन कर सकते हैं।

- दूर बैठे किसी व्यक्ति को पैसे भेज सकते हैं।
- बच्चों के स्कूल की फ़ीस दे सकते हैं।
- बिजली के बिल का भुगतान कर सकते हैं।
- किराने की दुकान वाले को पैसा दे सकते हैं।
- ऋण का भुगतान कर सकते हैं।



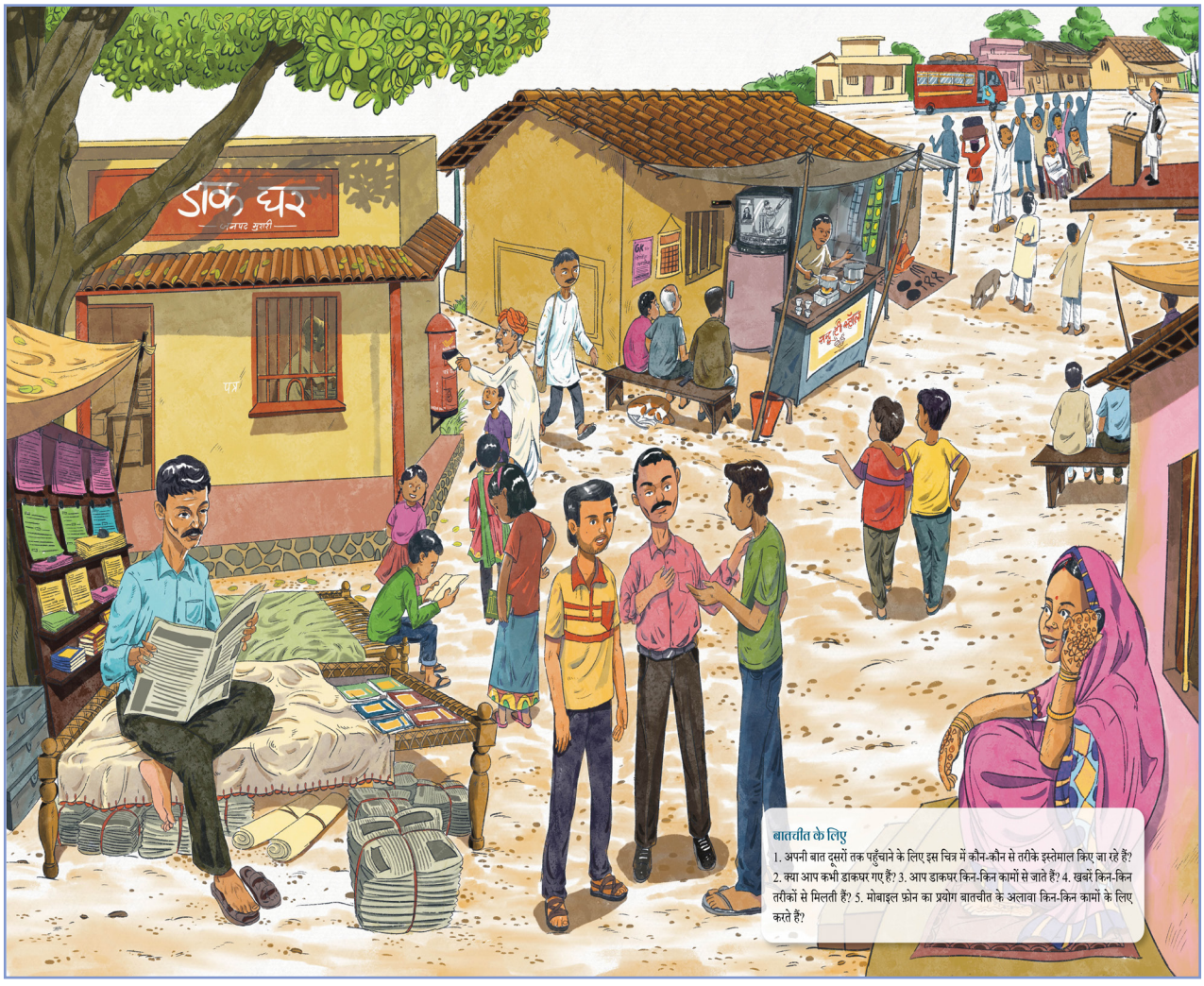
सबसे पहले आपको अपने मोबाइल में भीम ऐप को डाउनलोड और इंस्टॉल करना होगा। इसमें आप हिंदी के साथ-साथ 12 भारतीय भाषाओं में भी काम कर सकते हैं। इस ऐप में आप भारतीय स्टेट बैंक के साथ दूसरे लगभग 30 भारतीय बैंक खातों का इस्तेमाल कर सकते हैं।



(*स्रोत*— https:// https://www.npci.org.in/www.npci.org.in/ https://www.npci.org.in/product-overview/bhim-product-overview)

ULLAS – Part 4, Chapter 12, Page 280

- Pictures have a special importance in the primer. They help in building concepts about specific objects and learning to read by estimation. At the beginning of the lesson, there is a poster-like picture that depicts a situation or an event, for instance, the posters for 'Family and Neighbourhood', 'Our Way of Life' etc. These pictures are related to the learners' environment so they can converse on the same, share their experiences and study the words related to it by guessing them. The start of the process of reading and writing for many learners may just be a picture that they will learn to read over time.
- Points of discussion have been given along with these pictures so that volunteers and learners get some pointers for conversation. However, these points are mere suggestions. The volunteers and learners are free to take the discussion in any direction they want.



ULLAS – Part 1, Chapter 2, Page 24-25



ULLAS – Part 2, Chapter 5, Page 118-119

- An attempt has been made in the primer to use those words for identifying letters whose pictures are available or which can be presented through pictures.
- Some pictures are repeated in the primer. Its aim is to help the learners recognise the names and letters in those pictures. This will help them learn how to read and write.
- Along with pictures, real photos have also been used. They are most useful in depicting a specific process so that the learners can see how it will look like when they use this device or go through a process. This realness will give them clarity and confidence. For example, in Lesson 12, real photos of A.T.M. machine, forms for depositing and withdrawing money in the bank, A.T.M. cards, etc. under Financial Literacy will show them a clear picture of the activities related to the bank.

■ ए.टी.एम. कार्ड की संक्षिप्त जानकारी

ए.टी.एम. बैंक से पैसा निकालने व जमा करने का एक इलेक्ट्रॉनिक कार्ड होता है जिसकी सहायता से कहीं भी, कभी भी नकद पैसे निकाल सकते हैं और बैंक खाते का लेखा-जोखा भी जान सकते हैं। पैसों के लेन-देन के मामले से जुड़ी किसी समस्या के समाधान के लिए केवल बैंक से ही संपर्क करना चाहिए। ए.टी.एम. कार्ड से पैसे निकालने के लिए ए.टी.एम. मशीन का इस्तेमाल किया जाता है।





याद रखें

चैक की वैधता अंकित तिथि से 3 महीने तक मान्य होती है। 'क्रॉस चैक' केवल खाताधारक के खाते में देय होता है।

कभी किसी से साझा न करें

1. ओ.टी.पी.
2. पिन
3. सी.वी.वी.
4. खाता संबंधी जानकारी
5. व्यक्तिगत जानकारी

■ के.वाई.सी. (KYC) क्या होता है?

के.वाई.सी. (KYC) (Know Your Customer) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बैंक किसी व्यक्ति की पहचान और पते की पुष्टि करता है। अब आधार कार्ड से भी के.वाई.सी. कर सकते हैं।

के.वाई.सी. (KYC) के लिए ज़रूरी दस्तावेज़

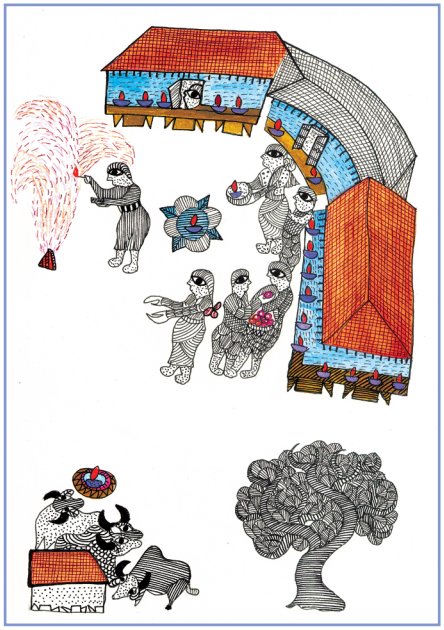
1. पैन कार्ड
2. बिजली का बिल
3. आधार कार्ड
4. आवासीय पता

ULLAS – Part 4, Chapter 12, Page 278

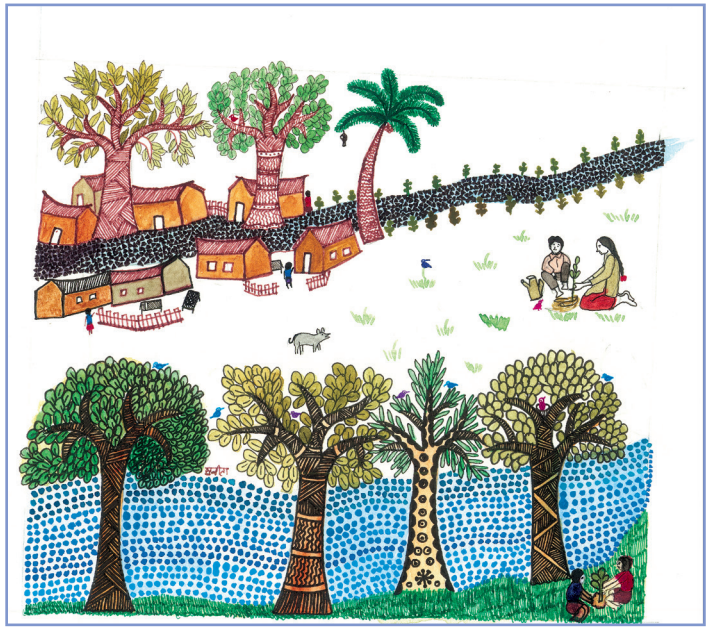
- Folk art has also been respected and given enough room in the images. When the learners will look at folk art associated with their surroundings, it will give them a feeling of pleasant affinity and pride. This experience will motivate them more to learn how to read and write. Folk art images from various regions might encourage them to take forward their own folk art and culture. Additionally, they can take up this type of folk art as their line of work. The cover page of ULLAS features a Madhubani folk art from Bihar, while the texts "Diwali Ke Diye" and "Sukhomajari Gaon" feature Mandana and Gond paintings from Rajasthan and Madhya Pradesh, respectively.While on one hand, these images will aid in establishing a connection with Indian folklore, on the other hand they will also help the learners in conveying empathy, appreciation and beauty.



ULLAS Cover Page



ULLAS – Part 1, Chapter 3, Page 74

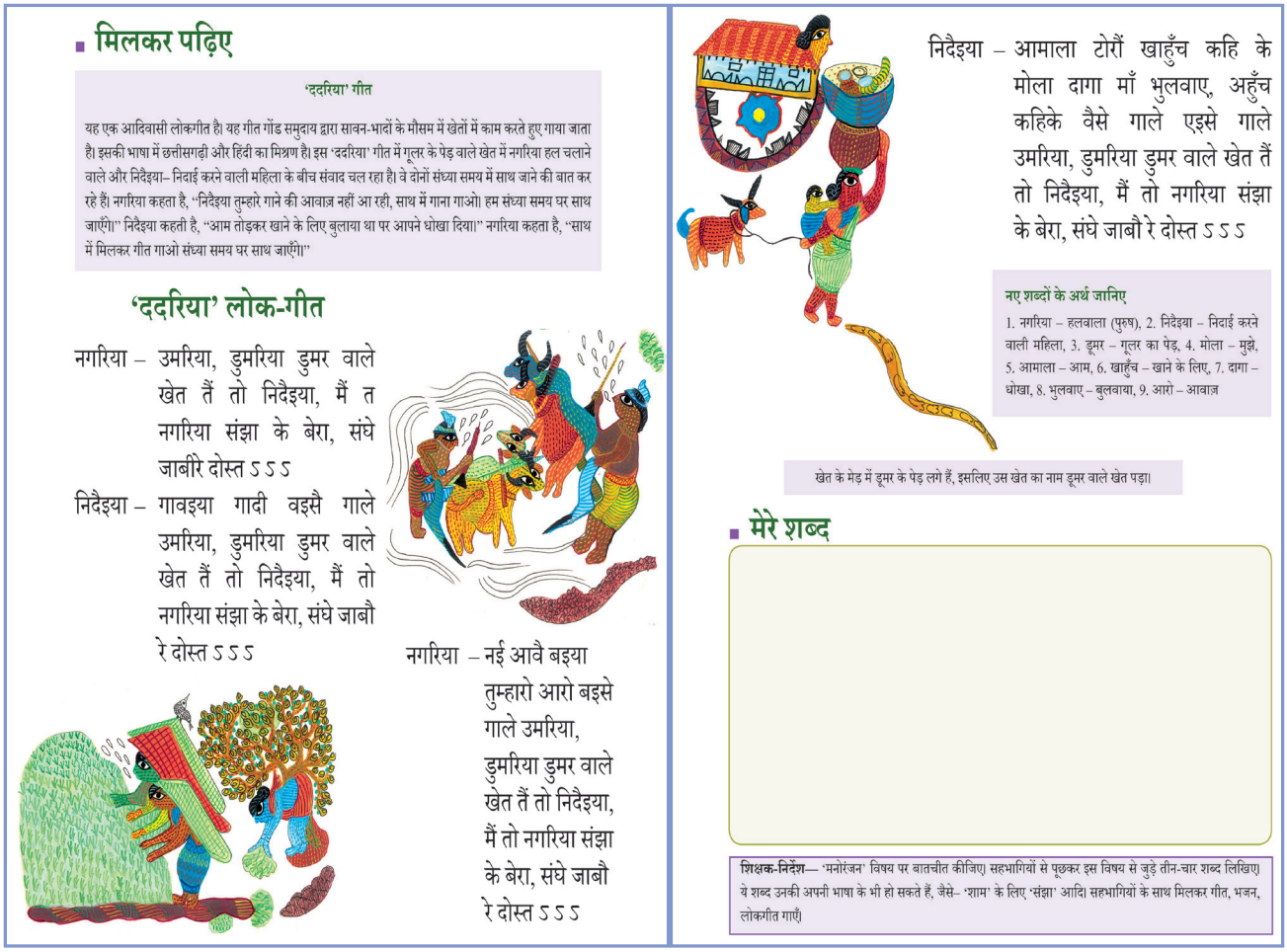


ULLAS – Part 2, Chapter 4, Page 106

- Folk tales and folk songs have also been given a place in the primer. The states can include their respective folk songs and folk tales while developing the primers for themselves. A variety of material related to the folk literature of the states can be used for additional reading. For example, in Rajasthan,the aulungeet that is sung when the daughter leaves her home after getting married – 'Kanwar Bai Ri Olyu Awe O Raj'. Similarly, songs sung in tribal areas can also form part of the primer, such as this Mundari folk song –

Ella re sato sae santa
Ella re biso Nagpur
Tajna kanchigada lingi tana
Caro cuil re bual tana

(Meaning - O brothers of the seven regions / O twenty of Nagpur / Here Tajna-Kanchi rivers are flowing / Karo-koel is rising.)



■ मिलकर पढ़िए

'ददरिया' गीत

यह एक आदिवासी लोकगीत है। यह गीत गोंड समुदाय द्वारा सावन-भादों के मौसम में खेतों में काम करते हुए गाया जाता है। इसकी भाषा में छत्तीसगढ़ी और हिंदी का मिश्रण है। इस 'ददरिया' गीत में गूलर के पेड़ वाले खेत में नगरिया हल चलाने वाले और निदैइया– निदाई करने वाली महिला के बीच संवाद चल रहा है। वे दोनों संध्या समय में साथ जाने की बात कर रहे हैं। नगरिया कहता है, "निदैइया तुम्हारे गाने की आवाज़ नहीं आ रही, साथ में गाना गाओ। हम संध्या समय घर साथ जाएँगे।" निदैइया कहती है, "आम तोड़कर खाने के लिए बुलाया था पर आपने धोखा दिया।" नगरिया कहता है, "साथ में मिलकर गीत गाओ संध्या समय घर साथ जाएँगे।"

'ददरिया' लोक-गीत

नगरिया – उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं त नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबीरे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – गावइया गादी वइसै गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नगरिया – नई आवै बइया तुम्हारो आरो बइसे गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

निदैइया – आमाला टोरौं खाहुँच कहि के मोला दागा माँ भुलवाए, अहुँच कहिके वैसे गाले एइसे गाले उमरिया, डुमरिया डुमर वाले खेत तैं तो निदैइया, मैं तो नगरिया संझा के बेरा, संघे जाबौ रे दोस्त ऽ ऽ ऽ

नए शब्दों के अर्थ जानिए

1. नगरिया – हलवाला (पुरुष), 2. निदैइया – निदाई करने वाली महिला, 3. डूमर – गूलर का पेड़, 4. मोला – मुझे, 5. आमाला – आम, 6. खाहुँच – खाने के लिए, 7. दागा – धोखा, 8. भुलवाए – बुलवाया, 9. आरो – आवाज़

खेत के मेड़ में डूमर के पेड़ लगे हैं, इसलिए उस खेत का नाम डूमर वाले खेत पड़ा।

■ मेरे शब्द

शिक्षक-निर्देश— 'मनोरंजन' विषय पर बातचीत कीजिए। सहभागियों से पूछकर इस विषय से जुड़े तीन-चार शब्द लिखिए। ये शब्द उनकी अपनी भाषा के भी हो सकते हैं, जैसे– 'शाम' के लिए 'संझा' आदि। सहभागियों के साथ मिलकर गीत, भजन, लोकगीत गाएँ।

ULLAS – Part 4, Chapter 11, Page 263-264

- There is a need to pay special attention to the language and oral expression of the learners, because the process of reading and writing can only be carried forward with the help of oral language. Speaking confidently will help the learners in reading, writing and understanding mathematical concepts. Therefore, ample opportunities have been provided for interactions with the learners in the primer.

राजू की माँ

फूलों की माला बनाने में राजू अपनी माँ की सहायता कर रहा था। वह एक-एक करके फूल अपनी माँ को देता गया और संख्या बोलता गया।

10 फूलों की एक माला यानी, हर माला में 10 फूल। राजू फूल देता गया और माला बनती गई। तो आइए, समझें कि कितने फूलों के बाद एक माला तैयार होती है।

50 + 1=51	पाँच दहाई 	+	एक इकाई 	=	**51 इक्यावन**
50 + 2=52	पाँच दहाई 	+	दो इकाई 	=	**52 बावन**
50 + 3=53	पाँच दहाई 	+	तीन इकाई 	=	**53 तिरेपन**
50 + 4=54	पाँच दहाई 	+	चार इकाई 	=	**54 चौवन**

ULLAS – Part 2, Chapter 4, Page 109

■ **विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बच्चों को लड्डू के डिब्बे बाँटे गए। एक डिब्बे में चार लड्डू आ सकते हैं। आइए पता लगाते हैं कि 10 बच्चों को डिब्बे देने हैं तो कितने लड्डू चाहिए?**

1 बच्चे को मिलेंगे  अर्थात् 1 डिब्बा 4 लड्डुओं का
1 बार 4
1 गुणा 4
या 1× 4 = 4 लड्डू

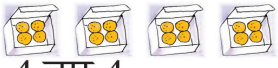
---

2 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 2 डिब्बे 4 लड्डुओं के
4 + 4
2 बार 4
2 गुणा 4
या 2 × 4 = 8 लड्डू

---

3 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 3 डिब्बे 4 लड्डुओं के
4 + 4 + 4
3 बार 4
3 गुणा 4
या 3 × 4 = 12 लड्डू

---

4 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 4 डिब्बे 4 लड्डुओं के
4 + 4 + 4 + 4 = 4 बार 4
या 4 गुणा 4 = 4 × 4 = 16 लड्डू

---

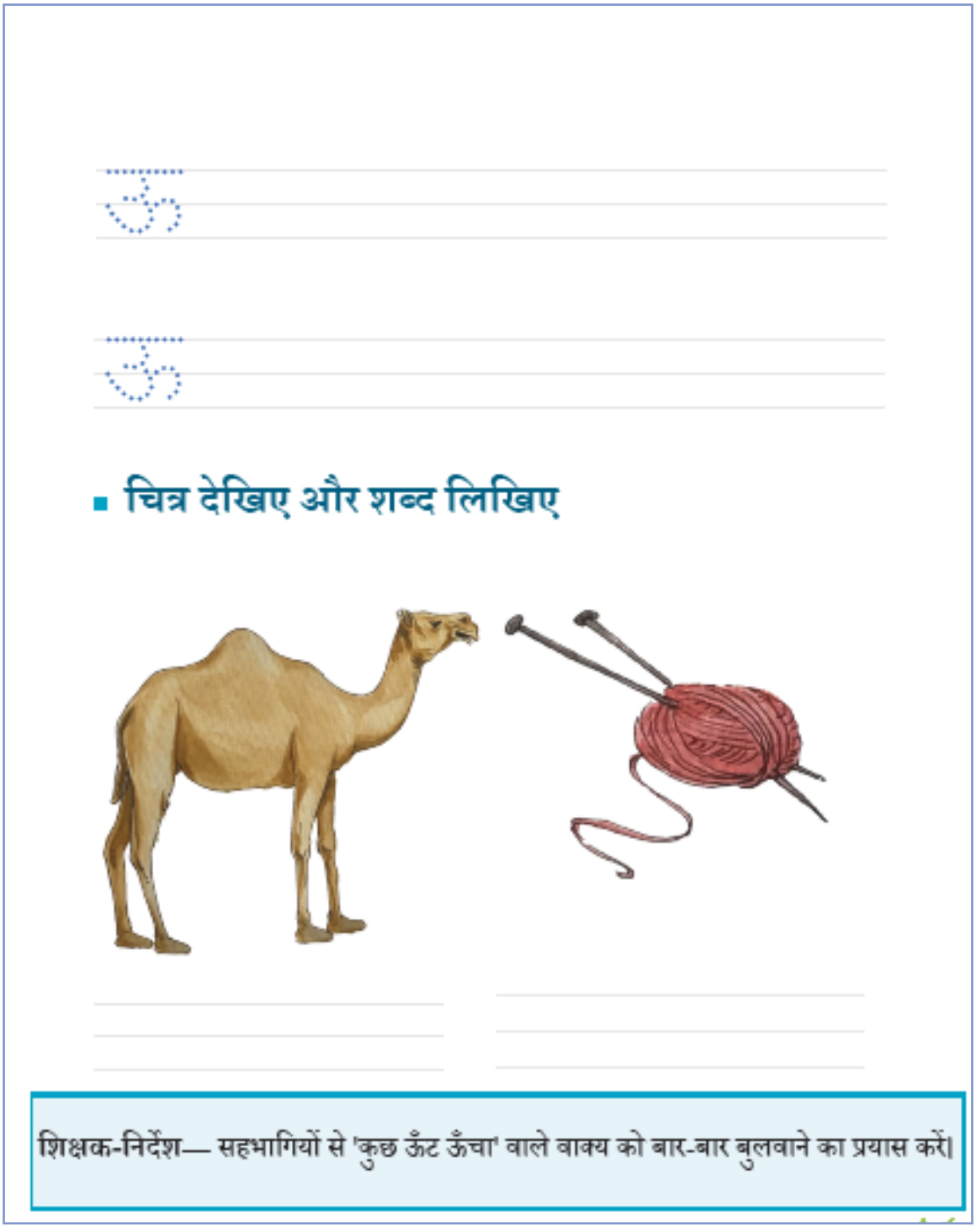
5 बच्चों को मिलेंगे  अर्थात् 5 डिब्बे 4 लड्डुओं के
4 + 4 + 4 + 4 + 4 = 5 बार 4
या 5 गुणा 4 = 5 × 4 = 20 लड्डू

शिक्षक-निर्देश— किसी संख्या को बार-बार जोड़ने की संक्षिप्त प्रक्रिया को गुणा कहते हैं। सहभागियों को विभिन्न संदर्भों (जैसे कुर्सी के पैरों की संख्या) का प्रयोग करके 1 अंकीय संख्याओं के गुणन बनाने और लिखने के लिए प्रेरित करें।

ULLAS – Part 2, Chapter 5, Page 144

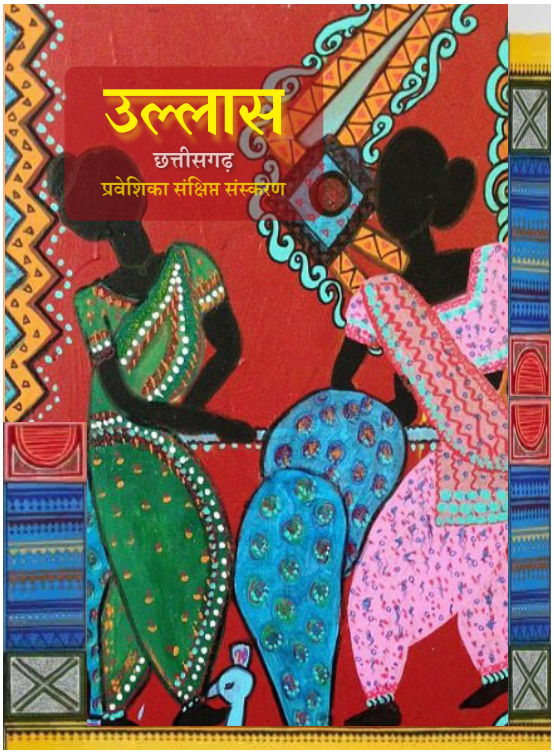
- Complete respect has been given to the multi-lingual characteristics of India. Even though the primer is primarily in Hindi, regional/local languages have been given proper respect. Ample opportunities have been given to the learners to converse and give answers in their own language. This will encourage the learners to speak what is on their mind and they will participate in discussions confidently.

- Subjects related to daily life have been taken to further teach the numberacy, such as –making garlands, saving money, subtraction, counting sweets, shopping, bank, tax related work etc. Real objects available in our surroundings can also be used to understand the concept well.

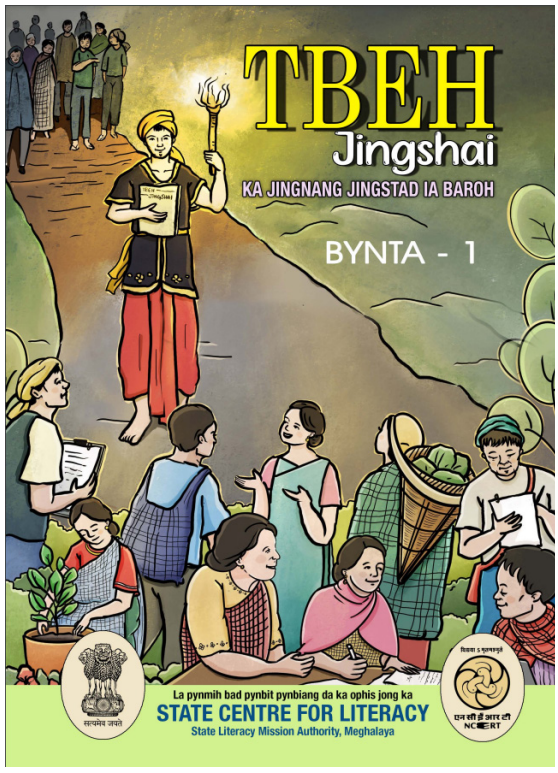


ULLAS – Part 2, Chapter 5, Page 129

- educational instructions have been given in every lesson for the convenience of the volunteers and the learners. These instructions, given in an easy language, will help them understand how to take the lesson forward.
- For the better use of the primer, detailed instructions for its use have also been prepared so that volunteer teachers can use it in the right way and the learners get maximum benefit out of it.
- While developing the primer, it is worth keeping in mind that the teaching and learning of both language of numberacy go hand in hand. It is essential to assimilate references from the daily lives of the learners so that there is no gap between living life and foundational literacy (language and numeracy); also, so that the learners can understand that reading, writing and numeracy is only to help them live their life. This connection between primer's lessons and life will help even more in the acquisition of foundational literacy (language and numeracy).
- Audio-video programs can also be made according to the sequence of lessons included in the primer while creating it.
- One would hope that states will keep these key points in mind while preparing primers and resource materials in their respective regional languages, considering local/ regional surroundings and references. It is not necessary that a single primermeets the needs of all the learners. Therefore, other materials can be designed keeping in mind the level, ability, context and environment of the learners.



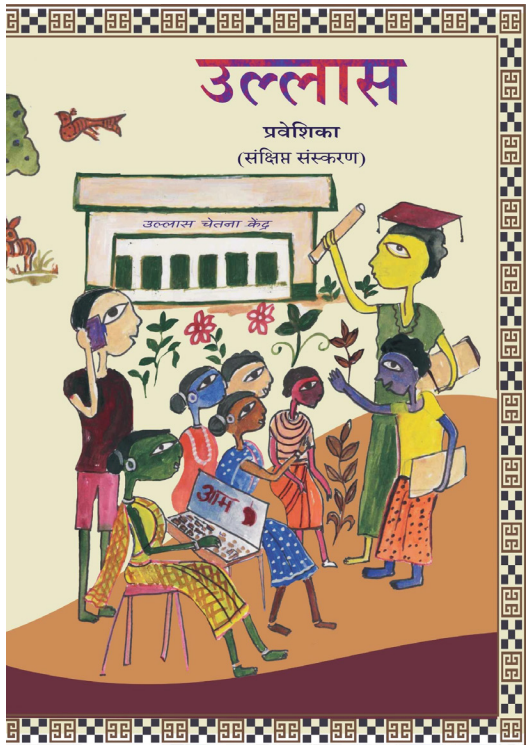
CHHATISGARH (HINDI)



MEGHALAYA (KHASI)



JAMMU AND KASHMIR (KASHMIRI)



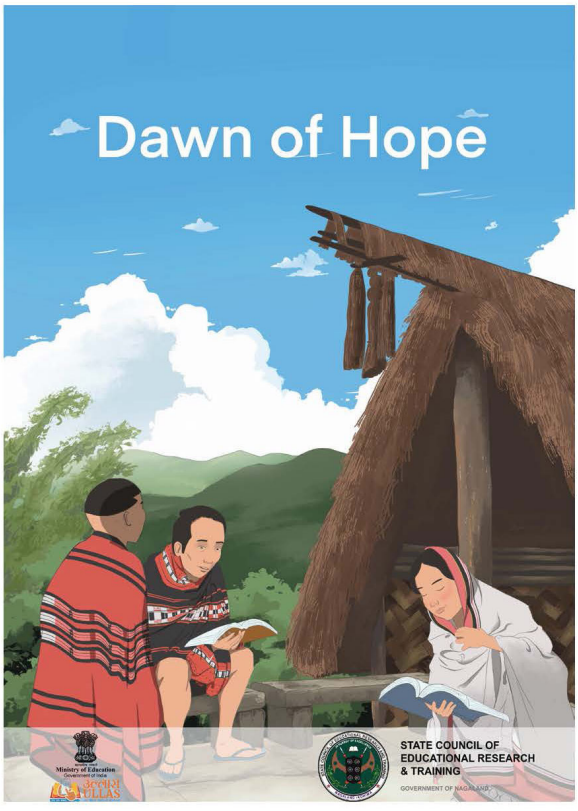
JHARKHAND (HINDI)



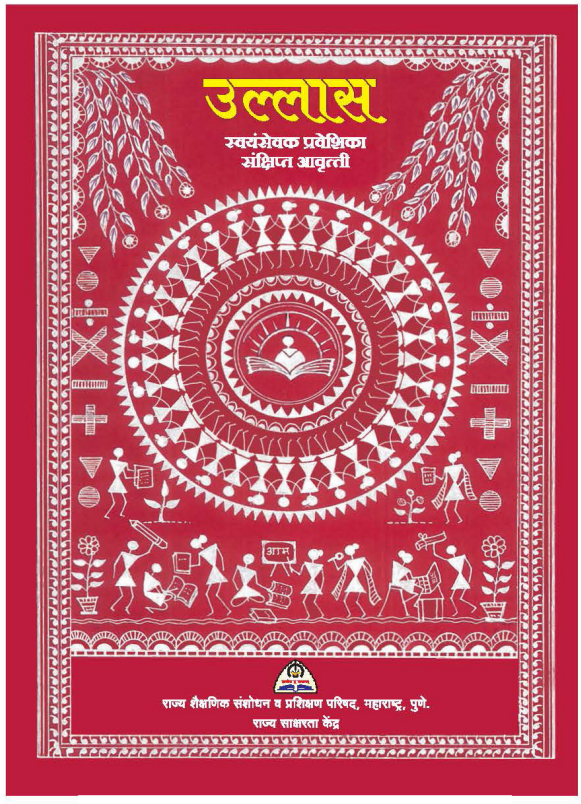
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



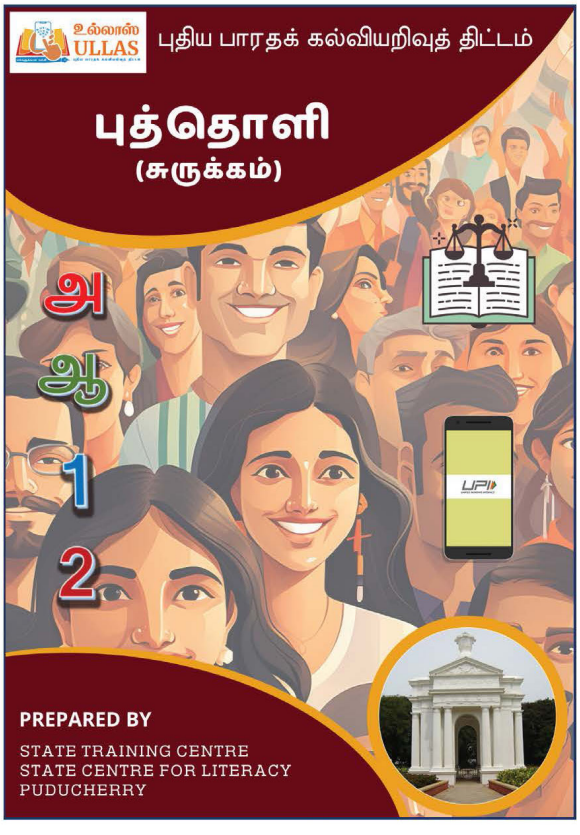
پرائمر کی تشکیل سے متعلق رہنما ہدایات



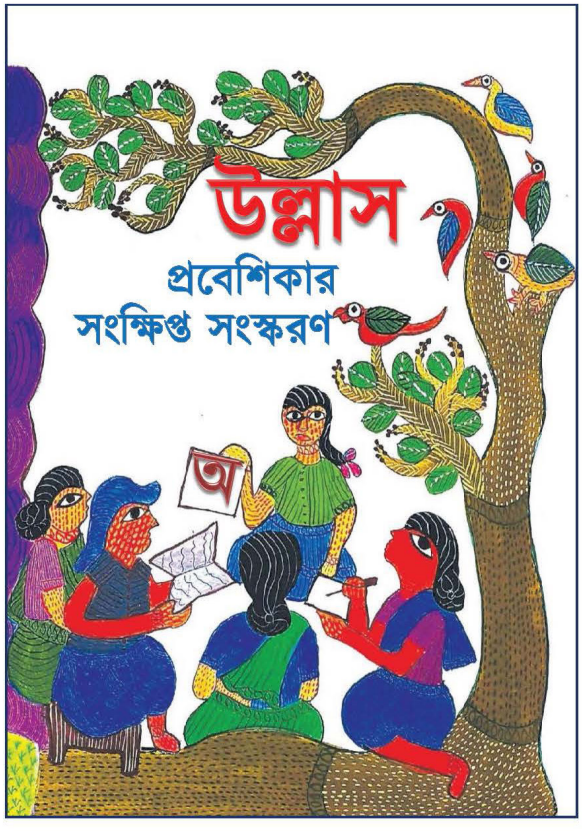
ناگا لینڈ (انگریزی)



مہاراشٹر (مراٹھی)



پاڈوچیری (تمل)



انڈمان اینڈ نکوبار آئس لینڈ (بنگلہ)

پرائمر کی تشکیل سے متعلق رہنما ہدایات

विद्ययाऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING



باب۔1

ہر شخص خواندہ ہو۔ایک تعارف

تعلیم ہنرمندانہ زندگی کی بنیاد ہے۔ باوقار زندگی جینے کے لیے تعلیم اور زندگی کی مہارتوں کو سیکھنے کی عادت ہمیشہ کام آتی ہے۔ سیکھنا ایک وسیع تصور ہے جس میں رسمی اور غیر رسمی طور پر سیکھنا شامل ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ سیکھنا کسی بھی ادارے کی چہار دیواری تک محدود نہیں ہے اور ہم مسلسل سیکھتے رہتے ہیں۔ اپنے گرد و پیش سے، اپنے آس پاس کے افراد سے، دوسروں کے تجربات سے اور خود اپنے تجربات سے بھی۔ تعلیم انسان کا حق بھی ہے اور زندگی کا ہدف بھی۔ انسانی حقوق کے عالمی منشور (1948) میں بھی یہ اعلان کیا گیا ہے کہ (1) ہر فرد کو تعلیم کا حق حاصل ہے۔ (2) تعلیم کا مقصد ہوگا انسانی شخصیت کا مکمل ارتقا اور انسانی حقوق اور بنیادی آزادیوں کے تئیں احترام کی تائید (شق 26)۔ اس نقطۂ نظر سے بھی تعلیم انسانی زندگی کے لیے انتہائی ضروری اور کارآمد عنصر ہے۔ تعلیم زندگی میں استحکام بھی لاتی ہے اور یہ ہماری معاشرتی ترقی اور ذہنی ارتقا کی کلید بھی ہے۔ اس لیے ضروری ہے کہ سیکھنے سکھانے کے نئے مواقع کے امکانات تلاش کیے جائیں اور انھیں ہر فرد تک پہنچایا جائے۔ پائیدار ترقی کا ہدف (ایجنڈا برائے پائدار ترقی 2015) کا ہدف نمبر 4 ہنرمندانہ تعلیم کے بارے میں ہے جو جامع اور معقول ہنرمندی سے آراستہ تعلیم کو یقینی بنانے کے ساتھ ہی سبھی کو سیکھنے کا موقع دینے کی حمایت کرتا ہے۔ ہدف 4 کا چھٹا نکتہ (4.6) عالمی خواندگی اور اعداد شناسی سے متعلق ہے اور اس میں یہ کہا گیا ہے کہ 2030 تک یہ یقینی بنایا جائے کہ تمام نوجوانوں اور بالغوں کی ایک بڑی تعداد (مرد اور عورتیں دونوں) خواندگی اور اعداد شناسی کے قابل ہو جائیں گے۔ قومی تعلیمی پالیسی 2020 بھی سال 2030 تک 100% خواندگی کا ہدف حاصل کرنے کا نشانہ رکھتی ہے۔ اس ہدف کے حصول کے لیے حکومتِ ہند نے مرکزی وضع کردہ نئی اسکیم 'نو بھارت ساکشرتا کاریہ کرم' کو منظوری دی ہے۔ 'نو بھارت ساکشرتا کاریہ کرم' ان افراد کے لیے ہے جن کے پاس زندگی گزارنے کا معقول تجربہ ہے۔ وہ چیزوں کو جانتے اور سمجھتے ہیں، لیکن جو پڑھنے لکھنے اور اعداد شناسی کی صلاحیت نہ ہونے کی وجہ سے بہت سے مسائل کا سامنا کرتے ہیں۔ یہ پروگرام ایک نئی سمت اور توانائی کے ساتھ ناخواندہ افراد کو خواندگی کے زینے سے جوڑ کر ملک کو آگے بڑھانے کے لیے متبادلات اختیار کرنے کی ہم سب کو تحریک بخشتا ہے۔

سب کے لیے تعلیم : ایک تعارف

سب کے لیے تعلیم (سابق تعلیم بالغان) خصوصاً ان افراد کے لیے ہے جنھیں معاشرے میں بالغ تصور کیا جاتا ہے۔ سوال یہ ہے کہ تعلیم بالغان کا مقصد کیا ہے؟ اور یہ کس طرح کسی فرد کی زندگی میں تبدیلی لاتی ہے۔ جیسا کہ پہلے واضح کیا جا چکا ہے تعلیم محض تعلیم گاہوں کی کلاسوں تک محدود نہیں ہیں بلکہ یہ ہماری روزمرہ زندگی کے کاموں کو آسانی کے ساتھ انجام دینے میں مددگار ہوتی ہے۔ تعلیم ہمیں بیدار، باصلاحیت اور ہنرمند بناتی ہے۔ اس میں کوئی بھی شخص اپنی تکنیکی یا کاروباری صلاحیتوں کو ترقی دے سکتا ہے اور اپنے علم کو مندرجہ ذیل میں سے ایک یا کئی اہداف کو نظر میں رکھتے ہوئے بہتر بنا سکتا ہے۔

- باضابطہ تعلیم کی ایک مقررہ سطح کو حاصل کرنے کے لیے۔
- کسی نئے میدان میں واقفیت، ہنرمندی اور مہارت پیدا کرنے کے لیے۔
- کسی مخصوص میدان میں اپنے علم کو تازہ یا اس کی تجدید کرنے کے لیے۔

سب کے لیے تعلیم (سابق تعلیم بالغان) کی تاریخ پرانی ہے اور اسے کئی ناموں سے جانا اور پہچانا جاتا ہے۔ 'مسلسل تعلیم'، 'بار بار تعلیم' (Recurring Education) اور 'دوسرا موقع تعلیم' کے طور پر بھی اسے جانا جاتا ہے۔ تعلیم بالغان کی پوری تاریخ میں اس تصور کا ارتقائی تبدیلیوں کے ساتھ ہوا ہے۔ 1947 تک اصل تصور 'بنیادی تعلیم' کا تھا جو ایک روایتی نظام پر مبنی اور ایک شبینہ اسکول پروگرام پر مرکوز تھی۔ 'شہری خواندگی' کا تصور جو زندگی سے مربوط نقطۂ نظر اور سماجی تعلیم پر مرکوز تھا، 1949 اور 1966 کے درمیان زیر عمل تھا۔ 1967 اور 1977 کے درمیان کام سے مربوط نقطۂ نظر پر مبنی عملی تعلیم کے تصور کو عملی خواندگی، کسان تعلیم اور شرکِ ودیا پیٹھ پر تاکید کے ساتھ تعلیم بالغان میں فروغ دیا گیا تھا۔ 1978 سے 'ارتقائی تعلیم' کا تصور زیادہ مقبول ہوا جو سماجی تبدیلی کی حکمت عملی پر مبنی اور کلی تعلیم کے اقدام پر مرکوز تھا۔ شبینہ اسکولوں کے رواج پانے کے ساتھ جنھیں 1929 میں امدادی گرانٹ حاصل ہوئی، بنیادی خواندگی کا تصور ابھرا۔ اس اسکیم کے نصاب کو دو سال سے زیادہ کا وقت دیا گیا تھا۔ اس میں 3R's یعنی حرف کو پڑھنا لکھنا اور اعداد شناسی، تاریخی داستانوں اور بنیادی صحت، صفائی ستھرائی اور ابتدائی طبی تربیت میں معمولی اسباق شامل تھے۔ اس کے تحت شام کو تقریباً دو سے تین گھنٹے تک ٹریننگ دی جایا کرتی تھی۔

قومی تعلیمی پالیسی 2020 اور سب کے لیے تعلیم

قومی تعلیمی پالیسی (NEP) 2020 میں سب کے لیے تعلیم (سابق تعلیمِ بالغان) پر زور دیا گیا ہے۔ قومی تعلیمی پالیسی 2020 کی شق 21.4 میں کہا گیا ہے کہ تعلیمِ بالغان کے لیے حکومت کی طرف سے مضبوط اور کامیاب اقدام کرنے کی ضرورت ہے۔ خصوصاً اجتماعی شراکت اور ٹیکنالوجی کی مثبت اور مفید ہم آہنگی کو سہولت بخش بنانے کے لیے جو ہندوستان میں 100 فیصد خواندگی کے ہدف کے حصول کے عمل کو رفتار دینے میں مدد کرے گا۔ قومی تعلیمی پالیسی 2020 میں سب کے لیے تعلیم (سابق تعلیمِ بالغان) کے پانچ عناصر کو شامل کرنے کی بھی سفارش کی گئی ہے، جیسے:

- اساسی خواندگی اور اعداد شناسی
- زندگی کی اہم ہنرمندیاں (روپے پیسے سے متعلق خواندگی، ڈیجیٹل خواندگی، صحت کی دیکھ بھال اور بیداری، نگہداشتِ اطفال اور تعلیم مع بہبود خاندان)
- پیشہ ورانہ ہنرمندی کا فروغ (مقامی روزگار کے حصول کے نقطۂ نظر سے)
- بنیادی تعلیم (ابتدائی، وسطی اور ثانوی سطح کی صلاحیت کے ساتھ)
- مسلسل تعلیم (آرٹ، سائنس، ٹیکنالوجی، ثقافت، کھیل اور تفریح کے ساتھ دلچسپی کے دیگر موضوعات یا مقامی آموزگاروں کے استعمال کے لیے کلی نصابِ تعلیم برائے بالغان جیسی زندگی کی اہم مہارتوں پر زیادہ وموزوں مواد کے ہمراہ)

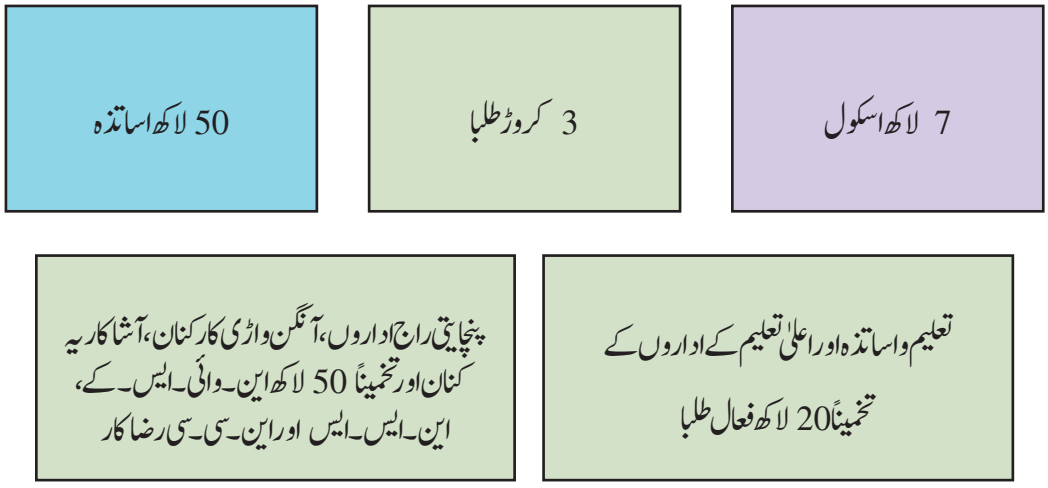
ان پانچوں عوامل کو گہرائی سے دیکھنے پر معلوم ہوتا ہے کہ زندگی کے کئی اہم پہلو ہیں اور کسی بھی فرد کی زندگی کا وقار قائم رکھنے میں مددگار ہوں گے۔

اُلّاس : نوبھارت ساکشرتا کاریہ کرم

قومی تعلیمی پالیسی (NEP) 2020 اور مرکزی بجٹ کے اعلانات برائے مالی سال 22-2021 کے مطابق مالی سال 27-2022 کے لیے حکومت ہند نے 'نوبھارت ساکشرتا کاریہ کرم' کے نام سے مرکز کی وضع کردہ نئی اسکیم کا آغاز کیا ہے جسے عرفِ عام میں اُلّاس کہا جاتا ہے، یعنی سماج میں سبھی کے لیے زندگی بھر سیکھنے کی سمجھ۔ 'نوبھارت ساکشرتا کاریہ کرم' میں تعلیمِ بالغان کی جگہ پر 'سبھی کے لیے تعلیم' لفظ کا استعمال کرنے کا متبادل منتخب کیا گیا کیوں کہ اس میں 15 اور اس سے زیادہ عمر کے ان سبھی ناخواندہ افراد کی معقول طور پر عکاسی کی گئی ہے جنھیں کسی وجہ سے مناسب اسکولی تعلیم نہیں مل پائی۔ جنھیں سماج کے مرکزی دھارے میں لانا ہے جس سے وہ بھی باصلاحیت بن سکیں اور سماجی بہبود میں اپنا تعاون دے سکیں۔ اس اسکیم میں قومی تعلیمی پالیسی 2020 میں بیان کردہ پانچوں عناصر کو شامل کیا گیا ہے۔ اس اسکیم کا مقصد ناخواندہ آموز گاروں میں بنیادی خواندگی اور اعداد شناسی کی صلاحیت پیدا کرنے کے ساتھ ساتھ 21 ویں صدی کے شہری کے لیے ضروری دیگر عناصر کے لیے مواقع کی دستیابی اور ہنرمندی کا فروغ بھی ہے۔ مالی سال 27-2022 کے لیے بنیادی خواندگی اور اعداد شناسی کا ہدف 1 کروڑ آموز گار سالانہ کی در سے 5 کروڑ آموز گار ہیں جنھیں قومی اطلاعاتی ٹیکنالوجی مرکز، این۔سی۔ای۔آر۔ٹی اور این۔آئی۔او۔ایس کے تعاون سے سیکھنے کے آن لائن اور آف لائن طریقوں کے امتزاج سے خواندہ بنانا ہے۔ اُلّاس ایپ پر ناخواندہ آموز گاروں اور رضا کار اساتذہ کے اندراج کا انتظام ہے جس میں نام، تاریخ، پیدائش، جنس، آدھار نمبر، موبائل نمبر وغیرہ جیسی ضروری معلومات دی جاتی ہیں۔ رضا کار اساتذہ کی ٹریننگ، ورکشاپ کا انعقاد، آمنے سامنے کی وضع سے کرنے کا انتظام ہے۔ ہر طرح کا ریسورس میٹریل، آسانی سے دستیاب ڈیجیٹل وضع مثلاً ٹی۔وی، ریڈیو، سیل فون پر مبنی فری/اوپن سورس ایپ/پورٹل وغیرہ کے ذریعے رضا کار/اندراج شدہ اساتذہ تک آسان پہنچ کے لیے ڈیجیٹل شکل میں دستیاب کرانے کا بھی انتظام ہے۔

نوبھارت ساکشرتا کاریہ کرم، اسکیم میں اسکول کی اسکیم کو عملی شکل دینے کی اکائی ہے اور اسکولوں کا استعمال ناخواندہ آموز گار اور رضا کار اساتذہ کی ٹریننگ کے لیے کیا جا رہا ہے۔

درحقیقت اُلّاس (نوبھارت ساکشرتا کاریہ کرم) خود آموز گاروں کے جذبے سے تحریک حاصل کرتا ہے اور ایک عوامی تحریک کی شکل میں ہر فرد کو خواندہ بنانے کا کام کیا جا رہا ہے۔



(ماخذ۔یوڈائز کے تحت اندراج شدہ اسکولوں کے اعداد و شمار http://nilp.education.gov.in/nilp/#/about-us)

ملک بھر کے ناخواندہ نوجوانوں اور بالغوں کو خواندہ بنانے کے ساتھ ساتھ ان کے کلی ارتقا اور استحکام کے لیے کام کرنا ہے۔ یہ بھی حقیقت ہے کہ ہندوستان تنوعات کا ملک ہے۔ اس لیے اس اسکیم میں خاص لچکداری ہے اور صوبے اپنی مقامی خصوصیات کو مرکز میں رکھتے ہوئے اس ہدف کو حاصل کرنے کی اپنی عملی حکمتیں وضع کریں گے۔ سماجی شعور کے مرکز کا قیام رضا کاروں کے اجتماعی اختصاص اور ایثار کے جذبے، معاشرتی ہم آہنگی کے مضبوط جذبے کو بڑھاوا دینا، قومی تعمیر کے تئیں سماجی فرض کے احساس کی تکمیل اسکیم کے اہم نکات ہیں۔ جو طلبا اس اسکیم میں حصہ لے رہے ہیں ان کی اسکول / کالج میں کریڈٹ / تصدیق نامہ / توصیف نامہ، اعزاز وغیرہ جیسے دیگر ذرائع سے ستائش کے مواقع فراہم کرنے کے انتظامات کیے جا رہے ہیں۔

پرائمر ''الاس'' کی تیاری کا عمل

قومی تعلیمی پالیسی (NEP) 2020 اور 'نو بھارت ساکشرتا کاریہ کرم' کی سفارشات اور آموزگاروں کی ضروریات کو مرکزی اہمیت دیتے ہوئے نیشنل کونسل آف ایجوکیشنل ریسرچ اینڈ ٹریننگ (این سی ای آر ٹی)، قومی خواندگی مرکز صیغہ (سی این سی ایل) 2021-22 میں **'الاس'** پرائمر مرتب کیا گیا ہے۔ پرائمر کے چار حصے ہیں جن میں 13 موضوعاتی مشمولات ہیں۔ جو آموزگاروں کی زندگی سے براہِ راست تعلق رکھتے ہیں۔ اس میں بنیادی خواندگی، اعداد شناسی اور زندگی کی اہم مہارتوں کو یکساں طور پر شامل کیا گیا ہے۔ زندگی کی اہم مہارتوں کے تحت روپے پیسے سے متعلق خواندگی، ڈیجیٹل خواندگی، قانونی خواندگی اور ماحول سے متعلق خواندگی وغیرہ موضوعات کو اس پرائمر میں خاص جگہ دی گئی ہے۔

ان چاروں حصوں میں اردو اور ریاضی سیکھنے کا عمل ساتھ ساتھ چلتا ہے۔ ان میں زبان کی فہم پیدا کرنے پر زور دیا گیا ہے جس میں پڑھ کر سمجھنا اور سمجھ کر پڑھنا دونوں پہلوؤں کو شامل کیا گیا ہے۔ یہاں پڑھنے لکھنے کے ساتھ سمجھنا سمجھانا، اپنی رائے قائم کرنا، ردعمل کا اظہار کرنا، سمجھ کر لکھنا وغیرہ کو شامل کیا گیا ہے۔ اسی طرح ریاضی میں اعداد سے واقفیت کے ساتھ ساتھ ریاضیاتی تصورات کی سمجھ اور روز مرہ زندگی میں ان کا استعمال شامل ہے۔

پرائمر کو 4 حصوں اور 13 ذیلی موضوعات میں تقسیم کیا گیا ہے۔ تمام اسباق کو اس طرح تیار کیا گیا ہے کہ آموزگار موضوع سے لگاؤ محسوس کریں اور اپنی زندگی سے مربوط تجربات کو موضوعات سے جوڑ کر بات چیت کر سکیں۔ پرائمر میں دیے گئے موضوعات اس طرح ہیں خاندان اور پڑوس، بات چیت، کھانا پینا اور صحت، روپے پیسے سے متعلق خواندگی، ماحول، انتخابی خواندگی، انسدادِ آفات، پیسے، وقت، سفر اور تفریح۔

قومی سطح پر ہم آہنگی کو فروغ دینے کے لیے مختلف صوبوں سے تمثیلوں، کہانیوں، نظموں وغیرہ کا استعمال کیا گیا ہے۔ پرائمر کی تیاری میں اپنی صلاحیت سے حصہ لینے کے لیے ہر ایک میدان کے ماہرین کو مدعو کیا گیا تھا مثلاً پرائمر کا سرِ ورق مدھوبنی آرٹ میں بنوایا گیا ہے جو بہار کی عوامی مصوری کے نام سے دنیا بھر میں مقبول ہے۔ کئی دیگر اسباق میں مختلف فنون کو شامل کیا گیا ہے۔ جیسے گونڈ آرٹ وغیرہ۔ ہم نے حقیقی زندگی کے حالات کی عکاسی کرنے کی کوشش کی ہے۔ جیسے سڑکوں پر گھومتے لوگ، کھیل رہے بچوں کا ایک گروہ، آپس میں بات

کرتی ہوئی عورتیں، بازار، گاؤں کے مناظر، نیم شہری قصبے اور ماحول سے متعلق تصویریں وغیرہ۔ انھیں جان بوجھ کر اس طرح سے بنایا گیا ہے کہ وہ آموز گاروں کی روزمرہ زندگی کے نصاب سے بآسانی ربط پیدا کرسکیں اور تصورات کو سیکھنے اور سمجھنے میں مدد کرسکیں۔

اساسی خواندگی اور اعداد شناسی اور زندگی کی اہم مہارتوں کی بنیاد پر مجموعی طور پر مذکورہ بالا اسباق مرتب کیے گئے ہیں تاکہ آموز گار کلی طور پر ایک ہی بار میں سیکھنے، لکھنے اور سمجھنے پر قادر ہوسکیں۔ حصہ 4 کے ایک باب میں شیخو بھائی کی کہانی شامل کی گئی ہے۔ یہ ہمارے سامنے گجراتی تہذیب کی جھلک پیش کرتی ہے۔ ڈیجیٹل، روپے پیسے سے متعلق اور قانونی خواندگی کی صلاحیت پیدا کرنے کی ضرورت کو ذہن میں رکھتے ہوئے حال کے اصولوں کو کہانیوں اور نظموں کے ذریعے آموز گاروں کے لیے سمجھنا آسان بنایا گیا ہے۔ چھتیس گڑھ اور مدھیہ پردیش کے کچھ لوک گیتوں کو پرائمر میں جگہ دی گئی ہے مثلاً ''دَدریا لوک گیت''۔

اس پیمانے پر تیار کیے گئے پرائمر کا جائزہ لینے کے لیے مختلف تعلیم بالغان، زبانوں اور بنیادی خواندگی اور اعداد شناسی کے ماہرین کے ساتھ جائزہ کمیٹی کی تشکیل کی گئی تھی۔ ان کی سفارشات اور تجاویز کی بنیاد پر پرائمر میں تبدیلیاں کی گئیں۔ پرائمر تیار ہوجانے کے بعد اس کے جائزے کی ضرورت ہوتی ہے اس لیے **الاس** کے علاقائی جائزے کے لیے چھ ریاستوں کا انتخاب کیا گیا تھا جن میں آندھرا پردیش، تلنگانہ، مہاراشٹر، اتر پردیش، جموں وکشمیر اور دہلی شامل ہیں۔ پرائمر بنیادی طور پر ہندی زبان میں مرتب کیا گیا ہے، اس لیے ہندی داں ریاستوں کو علاقائی جائزے کے لیے منتخب کیا گیا تھا۔ ان ریاستوں میں **الاس** کے چاروں حصوں کے 13 موضوعات کا جائزہ لیا گیا جس میں پرائمر کے عملی پہلوؤں پر آموز گاروں، اس سے متعلق افراد اور سی این سی ایل ٹیم کے ممبران کی جمع کردہ معلومات کا استعمال کرتے ہوئے پرائمر میں ضروری ترمیمات کی گئیں۔ اس کے بعد ہی پرائمر کو آخری شکل دے کر **دیکشا پورٹل** پر سبھی کے لیے زیادہ سے زیادہ برتنے کے لیے اپ لوڈ کیا گیا ہے۔

امید ہے کہ پرائمر ہر فرد کو خواندہ بنانے میں مددگار ثابت ہوگا جس سے آموز گار مستحکم اور قادر ہوں اور قوم کی تعمیر میں اپنا تعاون دے سکیں۔

پرائمر : قابلِ غور نکات

پرائمر بنیادی طور پر ایک وسیلہ جاتی مواد یا ریسورس میٹریل ہے، ایک اوزار ہے، ایک ذریعہ ہے جس کا استعمال آموز گاروں کے پڑھنے لکھنے اور اعداد شناسی کے لیے تحریک بخش ماحول کی تخلیق کے لیے کیا جاسکتا ہے جو الگ الگ اسباب سے اپنی ابتدائی عمر میں حروف شناسی کی صلاحیت نہیں پیدا کر پائے۔ یہ پرائمر ایک طرف جہاں

- آموز گاروں کو پڑھنے لکھنے سے متعلق مواد فراہم کرتا ہے وہیں دوسری طرف
- رضا کار اساتذہ کو یہ ہدایت بھی دیتا ہے کہ آخر کار ہمارا ہدف کیا ہے؟ اور ہمیں اس ہدف کو کیسے حاصل کرنا ہے!

یہ سچ ہے کہ پڑھنا لکھنا اور ریاضیاتی تصورات کو سیکھنے سکھانے کے لیے ہمارے پاس پڑھنے لکھنے اور ریاضیاتی تصورات کو سیکھنے سکھانے کے وسائل بھی ہونے چاہئیں۔ اس طور پر بنیادی خواندگی اور اعداد شناسی کی صلاحیت پیدا ہو جائے تو پرائمر وغیرہ محض وسیلہ جاتی مواد ہیں۔ یہ نکتہ حد درجہ قابل غور ہے کہ آموز گاروں کی شخصیتیں الگ الگ ہوتی ہیں۔ نتیجتاً ان کی حاصل کردہ خواندگی اور اعداد شناسی سے متعلق مقاصد میں بھی اختلاف پایا جانا حد درجہ فطری بات ہوگی۔ ان کے پس منظر، تجربات، غور و فکر، صلاحیت اور اس کی سطح، زبان، معاشرہ، ثقافتی و معاشی سیاقوں میں بھی اختلاف پایا جاتا ہے۔ اس لیے ایک ہی طرح کا وسیلہ جاتی مواد تمام آموز گاروں کے لیے یکساں طور پر مفید ہو، یہ ضروری نہیں ہے۔ چنانچہ مواد کو آموز گاروں کی ضروریات کے مطابق ترتیب / تشکیل دیتے ہوئے اسے استعمال میں لایا جاسکتا ہے۔ پرائمر جیسا وسیلہ جاتی مواد یا کوئی بھی دیگر وسیلہ جاتی مواد اپنے آپ میں حتمی نہیں ہوسکتا بلکہ اس میں مختلف ضروریات کے مطابق مسلسل ترمیم و تبدیلی گنجائش رہے گی ہی اور اس نقطۂ نظر سے ہمیں اپنے آموز گاروں کی ضروریات کو اولین ترجیح دیتے ہوئے پہلے سے تیار مواد میں جہاں مسلسل ترمیمات کرتے رہنا ہوگا وہیں لگاتار جدید وسیلہ جاتی مواد کی تشکیل بھی کرتے رہنا ہوگا۔

جیسا کہ نام سے ہی ظاہر ہے کہ پرائمر بنیادی طور پر پڑھنا لکھنا اور اعداد سیکھنے سکھانے کا نقطۂ آغاز ہے جس میں قدم رکھنے کے بعد اس شکل میں ایک موزوں سمت ملتی رہنی چاہیے کہ کیا کرنا ہے اور کیسے کرنا ہے؟ یہ پرائمر محض ذریعہ ہے، اوزار ہے جسے بنیاد بناتے ہوئے ہمیں اپنے ہدف تک پہنچنا ہے۔ پرائمر کے علاوہ دیگر افسانوی، بصری، سمعی مواد بھی بنیادی خواندگی اور اعداد شناسی کو سیکھنے میں معاون ہوتے ہیں۔ ہمیں اس طرح کے مواد بھی تیار کرتے رہنا ہوگا۔

سب کے لیے تعلیم (سابقاً تعلیم بالغان) کو قومی تعلیمی پالیسی 2020 کی سفارشات کے سیاق میں دیکھنے کی ضرورت ہے۔ یہاں یہ توقع کی گئی ہے کہ آموز گار بنیادی خواندگی سے آغاز کرتے ہوئے ڈیجیٹل دنیا کے مختلف آلات و اوزار کا استعمال کرنے کی قدرت

بھی حاصل کرسکیں گے۔اس معنیٰ میں خواندگی ایک وسیع تصور ہے جو محض حرف یا اعداد شناسی تک محدود نہیں ہے بلکہ مختلف سیاقوں میں موضوعات کو بصری، سمعی اور ڈیجیٹل مواد کا استعمال کر کے پہچاننے، سمجھنے، تخلیق کرنے، شمار کرنے اور مکالمہ کرنے کی صلاحیت ہے (عالمی خواندگی تنظیم آئی ایل اے سے ماخوذ)۔خواندگی کی یہ تفصیل آموز گاروں کی معیاری اور باوقار زندگی میں مددگار ہے۔ساتھ ہی **پرائمر (الاس)** زبان اور ریاضی کی بنیادی مہارتوں کے حصول میں مدد کرتا ہے۔

یہ حد درجہ واضح ہے کہ زبان کی اپنی ساخت ہوتی ہے اور یہ ساخت زبان کی ہر ایک سطح پر ظاہر ہوتی ہے چاہے وہ مخصوص زبان کی صوتیاتی ساخت ہو، صرفی ساخت ہو یا نحوی ساخت ہو۔الفاظ کو ان کے معانی، ان کے لسانی معاشرے یا گروہ سے ہی ملتے ہیں۔یہی وجہ ہے کہ جہاں ایک ہی چیز کے لیے الگ الگ زبانوں میں الگ الگ الفاظ ملتے ہیں، وہیں ایک ہی لفظ کو الگ الگ لسانی گروہوں میں الگ الگ معنی دیتے ہیں۔اس لیے زبان کو اس کے لسانی و تہذیبی تناظر میں سمجھنا ہوتا ہے۔وجہ ظاہر ہے کہ آخر کار زبان کا استعمال سماج میں ہی ہوتا ہے اور مختلف مقاصد کے لیے ہوتا ہے۔

ایک اور نکتہ یہ بھی ہے کہ زبانی اور تحریری دونوں شکلیں اہم ہیں۔پڑھنا لکھنا سیکھنے سکھانے میں دونوں کے استعمال کو ترجیح دی جانی چاہیے۔ اپنی زبان، بول چال اور خیال سے آراستہ آموز گار اگر بول اور سن کر اپنی بات کہنے سننے پر قادر ہے تو اسے صرف زبان کی تحریری شکل کو پڑھنے لکھنے کی مہارت حاصل کرنی ہے۔بہت سے آموز گار ان دونوں مہارتوں سے بھی جزوی طور پر واقف ہو سکتے ہیں۔گویا کہ زبان کی بول چال کی شکل کے استعمال کے ذریعہ زبان کی تحریری شکل تک پہنچنے کی کوشش کرنی ہوگی۔اس سے آموز گار میں جہاں ایک طرف خود اعتمادی آتی ہے وہیں دوسری جانب پڑھنا لکھنا سیکھنے کے تئیں رغبت بھی پیدا ہوتی ہے۔اس کا مطلب یہ ہے کہ ان کے لیے پڑھنا لکھنا سیکھنا پوری طرح نئی مشق نہیں ہوگا۔انھیں محسوس ہونے لگے گا کہ انھوں نے ایک لمبے سفر کا زیادہ تر حصہ طے کر لیا ہے۔پڑھنا لکھنا سیکھ لیں گے تو باقی فاصلہ بھی طے ہو جائے گا اور وہ اپنے ہدف تک پہنچ جائیں گے۔

بنیادی اعداد شناسی کے سیاق میں یہ سمجھنا مناسب ہوگا کہ آموز گار اپنی زندگی میں زبانی طور پر ریاضیاتی اعمال استعمال کرتے ہیں اور اچھی طرح سے حساب کتاب کر لیتے ہیں۔جو آموز گار اعداد اور ان کے تحریری ناموں (کوئی ایک عدد لکھا ہوا کیسا دکھائی دیتا ہے) سے واقف نہیں ہیں، انھیں ذرا اور اعداد شناسی پیدا کرنے میں مدد کرنے کی دیر ہے۔وہ جلد ہی اس بنیادی اعداد شناسی کی مہارت بھی حاصل کر لیں گے اور زندگی کے مختلف سیاقوں میں اس مہارت کا استعمال بھی کر سکیں گے۔انھیں دوبارہ یہ یقین دلانے کی ضرورت ہے کہ بس تھوڑا سا سفر باقی ہے۔

پرائمر کی تیاری کرتے ہوئے آموز گار کو یہ یقین دلانے کے لیے کئی مواقع فراہم کیے جانے چاہئیں تا کہ وہ سمجھ کے ساتھ ساتھ زبان اور ریاضیاتی اعمال کا استعمال کرسکیں۔ یہ مواقع ان کی زندگی کے قریبی پس منظر سے جڑے ہونے چاہئیں کیوں کہ ان بنیادی مہارتوں کا استعمال آخر کار اپنے گردوپیش میں ہی کیا جانا ہے۔ آموز گاروں کی زندگی کے مختلف سیاقوں میں ڈیجیٹل آلات اور اس سے متعلق ڈیجیٹل خواندگی، قانونی خواندگی، روپے پیسے سے متعلق خواندگی، ماحول سے متعلق خواندگی، صحت، صفائی ستھرائی وغیرہ کی سمجھ بھی شامل ہے۔ **پرائمر** میں ان نکات کو بھی جگہ دینا مناسب ہوگا جس سے ہم زندگی کے ہر پہلو کا فائدہ اٹھا سکیں گے اور معیاری زندگی گزار سکیں گے۔

پرائمر کی تشکیل کے بنیادی نکات مشورے کے طور پر ہیں۔ ان میں بار بار **الاس** کے عنوان کے **پرائمر** کی مثالیں دی گئی ہیں تا کہ خواندگی اور اعداد شناسی سے متعلق نکات ٹھیک سے سمجھ میں آسکیں۔ توقع کی جاتی ہے کہ ریاستیں اپنے سماجی و تہذیبی تناظر اور آموز گاروں کی ضروریات کو مرکز میں رکھتے ہوئے اپنی اپنی علاقائی زبانوں میں **پرائمر** کی تشکیل کرسکیں گی۔ سبھی ریاستیں **'الاس' پرائمر** کے موضوع و مواد کو اپنی زبانوں کی مخصوص ساخت کے حوالے سے مرتب کرسکتی ہیں اور اس کی شکل بھی تبدیل کرسکتی ہیں یا تجویز کردہ رہنما ہدایات کی بنیاد پر نیا **پرائمر** بھی ترتیب دے سکتی ہیں۔ کونسل **پرائمر** کی ترتیب سے متعلق رہنما ہدایات تیار کرنے کے سیاق میں ڈاکٹر ستیہ ویر سنگھ پرنسپل گورنمنٹ انٹر کالج، باغپت، اتر پردیش اور شری اکشے کمار دیکشت، میٹر ٹیچر، ڈائریکٹوریٹ آف ایجوکیشن، نئی دہلی کے تئیں ممنونیت کا اظہار کرتی ہے۔ ساتھ ہی سی۔این۔سی ایل کی بھاؤنہ کھیڑا، جے۔پی۔ایف، ڈاکٹر جاوید عالم، جے۔پی۔ایف، جیوتی تیواری کنسلٹنٹ نیز دیگر انتظامی عملے کی انتھک محنت کے لیے ان کی شکر گزار ہے۔

''سبھی کے لیے تعلیم'' کے ہدف کو حاصل کرنے کے سیاق میں پرویشیکا کی تشکیل کے بنیادی نکتے کی حیثیت صرف تجویز کی ہے۔ انھیں مزید مفید بنانے کے لیے آپ کے مشوروں کا ہمیشہ خیر مقدم ہے۔

بصد خلوص

اُوشا شرما
پروفیسر وانچارج
سی۔این۔سی۔ایل
این۔سی۔ای۔آر۔ٹی، نئی دہلی

پرائمر کی تشکیل: رہنما ہدایات

الاس پرائمر اُن سبھی آموز گاروں کو مرکز میں رکھ کر بنایا گیا ہے؛

- جن کے پاس زندگی کا وسیع تجربہ ہے اور جو زندگی کی جدوجہد اور اس کے مسائل کا سامنا کرنے کا حوصلہ رکھتے ہیں۔
- جو تعلیم یافتہ تو ہیں لیکن خواندہ نہیں ہیں۔

یہ وہ آموز گار ہیں جن کی عمر 15 سال یا اس سے زیادہ ہے اور وہ اپنی زندگی کے الگ الگ سیاقوں میں اپنی مادری زبان کی بول چال کی شکل کا استعمال ضرورت کے مطابق مہارت سے کرتے ہیں۔

اپنی بات کہنے اور دوسروں کی بات کو سن کر سمجھنے کی صلاحیت رکھنے والے یہ آموز گار ریاضی کا عملی استعمال بھی جانتے اور سمجھتے ہیں لیکن شاید زبان اور ریاضی کی تحریری شکل سے ان کا زیادہ یا بالکل بھی تعارف نہ ہو۔ یہ بھی ممکن ہے کہ؛

- زندگی کے الگ الگ مراحل پر اور الگ الگ سیاقوں میں خواندگی اور ریاضی کی بنیادی صلاحیت نہ ہونے کی وجہ سے ان آموز گاروں کو ناکامی، مایوسی یا ٹھگی کا سامنا کرنا پڑا ہو یا پڑتا ہو۔
- محنت سے حاصل کی گئی دولت بنیادی خواندگی اور اعداد شناسی کے فقدان میں یونہی ضائع ہو گئی ہو یا ہو جاتی ہو یا اس کی بچت نہ ہو پاتی ہو۔
- مواصلات کے جدید طریقوں کے استعمال سے ملنے والی سہولتوں سے یہ محروم ہو جاتے ہوں۔
- پھر چاہے؛
  - وہ ڈیجیٹل خواندگی ہو۔
  - روپے پیسے سے متعلق خواندگی ہو ——————۔
  - قانونی خواندگی ہو ——————۔
  - ماحول سے متعلق خواندگی ہو یا پھر ——————۔
  - صحت اور صفائی ستھرائی سے متعلق خواندگی ہو ——————۔

خواندہ ہونا ان تمام حالات کو درست کرنے میں مدد کرتا ہے۔

آموز گاروں کے گرد و پیش کو ذہن میں رکھ کر مرتب کردہ یہ **پرائمر** ان کے اندر اردو زبان اور اعداد شناسی کی بنیادی صلاحیت کے فروغ اور اپنی زندگی میں پڑھنے لکھنے اور حساب لگانے کا موقع دیتا ہے۔ یہاں یہ واضح کر دینا بہتر ہو گا کہ یہاں پڑھنے لکھنے کا مطلب صرف واقفیت نہیں ہے بلکہ زندگی میں جہاں جہاں بھی زبان موجود ہے اُسے سمجھنا، اپنی رائے بنانا، اظہار کرنا اور سمجھ کر لکھنا ہے۔

اسی طرح ریاضی کی سمجھ کا مطلب صرف ہندسوں کی پہچان تک محدود نہیں بلکہ ریاضی کے تصور کی سمجھ اور ان کا روزمرہ زندگی میں استعمال ہے۔

ان آموز گاروں کے اپنے اپنے تجربات ہیں اور اپنی اپنی ترجیحات ہیں۔ ان ترجیحات میں ایک اہم ترجیح ہے زبان (اردو) اور ریاضی کو پڑھنا لکھنا سیکھنا۔ اسی ترجیح کو اولیت دیتے ہوئے؛

پرائمر کے ہر ایک سبق میں آموز گاروں کے لیے سوچنے، اپنی بات کہنے، پڑھنے اور لکھنے کے مواقع دیے گئے ہیں۔ یہ مواقع مزید دیگر مواقع تلاش کرنے، فراہم کرنے میں رہنمائی کرتے ہیں۔ آموز گار کی ضروریات کو ذہن میں رکھتے ہوئے ان کی صلاحیتوں اور سطح کے مطابق پڑھنے لکھنے کے دیگر مواقع فراہم کیے جاسکتے ہیں۔ **الاس پرائمر** کی ایک اہم خصوصیت یہ ہے کہ اس میں زبان/خواندگی اور ریاضی کو مجموعی شکل میں رکھا گیا ہے۔

ہم جانتے ہیں کہ کسی بھی مضمون کو پڑھنے لکھنے یا سمجھنے میں زبان ذریعہ بنتی ہے۔ یہی صورت حال ریاضی کے ساتھ بھی ہے۔ ریاضی کی بھی اپنی زبان ہوتی ہے اور اسے کسی زبان کے ذریعے ہی پیش کیا جاتا ہے۔ اس طرح زبان گویا میڈیم کا کام کرتی ہے۔ **پرائمر** میں تنقیدی سوچ کے ساتھ ایک مخصوص سیاق لیا گیا ہے اور اس کے ساتھ ہی اردو زبان پڑھنے، لکھنے کی سرگرمیاں شروع ہوتی ہیں۔ ریاضی کی بنیادی صلاحیتوں کو اسی مخصوص سیاق سے جوڑتے ہوئے سیکھنے سکھانے کی کوشش کی گئی ہے۔ مثال کے طور پر:

پرائمر میں ''راجا کا پریوار'' کی تصویر دی گئی ہے اور آموز گاروں سے اسے دھیان میں رکھنے کے لیے کہا گیا ہے۔ تصویر کے تجزیے کے بعد جو سوالات پوچھے گئے ہیں وہ اعداد پر مبنی ہیں۔ گاڑی میں کل کتنے آدمی ہیں؟/ٹوکری میں کل کتنے تربوز ہیں؟/گاڑی میں کتنی لالٹینیں ہیں؟ وغیرہ۔ آموز گاروں کو رضا کار اساتذہ کی مدد سے اردو زبان میں دیے گئے ان سوالوں کو پڑھنا ہو گا اور پھر گنتی میں ان کے جواب دینے ہوں گے۔ **پرائمر** کے چاروں حصوں میں اسی مجموعی شکل کے مطابق موضوع و مواد کو مرتب کیا گیا ہے۔

الاس پرائمر کے بارے میں کچھ اہم نکات کو آگے تفصیل سے دیا گیا ہے۔ یہ نکات مختلف علاقائی زبانوں میں **پرائمر** کی تشکیل کرنے کے سیاق میں تجویز کردہ رہنما ہدایت کے طور پر مددگار ہوں گے۔ ہر ایک نکتے کو واضح کرنے کے لیے **الاس پرائمر** سے مثالیں بھی دی گئی ہیں۔ اہم نکات اس طرح ہیں۔

- راجا کا خاندان بیل گاڑی سے جا رہا ہے۔ دیکھیے، گنیے اور لکھیے



- گاڑی میں کُل کتنے لوگ ہیں؟
- گاڑی میں کتنے مرد ہیں؟
- گاڑی میں کتنی عورتیں ہیں؟
- ٹوکری میں کتنے تربوز ہیں؟
- گاڑی میں کتنے پہیے ہیں؟
- گاڑی میں کتنی لال ٹین ہیں؟

الاس - حصہ 1، باب 1، صفحہ 21

پرائمر کے اسباق متن/موضوع پر مبنی ہیں۔ اسباق کے متن کو 13 موضوعات کے اردگرد وضع کیا گیا ہے۔ **پرائمر** کے لیے 15 سال اور اس سے زیادہ عمر کے آموز گاروں کی زندگی کے الگ الگ پہلوؤں اور ضروریات کو مرکز میں رکھتے ہوئے الگ الگ متن/موضوع طے کیے گئے ہیں مثلاً:

خاندان اور پڑوس، بات چیت، ہمارے آس پاس، کھانا پینا اور صحت، رائے دہندگی، قانونی واقفیت، انسدادِ آفات، وقت، سفر، تفریح، روپے پیسے سے متعلق خواندگی، ڈیجیٹل خواندگی، قانونی خواندگی، ماحول کے تئیں بیداری وغیرہ۔



فہرست موضوعات

تمہید iii
رضا کار اساتذہ سے دو باتیں v
کمیٹی برائے درسی کتاب ix
اظہارِ تشکر xi

1. خاندان اور پڑوس 2-23
- ا آ ن پ س ر و
- انوری کا خاندان
- 1 سے 9 تک کے اعداد پہچاننا اور لکھنا
- آؤ بادل

2. بات چیت 26-54
- ا ای ب ت م ٹ چ خ ھ
- اسکول کو چٹھی
- 10 سے 20 تک کے اعداد پہچاننا، پڑھنا اور لکھنا
- 20 تک کے اعداد کو جمع اور تفریق کرنا
- اندھیر نگری چوپٹ راجا، ٹکے سیر بھاجی ٹکے سیر کھاجا

3. ہمارا رہن سہن 57-89
- جھ د ز ک گ ل ع غ ی
- دیوالی کے دیے
- 21 سے 50 تک کے اعداد پہچاننا، پڑھنا اور لکھنا
- اکائی اور دہائی گروہوں میں گننا
- 50 تک کے اعداد کی جمع اور تفریق کرنا
- کہانیاں

الاس – حصہ 1



فہرست موضوعات

تمہید iii
رضاکار اساتذہ سے دو باتیں v
کمیٹی برائے درسی کتاب ix
اظہارِ تشکر xi

11. منورنجن 256-273
- مفت ہی مفت
- تصویروں کی سمجھ پیدا کرنا (گول، تکون، چوکور اور مستطیل)
- تصویروں اور اعداد کے پیٹرن کی سمجھ پیدا کرنا
- 'دَدریا' لوک گیت
- جادوئی لال ٹین

12. مالیاتی خواندگی 274-293
- میرا کھاتہ میری شان
- بینک کھاتہ کھلوانے سے متعلق معلومات کا استعمال کرنا
- بینک سے متعلق فارم پڑھنا، سمجھنا اور بھرنا (چیک، جمع پرچی، نقد پیسہ نکالنے کی پرچی)
- خیرات کا حساب

13. ڈیجیٹل آموزش 294-312
- اب راہ ہوئی آسان
- ڈیجیٹل ہندسوں کو پہچاننا اور لکھنا
- تصویر میں دکھائے گئے اعداد کی سمجھ
- موبائل فون سے روزمرہ زندگی سے متعلق مسائل کو حل کرنا
- موبائل کی دنیا

الاس – حصہ 4

پرائمر کے موضوع و مواد کا تعین کرتے ہوئے آموز گاروں کے معاشرتی اور تہذیبی تناظر کو بھی ذہن میں رکھا گیا ہے۔ یہ نکتہ اس لیے بھی اہم ہے کہ ہم زبان اور ریاضی کی جن بنیادی مہارتوں کو سیکھنے سکھانے کی بات کر رہے ہیں وہ آخر کار کسی معاشرے اور مخصوص تہذیب میں ہی استعمال میں آئیں گی۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ زبان اور ریاضیاتی تصورات کا فروغ اور استعمال سماج سے ہی مربوط ہے۔ اس طرح آموز گاروں سے متعلق کسی بھی وسیلہ جاتی مواد کی تشکیل میں بہت سے سماجی و تہذیبی تناظرات کو مرکزی حیثیت دینی ہوگی۔

- یہ حقیقت قابل غور ہے کہ ان آموز گاروں کا زمرۂ عمر حسب توقع بڑا ہے اور ان کے پاس زندگی کا ثروت مند تجربہ ہے۔ اس وجہ سے اسباق کے تناظر میں زبانی گفتگو کی سطح بھی اونچی ہے۔ ساتھ ہی زندگی کی مہارتوں کو اسباق کے موضوع و مواد میں سمویا گیا ہے۔ **پرائمر** میں ایسی کئی مثالیں موجود ہیں، جیسے:

سبق 13 ''ڈیجیٹل خواندگی'' میں ایک کہانی ہے ''موبائل کی دنیا''۔ اس میں موبائل سے متعلق طرح طرح کی معلومات دی گئی ہیں اور اس سے متعلق سوالات میں موبائل کے محفوظ استعمال کو جگہ دی گئی ہے مثلاً:

- کسی ایسے تجربے کے بارے میں بتائیے جب آپ کو موبائل کی وجہ سے کسی کام میں آسانی ہوئی ہو؟

- آپ اپنے موبائل کا استعمال کس کس کام کے لیے کرتے ہیں؟
- موبائل کا استعمال کرتے وقت کن باتوں کا خیال رکھتے ہیں؟



الاس - حصہ 4، باب 13، صفحہ 304

اسی طرح سبق 7 قانونی خواندگی میں پہلی اطلاعاتی رپوٹ (ایف آئی آر) کے بارے میں ضروری معلومات دی گئی ہیں اور اسی سے متعلق آموزگاروں کو اپنے تجربات بیان کرنے اور غور و فکر کرنے کے لیے کہا گیا ہے مثلاً:

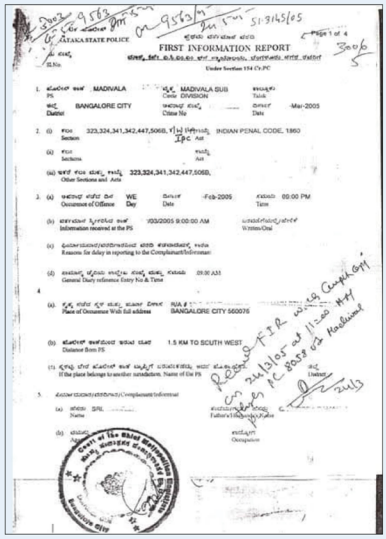
- کیا آپ نے کبھی ایف آئی آر درج کروائی ہے؟
- آپ کے گھر سے قریب ترین پولیس تھانہ کون سا ہے؟
- ضرورت پڑنے پر آپ پولیس کی مدد کس ٹیلی فون نمبر پر لے سکتے ہیں؟
- خواتین کی حفاظت کے لیے کس نمبر پر رابطہ کیا جاسکتا ہے؟

▪ پہلی معلوماتی رپورٹ (ایف۔آئی۔آر)

پولیس ایف۔آئی۔آر درج ہونے کے بعد ہی جرم کی تفتیش شروع کرسکتی ہے۔قانون میں کہا گیا ہے کہ جرم کی اطلاع ملتے ہی فوری طور پر قریبی تھانے میں ایف۔آئی۔آر درج کرانی چاہیے۔یہ اطلاع پولیس کو زبانی یا تحریری کسی بھی شکل میں دی جاسکتی ہے۔

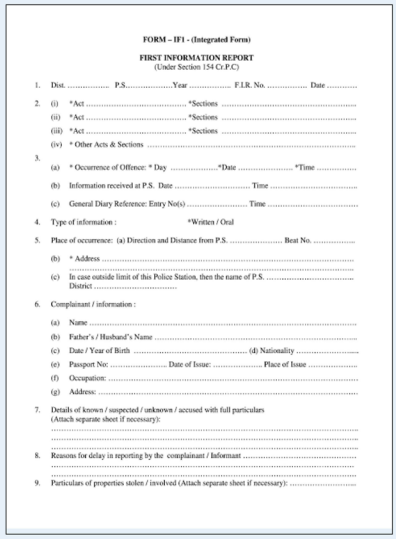
ایف۔آئی۔آر کے لیے پولیس کے پاس ایک خاص فارم ہوتا ہے۔اس پر شکایت کرنے والے کے دستخط کرائے جاتے ہیں۔شکایت کرنے والے کو پولیس سے ایف۔آئی۔آر کی ایک کاپی مفت حاصل کرنے کا قانونی حق ہوتا ہے۔

(سماجک اور راج نیتک جیون۔111این۔سی۔ای۔آر۔ٹی)


KARNATAKA STATE POLICE

FIRST INFORMATION REPORT

Under Section 154 Cr.PC


FORM – IF1 - (Integrated Form)

FIRST INFORMATION REPORT

(Under Section 154 Cr.P.C)

1. Dist. ..... P.S. ..... Year ..... F.I.R. No. ..... Date .....
2. (i) *Act ..... *Sections .....
   (ii) *Act ..... *Sections .....
   (iii) *Act ..... *Sections .....
   (iv) * Other Acts & Sections .....
3. (a) * Occurrence of Offence: * Day ..... *Date ..... *Time .....
   (b) Information received at P.S. Date ..... Time .....
   (c) General Diary Reference: Entry No(s) ..... Time .....
4. Type of information : *Written / Oral
5. Place of occurrence: (a) Direction and Distance from P.S. ..... Beat No. .....
   (b) * Address .....
   (c) In case outside limit of this Police Station, then the name of P.S. ..... District .....
6. Complainant / information :
   (a) Name .....
   (b) Father's / Husband's Name .....
   (c) Date / Year of Birth ..... (d) Nationality .....
   (e) Passport No: ..... Date of Issue: ..... Place of Issue .....
   (f) Occupation: .....
   (g) Address: .....
7. Details of known / suspected / unknown / accused with full particulars (Attach separate sheet if necessary): .....
8. Reasons for delay in reporting by the complainant / Informant .....
9. Particulars of properties stolen / involved (Attach separate sheet if necessary): .....

الاس – حصہ 2، باب 7، صفحہ 189

سبق 8 ”مصیبتیں کیسی کیسی“ کے مندرجہ ذیل سوالات بھی دیکھے جاسکتے ہیں؛

– سوچیئے، اگر آپ کے یہاں زلزلہ آجائے تو کیا آپ کے گھر کو بھی خطرہ ہوگا؟ اگر ہاں تو آپ کہاں رہیں گے؟

– کیا آپ نے اپنی زندگی میں قحط، زلزلہ، سیلاب جیسی کسی قدرتی آفت کا سامنا کیا ہے، اگر ہاں تو اپنا تجربہ بیان کیجیے۔

– کیا آپ کو لگتا ہے کہ قدرتی آفات کے لیے انسان براہ راست ذمہ دار ہیں۔ ایسی کسی ایک آفت کے بارے میں ساتھیوں سے بات چیت کیجیے اور بات چیت میں آئے اہم نکات کو لکھیے۔

▪ مل کر پڑھیے

جب زمین کانپ اٹھی

میرا نام جسمہ ہے۔ میں گجرات کے بھُج علاقہ میں رہتی ہوں۔ یہ اس وقت کی بات ہے جب میں گیارہ سال کی تھی۔ اچانک زمین تیزی سے ہلنے لگی۔ سب لوگ گھبرا گئے۔ کچھ ہی وقت میں ہمارا گاؤں ملبے کا ڈھیر بن گیا۔ ہمارے کپڑے، برتن، کھانا سب کچھ ملبے میں دب گئے۔





بہت سارے لوگوں کو چوٹیں بھی لگیں۔ ڈاکٹروں کی ٹیم نے گاؤں والوں کی مدد کی۔ ان کی مدد سے لوگ ٹھیک ہونے لگے۔

ٹھنڈک کا مہینہ تھا، اتنی سردی میں گھر کے باہر رہنا مشکل ہو رہا تھا۔ ٹھنڈک اور ڈر کی وجہ سے نیند نہیں آتی

الاس – حصہ 3، باب 8، صفحہ 200

تھی۔یہی ڈر رہتا کہ کہیں پھر سے زلزلہ آ گیا تو؟بہت سے لوگوں نے ہماری مدد کی۔انہوں نے ہمارے رہنے کے لیے خیمے لگوائے۔بہت سے لوگوں نے کھانے پینے کا سامان بھی دیا۔



شہر سے کچھ انجینئر آئے۔انہوں نے ہمیں بتایا کہ اگر ہمارے گھر خاص ڈیزائن سے بنائے جائیں تو زلزلے سے نقصان کم ہو گا۔



الاس – حصہ 3، باب 8، صفحہ 201

- آموزگاروں کے سماجی و تہذیبی تناظر کو ذہن میں رکھنا اور **پرائمر** کے مطالعاتی مواد کو سیاق سے ہم آہنگ بنانے کا مطلب یہ بھی ہے کہ چاہے ہم صحت، سفر، انسدادِ آفات وغیرہ کے متن رموضوع کو شامل کر رہے ہوں لیکن ان تینوں کا موضوع رمواد ریاستوں کے سیاق کے مطابق الگ الگ ہو سکتا ہے۔مثال کے طور پر راجستھان میں سفر کے متن کے سیاق میں اونٹ، اونٹ گاڑی اور ریگستان وغیرہ کا بیان ہو لیکن کیرل میں اسی سفر کے متن کے سیاق میں ندی، ناؤ، ملاح، چپو وغیرہ کا ذکر ہو گا جب کہ دہلی، بنگلور، کولکاتا وغیرہ شہروں کے سیاق میں میٹرو کا بھی بیان ہو سکتا ہے۔اسی طرح انسدادِ آفات کے

متن کے سیاق میں ان ریاستوں کے موضوع و مواد میں فرق ہوسکتا ہے جہاں زلزلہ زیادہ آتا ہے یا سیلاب زیادہ آتا ہے۔ اسی طرح 'خاندان'' کے متن کے سیاق میں خاندان کے افراد کے معمولات میں بھی فرق ہوسکتا ہے۔ جنوبی ہند کی ریاستوں کے سیاق میں گھر کے دروازے پر صبح صبح چاول کے آٹے یا ہلدی وغیرہ سے رنگولی بنانے کا بیان ہوسکتا ہے۔ کھانے پینے میں بھی قہوہ (کشمیر)، مکئی کی روٹی اور ساگ (پنجاب)، لِٹّی چوکھا (بہار) وغیرہ کا فرق ہوسکتا ہے۔ لباس اور پہناوے وغیرہ میں بھی یہ فرق ہوسکتا ہے۔ فِرن (کشمیر)، شلوار کرتا (پنجاب)، مردانہ دھوتی (جنوبی ہند)، میکھلا (شمال مشرقی ہند) وغیرہ۔

- **پرائمر** کے سبھی چاروں حصوں میں خواندگی/اردو زبان اور اعداد شناسی کو مجموعی شکل میں پیش کیا گیا ہے۔ اس کی اصل وجہ یہ ہے کہ جب ہم ریاضی سیکھتے ہیں تو کسی زبان کے ذریعے ہی سیکھتے ہیں اور زبان کے برتنے یا استعمال کرنے میں ریاضیاتی تصورات بھی شامل ہوسکتے ہیں۔ مثال کے طور پر جب ہم کسی راشن کی دکان سے راشن خریدتے ہیں تو آٹا، دال، چاول، صابن وغیرہ کے نام پڑھتے ہیں۔ ان کی قیمت دوکاندار سے پوچھتے ہیں یا شرح کی فہرست کو بھی پڑھتے ہیں اور پھر خریدے گئے سامان کی شرح اور ان کی مقدار کے مطابق یہ بھی طے کرتے ہیں کہ دوکاندار کو کتنے روپے/پیسے دینے ہیں۔ اگر سامان 1570 روپے کا آیا ہے اور ہم نے دوکاندار کو 2000 روپے کا نوٹ دیا ہے تو جو روپے/پیسے دوکاندار سے واپس ملے ہیں اس کا حساب کتاب بھی رکھنا ہے۔ بل کو پڑھنا بھی ہے کہ دوکاندار نے صحیح صحیح حساب لگایا ہے یا نہیں اور کیا اس نے 430 روپے واپس دیے ہیں؟ اس پورے عمل میں زبان اور ریاضی سیکھنے کا عمل ساتھ ساتھ چلتا ہے اور مجموعی طور پر چلتا ہے۔ ریاضی میں زبان اور زبان میں ریاضی۔

- **پرائمر** میں اردو اور ریاضی سیکھنے کے اعمال ساتھ ساتھ چلتے ہیں۔ ایک ہی سبق کے موضوع و مواد کے سیاق کو مرکز میں رکھتے ہوئے اردو زبان اور ریاضی کو ساتھ ساتھ رکھا گیا ہے۔ مثال کے طور پر انتخابی خواندگی (سبق۔6) میں زبان سے متعلق مشق کے تحت رائے دہندگی سے متعلق ضروری معلومات دی گئی ہیں۔ ووٹ کی اہمیت کو ظاہر کرنے والے پوسٹروں پر بات چیت کی گئی ہے۔ آموزگاروں کو یہ موقع دیا گیا ہے کہ وہ اپنے ووٹر کارڈ پر لکھی معلومات کو غور سے پڑھیں اور اس کے بارے میں بتائیں۔ ساتھ ہی تنقیدی تجزیہ کے بعد اپنا ردعمل دے سکیں یا تبصرہ کرسکیں۔

  — ووٹ دینا کیوں ضروری ہے؟

  — جمہوریت کسے کہتے ہیں؟

- آپ کب کب ووٹ دیتے ہیں؟
- ووٹ دینے سے پہلے آپ کیا کیا سوچتے ہیں اور کیوں؟

سوال 6۔ اپنے ووٹر کارڈ کو دیکھ کر اس میں دی گئی معلومات کی فہرست بنائیں۔

نمبر	شمار معلومات
1۔	ووٹ دینے والے کا نام
2۔	
3۔	جنس
4۔	
5۔	
6۔	
7۔	
8۔	

ووٹر شناختی کارڈ ہندوستان کے سبھی باشندوں، جن کی عمر اٹھارہ یا اٹھارہ سال سے زیادہ ہے، ان کے لیے جاری کیا جاتا ہے۔ ووٹر شناختی کارڈ الیکشن کمیشن آف انڈیا جاری کرتا ہے۔

بات چیت کیجیے

- ووٹ دینا کیوں ضروری ہے؟
- جمہوریت کسے کہتے ہیں؟
- آپ ووٹ کب کب دیتے ہیں؟
- ووٹ دینے سے پہلے آپ کیا کیا سوچتے ہیں اور کیوں؟

استاد کے لیے ہدایت: ساتھیوں سے انتخاب اور اس سے متعلق باتوں پر بات چیت کیجیے۔ ووٹ کے حق، اہمیت اور اس کے صحیح استعمال پر زور دیں۔

الاس - حصہ 2، باب 6، صفحہ 171

اس کے بعد اعداد و شمار کو پڑھنے (Data Handling) کی مشق دکھاتے ہوئے یہ پوچھا گیا ہے:

- کسے سب سے زیادہ ووٹ ملے ہیں؟
- سب سے کم ووٹ کسے ملے ہیں؟

– انتخاب میں دوسرے مقام پر کون ہے؟

– انتخاب میں کل کتنے امیدوار ہیں؟

انتخاب میں ووٹنگ کے بعد ووٹوں کی گنتی کی جاتی ہے اور سب سے زیادہ ووٹ ملنے والے امیدوار کے کامیاب ہونے کا اعلان کیا جاتا ہے۔



ایک انتخاب سے متعلق معلومات دی گئی ہے۔

لکشمی	–	200ووٹ
ناظم	–	124ووٹ
سلطانہ	–	176ووٹ
ڈالے گئے کل ووٹ	–	500

اوپر دی گئی معلومات کو سمجھ کر بتائیے۔

(الف) کس کو سب سے زیادہ ووٹ حاصل ہوئے ہیں؟ _____

(ب) سب سے کم ووٹ کسے ملے ہیں؟ _____

(ج) الیکشن میں دوسرے مقام پر کون ہے؟ _____

(د) الیکشن میں کل کتنے امیدوار ہیں؟ _____

استاد کے لیے ہدایت: ساتھیوں کا حوصلہ بڑھائیں کہ وہ مختلف سیاق میں حوالوں سے تین عدد کا موازنہ کرسکیں، جوڑنے اور گھٹانے کے مختلف طریقے تلاش کریں اور دی گئی معلومات کی مدد سے فیصلہ کرسکیں۔

الاس – حصہ 2، باب 6، صفحہ 174

اس طرح سے زبان اور ریاضی سے متعلق مشقیں ایک ہی سیاق سے تعلق رکھتی ہیں۔

- زیادہ تر اسباق کی شروعات پوسٹر نما ایک بڑی تصویر سے کی گئی ہے مثلاً ”خاندان اور پڑوس“، ”ہمارا رہن سہن“ وغیرہ کی پوسٹر نما تصویروں پر بات چیت کرنے سے آموز گار اس موضوع سے مثبت انداز میں لگاؤ محسوس کرسکیں گے۔ تصویروں پر بات

چیت سے آموز گاروں کے وسیع تجربے، ان کے خیالات، ردعمل / تبصرے وغیرہ کو بھی احترام اور مقام ملتا ہے۔ جیسے ہمارے پس منظر میں دیواروں پر، ہورڈنگ وغیرہ پر کچھ نہ کچھ لکھا ہوا ملتا ہے، اسی طرح ان کی ان تصوریوں میں بھی آموز گاروں کو جگہ جگہ کچھ لکھا ہوا ملے گا۔ تصویروں پر بات چیت کرتے ہوئے ان الفاظ اور جملوں پر بھی بات چیت کی جا سکے گی۔ یہ بات چیت آموز گاروں کی پڑھنے لکھنے کی مہارتوں کو بڑھانے میں مددگار ثابت ہوگی۔

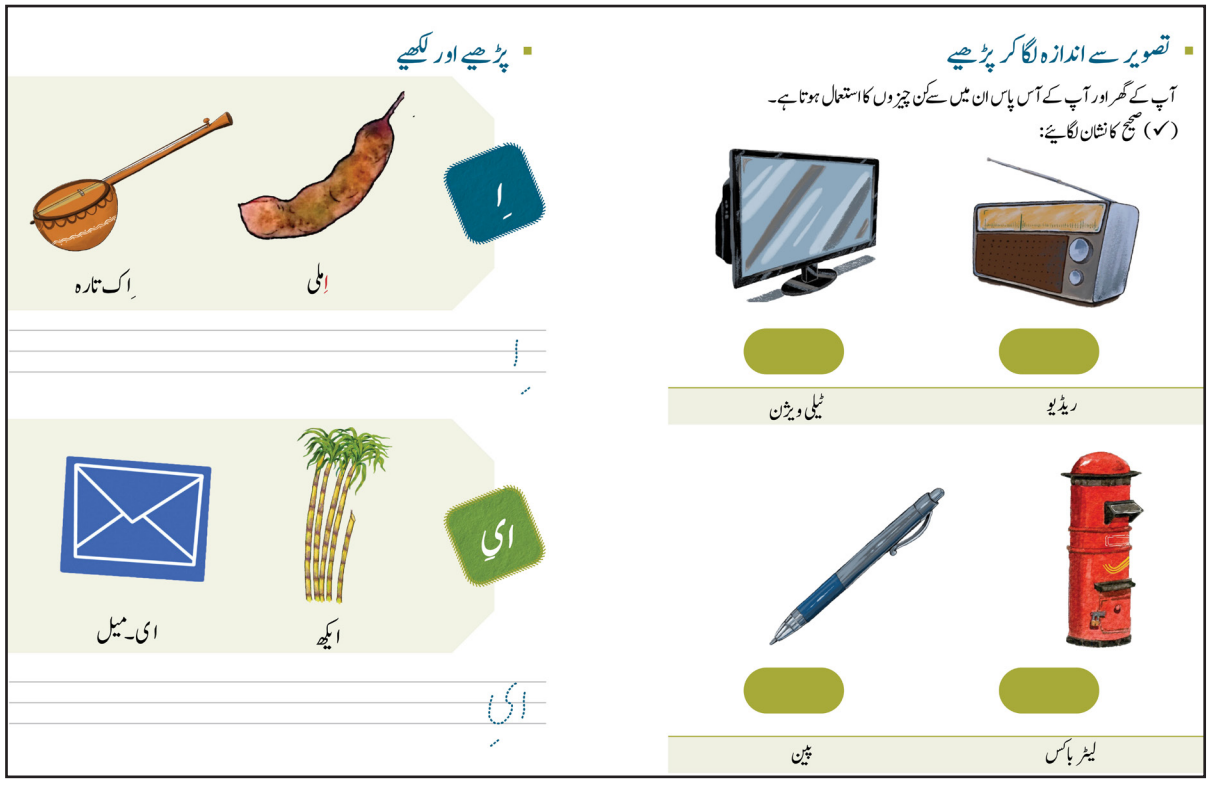


الاس – حصہ 1، باب 1، صفحہ 3-2



الاس – حصہ 1، باب 3، صفحہ 56

- **پرائمر** میں ہر ایک سرگرمی کو ایک عنوان دیا گیا ہے۔ یہ عنوان ذرا بڑے فونٹ اور الگ رنگ میں ہے تا کہ اسے صاف طور پر پہچانا جا سکے۔ اس عنوان سے یہ جانا جا سکے گا کہ اس سرگرمی میں کیا کرنا ہے۔ مثال کے لیے تصویر سے اندازہ لگا کر پڑھیے، پڑھیے اور لکھیے وغیرہ۔

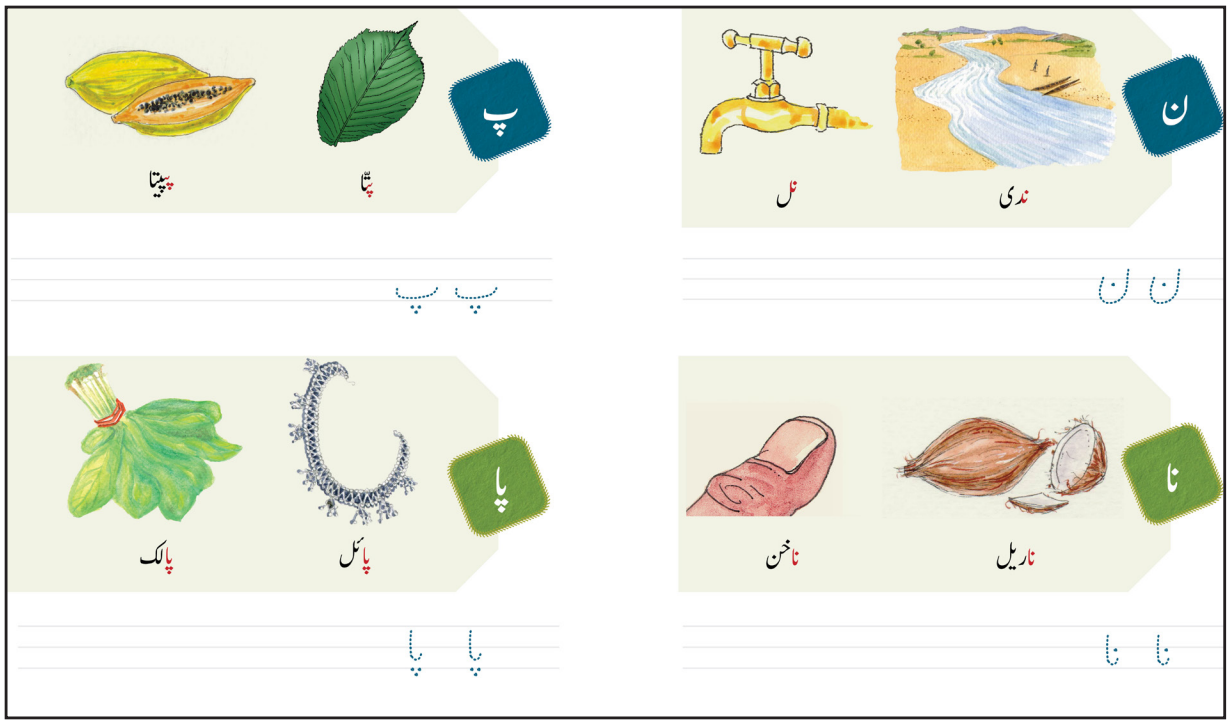


الاس – حصہ 1، باب 2، صفحہ 28-29

- **پرائمر** میں ممکنہ حد تک روزمرہ اور آسانی سے سمجھ میں آنے والی زبان کا استعمال کیا گیا ہے تا کہ اس کا استعمال کرنے والے رضا کار اساتذہ اور آموز گار دونوں کو آسانی ہو۔
- **پرائمر** میں پیش کیے گئے مواد کو مناسب انداز میں بڑی شکل میں پیش کیا گیا ہے تا کہ آموز گاروں کو دیکھنے پڑھنے میں چھوٹی شکل کی وجہ سے مشکل نہ ہو اور ان کی آنکھوں پر زور نہ پڑے۔
- **پرائمر** کو رنگوں، تصویروں اور دلچسپ موضوع و مواد کے ذریعے دلکش بنانے کی کوشش کی گئی ہے تا کہ آموز گار پڑھنے لکھنے میں دلچسپی لیں اور پڑھنا لکھنا سیکھنے کا عمل ان کے لیے حوصلہ بخش اور پر لطف بن سکے۔
- **پرائمر** میں اردو زبان کے حروف یا آوازوں کو آوازوں کی ترتیب میں پیش نہیں کیا گیا ہے۔ اس کا سبب یہ ہے کہ کسی بھی زبان کی دو بنیادی مہارتوں (سننا اور بولنا) میں ہم بات چیت کرتے ہیں اور بات چیت میں جن الفاظ کا استعمال کرتے ہیں وہ آواز

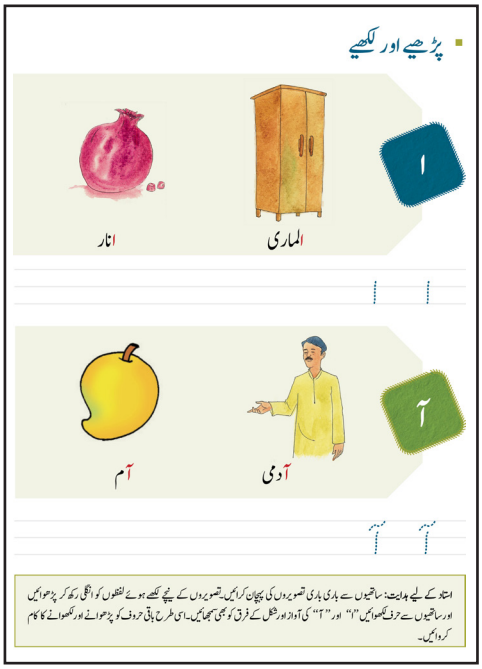
کی ترتیب کے مطابق نہیں ہوتے۔ جیسے اگر ماں اور چھوٹے بچے کے درمیان بات چیت ہو رہی ہے تو ماں بچے سے پوری بات کہتی ہے۔ آج تو میری بٹیا بہت جلدی اُٹھ گئی / آج ہم سب گھومنے جائیں گے / آؤ دادی جی کو بلالاؤ / آج شام میں آفس سے جلدی آؤں گی اور پھر تمھارے ساتھ کھیلوں گی وغیرہ۔ اسی طرح بڑے بھی اپنے اپنے سیاقوں اور ضروریات کو مرکز میں رکھتے ہوئے بات چیت کرتے ہیں اور اس بات چیت میں پوری بات کہی جاتی ہے جس سے مفہوم کی ترسیل ہوتی ہو۔ بات چیت میں کہیں بھی الفاظ میں آئے حروف لسانی و صوتی ترتیب میں نہیں ہوتے اس لیے **پرائمر** میں بھی سیاقوں کے مطابق جو مضمون کے ارد گرد بات چیت ہو رہی ہو اس میں آسان انداز میں آئے جملے، ان جملوں میں آئے الفاظ اور ان الفاظ میں آئے حروف / ماترا کے مطابق حروف اور ماتراؤں کی ترتیب مقرر کی گئی ہے۔

- ایک سبق کے بامعنی مواد یا تصویر میں جن الفاظ کی گنجائش ہے ان میں استعمال کیے گئے حروف / اصوات کو لیا گیا ہے۔ **پرائمر** کا پہلا سبق ''خاندان اور پڑوس'' موضوع پر مبنی ہے اور اس میں دی گئی ایک وسیع تصویر کے آس پاس جس طرح کی بات چیت ممکن ہے اس میں آئے الفاظ اور الفاظ میں آئے حروف ا آ ن پ س ر و کو اس پہلے سبق میں جگہ دی گئی ہے۔ سبق کے موضوع و مواد میں آسان اور فطری انداز میں آنے والے الفاظ اور حروف پر ہی توجہ مرکوز کی گئی ہے۔



الاس - حصہ 1، باب 1، صفحہ 9-8

- اردو زبان کی آوازوں کے حروف اور ماترا کے نشانات ایک ساتھ ہی رکھے گئے ہیں۔ **پرائمر** کے پہلے سبق میں آ اور اُس کے اعراب اور دوسرے سبق "بات چیت" میں اِ ای ب ت م ٹ چ خ کھ اور ان کے اعرابوں کو سکھانے کی کوشش کی گئی ہے۔ مثال کے طور پر پہلے سبق میں الماری، آدمی، ندی، ناریل، پتّا، پپیتا، سڑک، رسّی، وزن اور دوسرے سبق میں املی، ایکھ، بس، تربوز، مچھلی، خاندان، کھیت وغیرہ الفاظ دیے گئے ہیں۔ یہاں یہ نکتہ ذہن نشین رہے کہ اردو جیسی زبانوں میں آواز اپنی اصل شکل میں اور نشان کی شکل میں یعنی اعراب کی شکل میں بھی استعمال ہوتی ہے، لیکن یہ ممکن ہے کہ مختلف علاقائی زبانیں ایسی ہوں جن میں آوازیں انگریزی زبان کی طرح صرف اپنی اصل شکل میں ہی استعمال ہوتی ہیں مثلاً انگریزی زبان کا یہ لفظ دیکھ سکتے ہیں: pin / college / car (پن / کالج / کار)۔ جب ہم انگریزی زبان کے الفاظ کو رومن رسم خط میں لکھتے ہیں تو آوازیں (i,o, e, a) اپنی اصل شکل میں ہی لکھی جاتی ہیں جب کہ انہی الفاظ کو جب ہم اردو زبان کے فارسی رسم الخط میں لکھتے ہیں تو آوازوں کی اصل شکل کے بجائے ان کی ماتراؤں کا استعمال کرتے ہیں۔ ہمیں علاقائی زبانوں کے سیاق میں اس بات کا خاص خیال رکھنا ہوگا اور اسی کے مطابق پرائمر تیار کرنا ہوگا۔ اسی طرح دیوناگری رسم خط میں حروف / الفاظ کے اوپر سر خط کا استعمال کیا جاتا ہے جو ہندی زبان کی تحریر میں ایک ہم نکتہ ہے، لیکن یہ ممکن ہے کہ بعض زبانوں کے رسم خط یا سر خط استعمال نہ ہوتے ہوں۔ جیسے تمل، کنڑ، اُڑیا، ملیالم اور اردو وغیرہ زبانوں کا رسم خط۔ **پرائمر** میں تحریر کی مہارت میں اس نکتے کو دھیان میں رکھنے کو ترجیح دی گئی ہے۔



الاس – حصہ 1، باب 1، صفحہ 7

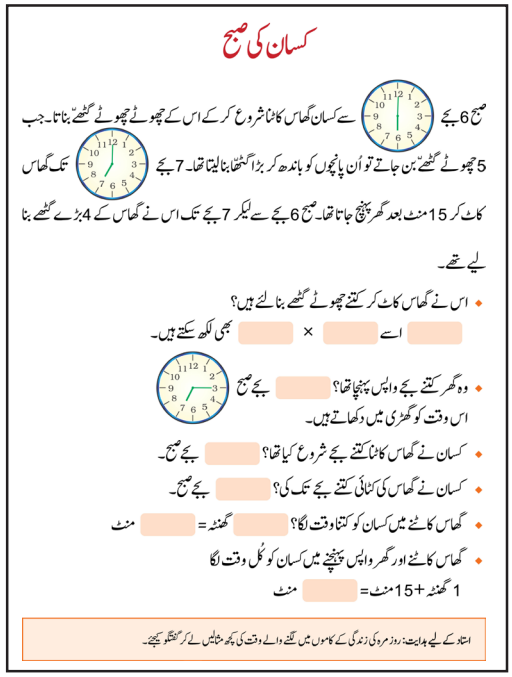


الاس – حصہ 1، باب 1، صفحہ 8

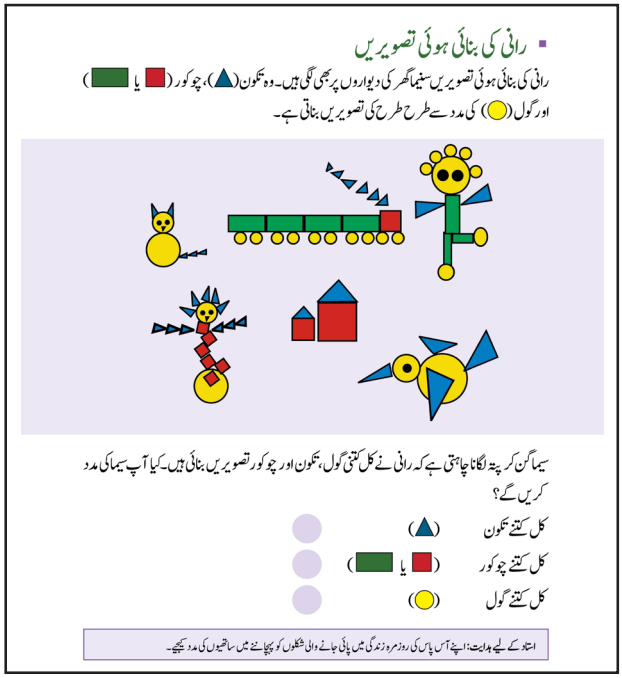


الاس – حصہ 1، باب 2، صفحہ 31-30

- **پرائمر** میں ریاضی کے تصورات کو الگ الگ اسباق میں پیش نہیں کیا گیا ہے بلکہ ریاضی کے وہ تصورات جو آپس میں مربوط ہیں انھیں ایک ساتھ رکھا گیا ہے۔ مثال کے طور پر سبق 11 ''منور نجن''، میں مختلف اقسام کی تصویروں کے ذریعے طرح طرح کی شکلوں (دائرہ، مربع، مثلث)، ڈیزائن اور پیٹرن سے واقفیت اور مشقیں دی گئی ہیں۔



الاس – حصہ 3، باب 9، صفحہ 226

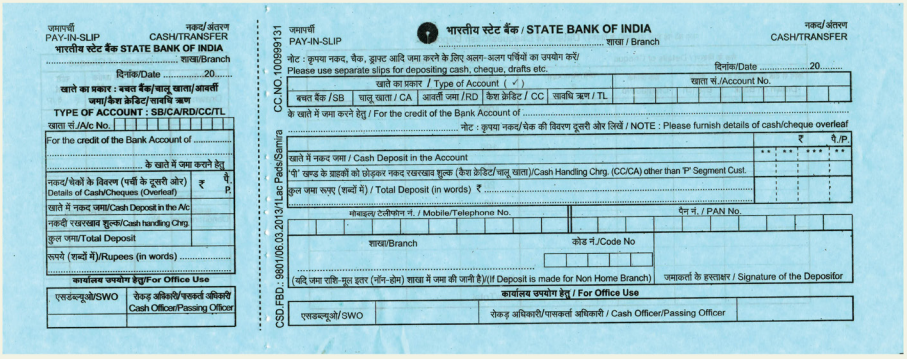


الاس – حصہ 4، باب 11، صفحہ 259

- ریاضی کے تصورات کو سیکھنے سکھانے کے لیے روزمرہ زندگی سے متعلق موضوعات کو لیا گیا ہے مثلاً خریداری، بینک، ٹیکس سے متعلق کام وغیرہ۔

■ جان کو بینک میں 1700₹ جمع کرنے ہیں۔ پیسہ جمع کرنے کی پرچی بھرنے میں جان کی مدد کیجیے۔

پیسے جمع کرنے کی پرچی



PAY-IN-SLIP — CASH/TRANSFER

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

..... शाखा/Branch

दिनांक/Date .....20.....

खाते का प्रकार : बचत बैंक/चालू खाता/आवर्ती जमा/कैश क्रेडिट/सावधि ऋण

TYPE OF ACCOUNT : SB/CA/RD/CC/TL

खाता सं./A/c No.

For the credit of the Bank Account of .....

..... के खाते में जमा करने हेतु

नकद/चेकों के विवरण (पर्ची के दूसरी ओर) / Details of Cash/Cheques (Overleaf) — ₹ — पै./P.

खाते में नकद जमा/Cash Deposit in the A/c

नकदी रखरखाव शुल्क/Cash handling Chrg.

कुल जमा/Total Deposit

रुपये (शब्दों में)/Rupees (in words) .....

कार्यालय उपयोग हेतु/For Office Use

एसडब्ल्यूओ/SWO — रोकड़ अधिकारी/पासकर्ता अधिकारी / Cash Officer/Passing Officer

CC.NO.100999131

CSD.FBD.: 9801/06.03.2013/1Lac Pads/Samira

जमाकर्ता की पर्ची — PAY-IN-SLIP — नकद/अंतरण — CASH/TRANSFER

भारतीय स्टेट बैंक / STATE BANK OF INDIA

..... शाखा / Branch

नोट : कृपया नकद, चैक, ड्राफ्ट आदि जमा करने के लिए अलग-अलग पर्चियों का उपयोग करें/ Please use separate slips for depositing cash, cheque, drafts etc.

दिनांक/Date .....20.....

खाते का प्रकार / Type of Account (✓) — बचत बैंक/SB | चालू खाता/CA | आवर्ती जमा/RD | कैश क्रेडिट/CC | सावधि ऋण/TL | खाता सं./Account No.

के खाते में जमा करने हेतु / For the credit of the Bank Account of .....

नोट : कृपया नकद/चैक की विवरण दूसरी ओर लिखें / NOTE : Please furnish details of cash/cheque overleaf

खाते में नकद जमा / Cash Deposit in the Account — ₹ — पै./P

'पी' खण्ड के ग्राहकों को छोड़कर नकद रखरखाव शुल्क (कैश क्रेडिट/चालू खाता)/Cash Handling Chrg. (CC/CA) other than 'P' Segment Cust.

कुल जमा रूपए (शब्दों में) / Total Deposit (in words) ₹.....

मोबाइल/ टेलीफोन नं. / Mobile/Telephone No. — पैन सं. / PAN No.

शाखा/Branch — कोड नं./Code No

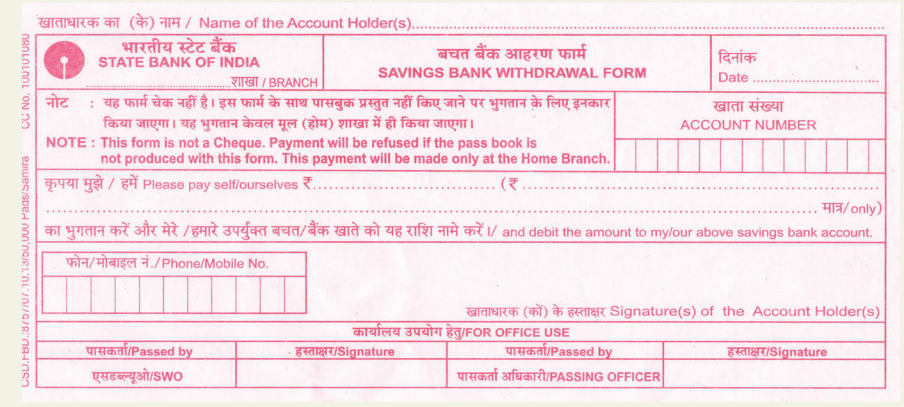
(यदि जमा राशि-मूल इतर (नॉन-होम) शाखा में जमा की जानी है)/(If Deposit is made for Non Home Branch) — जमाकर्ता के हस्ताक्षर / Signature of the Depositor

कार्यालय उपयोग हेतु / For Office Use

एसडब्ल्यूओ/SWO — रोकड़ अधिकारी/पासकर्ता अधिकारी / Cash Officer/Passing Officer

■ زرینہ کو بینک سے 200₹ نکالنے ہیں پیسہ نکالنے کی پرچی بھرنے میں زرینہ کی مدد کیجیے۔

پیسے نکالنے کی پرچی



खाताधारक का (के) नाम / Name of the Account Holder(s).....

भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA ..... शाखा / BRANCH

बचत बैंक आहरण फार्म SAVINGS BANK WITHDRAWAL FORM

दिनांक Date .....

नोट : यह फार्म चेक नहीं है। इस फार्म के साथ पासबुक प्रस्तुत नहीं किए जाने पर भुगतान के लिए इनकार किया जाएगा। यह भुगतान केवल मूल (होम) शाखा में ही किया जाएगा।

NOTE : This form is not a Cheque. Payment will be refused if the pass book is not produced with this form. This payment will be made only at the Home Branch.

खाता संख्या ACCOUNT NUMBER

कृपया मुझे / हमें Please pay self/ourselves ₹..... (₹ .....

..... मात्र/ only)

का भुगतान करें और मेरे /हमारे उपर्युक्त बचत/ बैंक खाते को यह राशि नामे करें।/ and debit the amount to my/our above savings bank account.

फोन/मोबाइल नं./Phone/Mobile No.

खाताधारक (कों) के हस्ताक्षर Signature(s) of the Account Holder(s)

कार्यालय उपयोग हेतु/FOR OFFICE USE

पासकर्ता/Passed by	हस्ताक्षर/Signature	पासकर्ता/Passed by	हस्ताक्षर/Signature
एसडब्ल्यूओ/SWO		पासकर्ता अधिकारी/PASSING OFFICER	

CC No. 100/101/080

CSD.FBD.:9/9/07.10.13/50,000 Pads/Samira

الاس - حصہ 4، باب 12، صفحہ 276

- کسی حرف کی آواز اور شکل کی پہچان کروانے کے لیے متن/موضوع کے اردگرد روزمرہ زندگی میں استعمال ہونے والے اشتہار، ناموں، گنتی، دنوں کے ناموں کا استعمال کیا گیا ہے۔ ان ناموں میں آوازیں لفظ کے شروع، درمیان یا آخر

میں آرہی ہیں۔اس طرح کی مثالیں لینا اہم ہے تا کہ آموز گاران یہ دیکھ سکیں کہ لفظ میں مختلف مقامات پر کسی حرف کے آنے سے لفظ کے تلفظ اور اس کی شکل پر کیا اثر پڑتا ہے۔ساتھ ہی وہ کسی حرف کی آواز کو کسی مخصوص لفظ سے ہی جوڑ کر دیکھنے کی عادت نہ ڈال لیں۔مثال کے طور پر 'ب' سے صرف بکری نہ سمجھنے لگیں اسی لیے بات چیت، اخبار، موبائل جیسے الفاظ دیے گئے ہیں۔

- آموز گاروں کو لکھنے میں ہچکچاہٹ اور دشواری ہوسکتی ہے لیکن ان میں مختلف مشقوں کے ذریعے یہ خود اعتمادی پیدا کرنی ہوگی کہ جو بات ہم کہتے ہیں اسے بعض علامات کے ذریعے لکھا جاسکتا ہے۔ہمارے بولنے اور لکھنے کی زبان میں فرق نہیں ہوتا۔

- **پرائمر** میں حروف کی شکل بنانا سیکھنے کے لیے انھیں نقطوں کی شکل میں بھی دیا گیا ہے۔اس سے آموز گاروں میں خود اعتمادی کے ساتھ حروف کی پڑھنے والی شکل بنانے میں مدد ملے گی۔مثال کے طور پر سبق 1 میں 'س' اور 'سا' کو دیکھا جاسکتا ہے۔



الاس – حصہ 1، باب 1، صفحہ 11-10

- یہ بات سمجھنا ضروری ہے کہ آموز گاران اپنے آس پاس کی چیزوں کو پہچانتے ہیں، ان کے نام جانتے ہیں، چیزوں کے نام بولتے ہیں اور روزمرہ زندگی میں مختلف طرح کے الفاظ استعمال کرتے ہیں۔ اس کا یہ مطلب ہے کہ بغیر اعراب والے یا اعراب والے الفاظ کو وہ ایک ترتیب سے نہیں بولتے بلکہ چیزوں، افراد، واقعات وغیرہ کے بارے میں بامعنیٰ بات چیت کرتے ہیں۔ ان کی اس مہارت کا استعمال تحریر کے کام میں کیا جاسکتا ہے اور ایک حرف میں ان سبھی اعرابوں کا استعمال کرنے کے مواقع دیے جاسکتے ہیں جو انھوں نے پہلے کے اسباق میں سیکھے ہیں مثلاً سبق 3 میں جھ جھِ جھا جھی وغیرہ سے بننے والے الفاظ کو پڑھنا اور ان حروف کو لکھنا۔ اس سے ایک فائدہ یہ ہوگا کہ آموز گاروں کو سیکھے ہوئے اعرابوں کو دہرانے کے مواقع ملیں گے اور ساتھ ہی وہ دو آوازوں میں امتیاز کرنے کی صلاحیت بھی پیدا کرسکیں گے جیسے گدھا، گمچھا، گائے، گلہری، گیت، گوبھی، گورَیا وغیرہ۔ **پرائمر** میں اس طرح سے تحریر سے متعلق مشق کافی مقدار میں دینے سے ہی آموز گاروں کو لکھنے کے مواقع مل سکیں گے۔

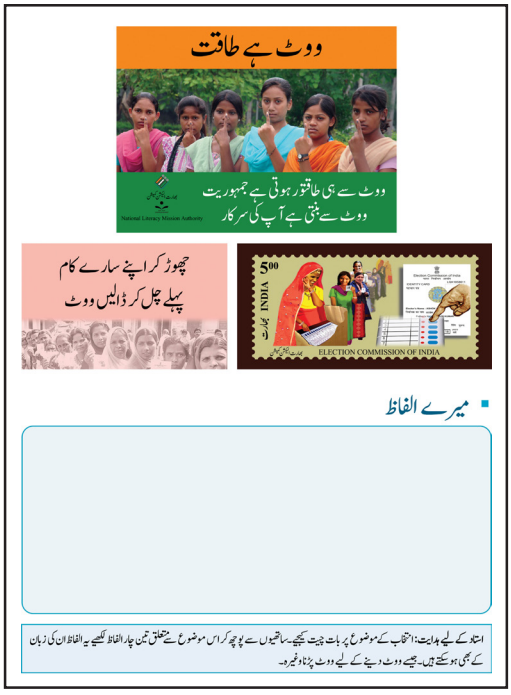
- تحریر کی مشقوں میں حروف لکھنے سے آگے بڑھتے ہوئے لفظ میں ایک مخصوص حرف کی پہچان کے بعد اس لفظ کو لکھنے کے لیے بھی کہا جاسکتا ہے۔ اس طرح پڑھنا اور لکھنا ساتھ ساتھ ہوتا ہے۔ **پرائمر** میں افراط سے ایسے مواقع دینے کی ضرورت ہے مثلاً سبق 1 میں دیکھیے، پڑھیے اور لکھیے مشق کے تحت ایک ایک الفاظ میں ا آ ن پ س ر و وغیرہ حروف سے شروع ہونے والے الفاظ کو پہچان کر انھیں لکھنا ہے۔ ریاضی میں بھی لکھنے کی مشق ساتھ ساتھ چلتی ہے۔ سبق 1 میں ہی موبائل میں ہندسوں کو پہچاننا ہے، لفظوں میں دیے گئے ہندسوں کو لکھنا ہے اور پھر الگ سے دی گئی جگہ پر ہندسوں کو لکھنا ہے۔

- تحریر کی اگلی سطح پر تصویروں کو دیکھ کر، پہچان کر ان کے نام لکھنے کی مشق آموز گاروں کی لکھنے کی مہارت میں مددگار ہوگی۔ جیسا کہ پہلے بھی واضح کیا گیا ہے کہ آموز گاران چیزوں، افراد وغیرہ کو پہچانتے ہیں اور ان کے پورے نام لیتے ہیں۔ ان کی اسی مہارت کے ذریعے تصویروں کے نام لکھنے کے مواقع اور مشقیں دی جاسکتی ہیں۔ مثال کے طور پر سبق 7 میں 'تصویر دیکھیے اور لفظ لکھیے' مشق میں آموز گاروں کو 7 اور قلم، رقدم اور قریب جیسے الفاظ لکھنے کے لیے کہا گیا ہے۔

- زیادہ تر اسباق کے اختتام پر 'میرے الفاظ' لکھنے کے لیے جگہ دی گئی ہے۔ اس کا مقصد یہ ہے کہ آموز گار یہاں اپنے آپ سے، دل سے اور رضاکار استاذ کی مدد سے دیکھ کر یا دیکھے بغیر وہ الفاظ لکھیں گے جو انھوں نے اس سبق میں سیکھے ہیں۔



الاس – حصہ 2، باب 5، صفحہ 147



الاس – حصہ 2، باب 6، صفحہ 173

- لکھنے کی مشقوں میں آموز گاران کی تخلیقی تحریر کی مہارت کو بھی پروان چڑھانے کی ضرورت ہے۔ وہ جو سوچتے ہیں، جیسا سوچتے ہیں، جس زبان میں سوچتے ہیں، انھیں ویسا ہی بولنے کے مواقع دینا بہتر ہو گا۔ مثال کے طور پر سبق 7 میں تصویر دیکھ کر خالی جگہ پر خود اپنی کہانی بنائیے اور لکھئے، مشق میں کہانی ایک سرے سے شروع ہوتی ہے اور آموز گاروں کو اپنے ذہن سے کہانی لکھنی ہے۔ دی گئی تصویریں ان کی تخلیقی سوچ کو آگے بڑھانے اور تخلیقی تحریر کے مواقع حاصل کرنے میں مددگار ہوں گی۔

- تحریری مہارت کی مشق کرانے کے لیے الفاظ سے جملے بنانے اور تحریری طور پر اپنی بات کہنے کے مواقع فراہم کرنے کی ضرورت ہوتی ہے۔ اس طرح کی مشقیں **الاس** کے سبق 9 میں دی گئی ہیں۔ الفاظ کا استعمال کرتے ہوئے جملہ بنا کر لکھئے (وقت، زمانہ، عہد، دور، دن وغیرہ)۔ر آپ کون سے کام وقت پر کر پاتے ہیں اور کون سے نہیں وغیرہ۔

- **پرائمر** میں تحریر کی ایسی مشقیں دینے کی ضرورت ہے جن میں اُنھیں محاوروں کا استعمال کرنے کے مواقع مل سکیں اور جملے کے استعمال کے لیے وہ صحیح الفاظ کا انتخاب کرتے ہوئے لکھ سکیں۔ اپنے تجربات کو لکھنے کے مواقع دیے جانے چاہئیں تا کہ لکھنا آموز گاروں کے لیے دلچسپ بن سکے۔ مثال کے طور پر سبق 10 کی تحریر سے تعلق رکھنے والی یہ مشقیں۔

▪ نظم میں نیچے دیے گئے حروف سے شروع ہونے والے الفاظ کو پہچان کر لکھیے

آ..... با.....

ن..... پا.....

▪ تصویر دیکھ کر خالی جگہوں کو بھریے



1۔سا.....س



2۔و.....ق



3۔ا.....ر



4۔وا.....ی



5۔.....م



6۔.....ل

استاد کے لیے ہدایت: ساتھیوں کے ساتھ مل کر نظم میں حروف اور الفاظ کی پہچان کرائیں اور الفاظ کو لکھنے میں ساتھیوں کی مدد کریں۔ نظم کو گا کر پڑھنے کی ترغیب دیں۔

الاس – حصہ 1، باب 1، صفحہ 23

- ہر ایک سبق میں آموز گاروں کے پڑھنے کے لیے اضافی مواد بھی دیا گیا ہے جسے وہ شروعات میں رضا کار استاذ کی مدد سے یا خود اندازہ لگا کر پڑھیں گے۔ توقع یہ ہے کہ بعد میں وہ اس مواد کو آزادی سے پڑھ سکیں گے۔

- **پرائمر** میں دیے گئے موضوع و مواد کو آموز گار کبھی بھی پڑھ سکتے ہیں، مدد کے ساتھ بھی اور آزادانہ طور پر بھی۔ اسباق کو ترتیب وار آگے پڑھتے، سیکھتے ہوئے آموز گار کو یہ آزادی ہوتی ہے کہ جب وہ پڑھنے کی خود اعتمادی محسوس کریں تو آزادانہ طور پر یا بغیر کسی کی مدد سے اسباق یا موضوع و مواد کو پڑھ لیں۔ مثال کے طور پر آموز گار پہلے سبق ''خاندان اور پڑوس'' میں اضافی مطالعہ کے لیے دی گئی نظم 'آؤ بادل' کو بعد میں بھی آزادانہ طور پر پڑھ سکتے ہیں جو آ ا پ ا ز ت ن ج ھ گ ج وغیرہ حروف پر مبنی ہے جب کہ اس کے اسباق میں ا آ ن پ س ر و وغیرہ حروف لیے گئے ہیں۔

- چونکہ ہمارے آموز گاروں کے پاس زندگی کے وسیع تجربات ہیں اور ان کی سمجھ کافی ترقی یافتہ ہے اس لیے **پرائمر** میں صرف حرف پر ہی توجہ مرکوز نہ کرتے ہوئے ان کی سطح اور دلچسپی کے مطابق بھاری بھرکم مواد کا استعمال کیا گیا ہے۔ یہ کوشش کی گئی ہے کہ آموز گاروں کی تنقیدی فکر کو ابھارا جا سکے۔ وہ سبق میں آئی ہر تصویر، لفظ، پڑھی ہوئی چیز کو سمجھتے ہوئے اسے اپنے تجربات

■ ووٹ دینے کی تیاری



الیکشن کے دن چھٹّی دی جاتی ہے تا کہ آپ کو کام پر جانے کی بھاگ دوڑ نہ کرنی پڑے۔



اپنا نام انتخابی فہرست میں دیکھ لیں۔ یہ آپ ووٹنگ آفیسر کی ویب سائٹ پر بھی دیکھ سکتے ہیں۔



گھر سے نکلتے وقت اپنا (ووٹر کارڈ) لے جانا نہ بھولیں۔ موبائل کیمرہ وغیرہ نہ لے کر جائیں۔ مرکز انتخابی پر یہ چیزیں لے جانے کی اجازت نہیں ہے۔





ووٹنگ کے لیے قطار میں کھڑے ہوں۔ آپ ضرور چاہیں گے کہ اگر کسی کے لیے قطار میں کھڑے رہنا مشکل ہے تو آپ انہیں ووٹ پہلے ڈالنے دیں گے۔

الاس - حصہ 2، باب 6، صفحہ 172

سے جوڑ کر اس پر غور کر سکیں، اپنی رائے دے سکیں اور اپنی رائے کے بارے میں دلیل دے سکیں۔ یہ تنقیدی غور و فکر آموز گاروں کی زندگی کے تمام مسائل کو بہتر طور پر سمجھنے میں مددگار ہو گا تا کہ وہ سیاق کے مطابق مناسب فیصلہ لے سکیں۔ مثال کے طور پر سبق 6 ''انتخابی خواندگی''، میں اس سے متعلق الفاظ کی گہرائی کو سمجھ سکیں جیسے انتخاب، انتخابی فہرست، پہچان پتر، انتخابی سیاہی، ای وی ایم مشین، امیدوار وغیرہ۔ انتخاب اپنے آپ میں ایک چھوٹا سا لفظ ہے لیکن اس سے جمہوریت کی شکل کا تعین ہوتا ہے کہ کس امیدوار کو منتخب کیا جائے؟ کوئی ہمارے شناختی کارڈ کا غلط استعمال تو نہیں کر رہا ہے؟ حکومت کیسی بنے گی؟ عوام کے نمائندوں کی شکل میں کتنے لوگ منتخب کیے جائیں گے؟ کیا وہ عوام کے لیے بہبودی اسکیموں کو بنانے اور انھیں عملی شکل دینے میں ٹھوس قدم اٹھائیں گے؟ کیا وہ اپنے وعدوں کو پورا کریں گے؟ ایسے نہ جانے کتنے سوال انتخاب جیسے لفظ سے جڑے ہوئے ہیں۔ جمہوریت کو قائم رکھنے میں انتخاب (الیکشن) کا سب سے بڑا تعاون ہے جس کے لیے سوچ و چار اور تنقیدی غور و فکر کی ضرورت ہوتی ہے۔ رائے دہندگان کا مناسب فیصلہ ہی معیاری جمہوریت کی بنیاد رکھتا ہے۔ **پرائمر** میں اسی طرح کے موضوعات اور سیاقوں کے ذریعے آموز گاروں کی زندگی کی ہنرمندی کے فروغ کی کوشش کی گئی ہے۔

- دہرانے اور مشقوں کے ذریعے اس کی کوشش کی گئی ہے کہ وقت کے ساتھ ساتھ آموز گاروں کے زبانی اور تحریری ذخیرۂ الفاظ میں اضافہ ہوتا رہے۔ ایک مخصوص سیاق اور اس سے الگ سیاق دونوں میں جن الفاظ کا ذکر کیا گیا ہے انھیں ان سیاقوں میں سمجھنا، پڑھ کر سمجھنے کی ایک اہم مہارت ہے۔ حالانکہ ایک **پرائمر** یا ایک کتاب کی اپنی حدود ہیں کہ ہم اس کے ذریعے بہت کچھ نہیں دے سکتے لیکن سیکھنے کے لیے رہنما ہدایات دے سکتے ہیں، ایک دو مثالیں دے سکتے ہیں جس سے آموز گار اور



الاس – حصہ 1، باب 2، صفحہ 31-30

رضا کار استاذ اس عمل کو خود آگے بڑھا سکیں۔ مثال کے طور پر سبق 1 ''خاندان اور پڑوس'' میں پانچ دیگر حروف (مصمتوں) کے ساتھ آ اور اس کے اعراب کے استعمال کو لیا گیا ہے تو سبق 2 میں چھ دیگر حروف (مصمتوں) کے ساتھ اِ ای کو لیا گیا ہے۔ سبق 2 میں نئے حروف (ب ت م کھ ٹ چ) کے ساتھ تینوں اعراب کو سیکھنے کے مواقع دیے گئے ہیں۔ بچے، بلّی، بس، بادل، بجلی، تربوز، تالا، تتلی، مچھلی، مال گاڑی، خاندان، کھیت وغیرہ الفاظ لیے گئے ہیں۔ تصویروں پر کی جانے والی بات چیت بھی آموز گاروں کے ذخیرۂ الفاظ کے اضافے میں فعال کردار ادا کرے گی۔ **پرائمر** کے آغاز سے لے کر خاتمے تک اسی طرح مسلسل ذخیرۂ الفاظ کو بڑھانے کی کوشش کی گئی ہے۔

- اسی طرح ریاضی کے تصورات کی فہم پیدا کرنے کے لیے بھی مشق کے کافی مواقع دیے گئے ہیں۔ سبق 1 میں 1 سے 9 تک کی گنتی (عدد اور معدود) سکھانے کے لیے موبائل کا استعمال کیا گیا ہے جس پر ہندسے لکھے ہوئے ہیں۔ اس سے آگے بڑھتے



الاس – حصہ 1، باب 2، صفحہ 46

ہوئے سبق 2 میں دہرانے اور مشق کی شکل میں پانچ روپے کے نوٹوں میں 5 کی پہچان کے مواقع دیے گئے ہیں۔ اسی سبق میں سیکھے گئے ہندسوں کی بنیاد پر جمع اور تفریق کرنے کے عمل کو لیا گیا ہے۔

- **پرائمر** کے اسباق/موضوعات سے بھی ایک طرح کا ارتقا پیش کرنے کی کوشش کی گئی ہے۔ کسی شخص کی زندگی میں جو جو باتیں سمجھنا، سیکھنا اور ان کا استعمال کرنا ضروری ہے ان سبھی کو **پرائمر** میں جگہ دینے کی کوشش کی گئی ہے۔ یہ اسباق/موضوعات ''خاندان اور پڑوس'' سے شروع ہو کر ڈیجیٹل خواندگی تک جاتے ہیں اور اس سے متعلق مواد کو شامل کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ خاندان بھی اتنا ہی اہم ہے جتنا پڑوس۔ علاوہ ازیں خاندان اور پڑوس میں صفائی اور ستھرائی بھی ضروری ہے جو ہماری صحت اور تندرستی کے لیے انتہائی اہم ہے۔ سبق 13 ''ڈیجیٹل خواندگی'' میں روپے پیسے سے متعلق خواندگی کو بھی جوڑا گیا ہے تاکہ ہم ڈیجیٹل آلات کے ذریعے پیسے کے لین دین کو سمجھ سکیں، احتیاط برت سکیں اور زندگی میں اس کا استعمال کر سکیں۔

بھیم ایپ (BHIM)

بھیم ایپ (BHIM) پیسوں کے لین دین کا موبائل ایپ ہے، اسے ای پیمینٹ بھی کہتے ہیں۔ اس میں آپ اپنے موبائل کے ذریعہ پیسے کا لین دین کر سکتے ہیں۔

- دور بیٹھے کسی شخص کو پیسے بھیج سکتے ہیں۔
- بچوں کو اسکول کی فیس دے سکتے ہیں۔
- بجلی کے بل کی ادائیگی کر سکتے ہیں۔
- کیرانے کی دکان والے کو پیسے دے سکتے ہیں۔
- قرض کی ادائیگی کر سکتے ہیں۔



سب سے پہلے آپ کو اپنے موبائل میں بھیم ایپ کو ڈاؤن لوڈ اور انسٹال کرنا ہوگا۔ اس میں آپ ہندی کے ساتھ ساتھ 12 اور بھارتی زبانوں میں کام کر سکتے ہیں۔ اس ایپ میں آپ بھارتیہ اسٹیٹ بینک کے ساتھ ساتھ دوسرے لگ بھگ 30 بھارتیہ بینک کھاتوں کا استعمال کر سکتے ہیں۔



ماخذ: https://https://www.npci.org.in/www.npci.org.inI)
(https://www.npci.org.in/productoverview/bhim/product-overview

الاس - حصہ 4، باب 12، صفحہ 280

سبق 12 ''روپے پیسے سے متعلق خواندگی'' میں بینک، پیسے کی بچت، جمع پرچی، اے ٹی ایم کارڈ وغیرہ کے ساتھ 'بھیم ایپ (BHIM)' کا استعمال سکھایا گیا ہے جو کہ ایک ڈیجیٹل ذریعہ ہے۔ اس طرح **پرائمر** کے تمام اسباق ایک دوسرے سے مربوط ہیں اور ایک دوسرے کے تکملے کے طور پر کام کرتے ہیں۔

- **پرائمر** میں تصویروں کی خاص اہمیت ہے۔ وہ اندازہ لگا کر پڑھنا سیکھنے اور مخصوص اشیا کے بارے میں تصور سازی میں مدد دیتے ہیں۔ سبق کے شروع میں ایک پوسٹر نما تصویر ہے جس میں ایک صورت حال یا واقعہ کو دکھایا گیا ہے۔ مثال کے طور پر ''خاندان اور پڑوس''، ''ہمارا رہن سہن'' وغیرہ کی پوسٹر نما تصویر۔ یہ تصویر آموز گاروں کے پس منظر سے متعلق ہے جس سے وہ اس پر زبانی طور پر بات چیت کر سکیں، اپنے تجربات بیان کر سکیں اور اس سے متعلق الفاظ کو اندازہ لگا کر پڑھ سکیں۔ پڑھنا لکھنا سیکھنے کے عمل کے آغاز میں تحریری زبان کی آموز گاروں کے لیے محض کوئی تصویر ہو سکتی ہے جسے وہ بعد میں پڑھنا سیکھ جائیں گے۔



الاس – حصہ 1، باب 1، صفحہ 3-2



الاس – حصہ 1، باب 3، صفحہ 55-54

- ان تصویروں کے ساتھ بات چیت کے نکات دیے گئے ہیں تا کہ رضا کار استاذ اور آموز گاروں کو بات چیت کے لیے کچھ اشارے مل جائیں، لیکن یہ اشارے محض تجویز کے طور پر ہیں۔ آموز گار اور رضا کار استاذ بات چیت کو کسی بھی فطری سمت میں لے جانے کے لیے آزاد ہیں۔
- **پرائمر** میں یہ کوشش کی گئی ہے کہ حروف کی پہچان کے لیے ایسے الفاظ کا استعمال کیا جائے جن کی تصویریں دستیاب ہوسکیں یا جنھیں تصویروں کے ذریعے پیش کیا جاسکے۔
- **پرائمر** میں کچھ تصویریں بار بار آتی ہیں۔ اس کا مقصد یہ ہے کہ آموز گار ان تصویروں کی مدد سے ان کے نام اور حروف کو بھی پہچاننے لگیں۔ اس سے انھیں پڑھنا لکھنا سیکھنے میں مدد ملے گی۔ تصویروں کے ساتھ ساتھ حقیقی فوٹو گراف کا بھی استعمال کیا گیا ہے۔ خاص طور سے کسی عمل کو ظاہر کرنے کے لیے حقیقی فوٹو گراف معاون ہوتے ہیں تا کہ آموز گار یہ دیکھ سکیں کہ جب وہ اس آلہ کا استعمال کریں گے یا کسی عمل سے گزریں گے تو چیزیں کیسی دکھائی دیں گی۔ یہ حقیقت ان میں خود اعتمادی پیدا کرے گی۔ مثال کے طور پر سبق 12 میں معاشی خواندگی کے تحت اے ٹی ایم مشین، بینک میں پیسہ جمع کرنے اور نکالنے کا فارم، اے ٹی ایم کارڈ وغیرہ کے حقیقی فوٹو انھیں بینک سے متعلق کاموں کی ایک واضح تصویر دکھائیں گے۔



■ اے ٹی ایم کارڈ کی مختصر جانکاری

اے ٹی ایم بینک سے پیسہ نکالنے، جمع کرنے کا ایک الیکٹرونک کارڈ ہوتا ہے۔ اس کی مدد سے کہیں بھی، کبھی بھی نقد پیسہ نکال سکتے ہیں اور بینک کھاتے کی تفصیل بھی جان سکتے ہیں۔ پیسہ کے لین دین سے متعلق کسی بھی پریشانی کے حل کے لیے صرف بینک سے ہی معلومات کرنی چاہیے۔ اے ٹی ایم کارڈ سے پیسے نکالنے کے لیے اے ٹی ایم مشین کا استعمال کیا جاتا ہے۔

یاد رکھیں

چیک کی میعاد چیک پر لکھی گئی تاریخ سے تین مہینے تک ہی منظور ہوگی۔ کراس چیک صرف کھاتے دار کے کھاتے میں ہی جمع ہوتا ہے۔

کبھی کسی کو نہ بتائیں۔

1۔ او ٹی پی 2۔ پن 3۔ سی وی وی
4۔ کھاتہ سے متعلق معلومات 5۔ ذاتی معلومات

KYC کیا ہوتا ہے؟

KYC (Know your Customer) کے لیے ضروری دستاویز

KYC کے ذریعہ سے بینک کسی بھی شخص کی پہچان اور پتہ کی تصدیق کرتا ہے۔ اب آدھار کارڈ سے بھی KYC کر سکتے ہیں۔

1۔ پین کارڈ 2۔ بجلی کا بل 3۔ آدھار کارڈ 4۔ رہائشی پتہ

الاس - حصہ 4، باب 12، صفحہ 278

- تصویروں میں عوامی مصوری کو بھی وافر جگہ اور احترام دیا گیا ہے۔ جب آموز گار اپنے اردگرد موجود عوامی مصوری کو **پرائمر** میں دیکھیں گے تو اس سے انھیں ایک طرح کے فخر اور اپنے پن کا احساس ہوگا۔ یہ احساس انھیں پڑھنا لکھنا سیکھنے کے لیے اور زیادہ تحریک دے گا۔ مانوس چیزوں کے ساتھ آنے والی نامانوس شکلوں کو پہچاننا آسان ہو جاتا ہے۔ مختلف علاقوں کے عوامی اسالیب میں بنی تصویریں آموز گاروں کو تحریک دے سکتی ہیں کہ وہ بھی اپنی عوامی مصوری (لوک آرٹ)، تہذیب کو آگے بڑھائیں۔ ساتھ ہی اس طرح کی عوامی مصوری کو وہ اپنے کاروبار کی شکل میں بھی اپنا سکتے ہیں۔ '**الاس**' کا کور پیج بہار کے مدھوبنی ضلع کی عوامی مصوری کی مثال ہے تو 'دیوالی کے دیے' اور 'سکھوماجری گاؤں' اسباق میں بالترتیب مدھیہ



الاس کا کور پیج



الاس - حصہ 1، باب 3، صفحہ 76



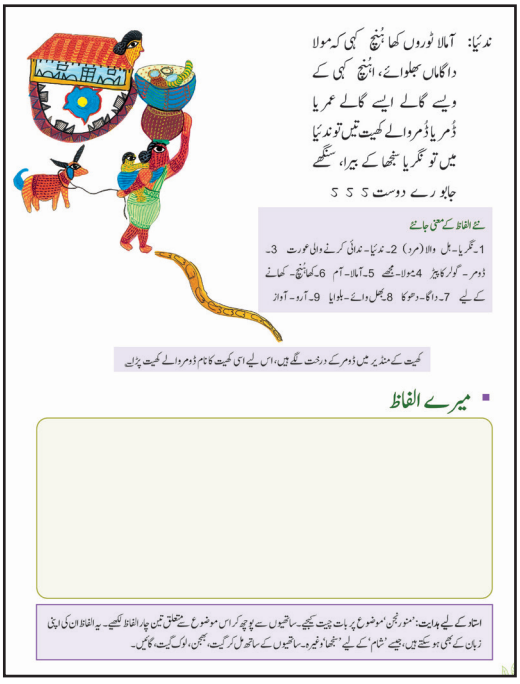
الاس - حصہ 2، باب 4، صفحہ 108

پردیش کی گونڈاور راجستھان کی مانڈنا عوامی مصوری کا نظارہ ہوتا ہے۔ یہ تصویریں جہاں ایک طرف ہندوستانی عوامی تہذیب سے جڑنے میں مددگار ہوں گی وہیں آموزگاروں میں حساسیت، تحسین اور جمالیاتی حس پیدا کرنے میں بھی معاون ہوں گی۔

- **پرائمر** میں لوک گیتوں اور لوک کہانیوں کو بھی جگہ دی گئی ہے۔ ریاستیں اپنے لیے **پرائمر** مرتب کرتے وقت اپنی ریاست میں مروج لوک گیتوں اور لوک کہانیوں کو **پرائمر** میں جگہ دے سکتے ہیں۔ ریاستوں کے لوک ادب سے جڑے مختلف طرح کے مواد کو اضافی مطالعے کے لیے لیا جاسکتا ہے۔ مثال کے طور پر راجستھان میں بیٹی کی رخصتی کے وقت گایا جانے والا 'اولیو نگ گیت- کنور بائی جی اولیو آوے اوراج۔' اسی طرح آدی واسی علاقوں میں گائے جانے والے گیت بھی **پرائمر** کا حصہ بن سکتے ہیں جیسے یہ منڈاری لوک گیت۔

ایلا رے ساتوسئے سنتا
ایلا رے بِسو ناگپور
تجنا کنچگڑا لِنگی تنا
کارو کوئِل رے بُوئل تنا

(مفہوم- اے ساتوں علاقوں کے بھائیوں/اے بیسوں ناگپور کے / یہاں تجنا- کانچی ندیاں بہہ رہی ہیں/ کارو- کوئل اُمڈ رہی ہے۔)





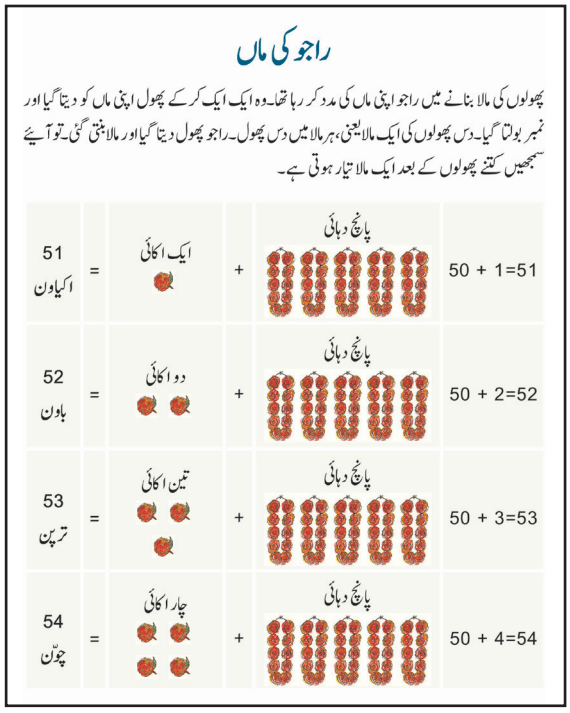
الاس - حصہ 4، باب 11، صفحہ 264-263

- آموز گار کی زبان اور زبانی اظہارات پر خاص توجہ کی ضرورت ہے کیوں کہ بول چال کی زبان کے سہارے ہی پڑھنے لکھنے کے عمل کو آگے بڑھایا جاسکتا ہے۔ زبانی طور پر اپنی بات کہنے کی خود اعتمادی آموز گاروں کو پڑھنے، لکھنے اور ریاضیاتی تصورات کو سمجھنے میں مدد کرے گی۔ اس لیے **پرائمر** میں آموز گاروں کے ساتھ بات چیت کے کافی مواقع دیے گئے ہیں۔

- **پرائمر** میں ہندوستان کی کثیر لسانی خصوصیات کا پورا احترام کیا گیا ہے۔ اگر چہ **پرائمر** اردو زبان میں ہے اور اردو پڑھنا لکھنا سکھانے کے نقطۂ نظر سے تشکیل دیا گیا ہے تاہم اس میں آموز گار کی مقامی/علاقائی بولی۔ زبان کا پورا احترام کیا گیا ہے۔ کئی مقامات پر آموز گاروں کو اپنی زبان۔ بولی میں بات چیت کرنے، جواب دینے کے بہت سے مواقع دیے گئے ہیں۔ اس سے آموز گاروں کو اپنی بات کرنے کے لیے تحریک اور ترغیب ملے گی اور وہ خود اعتمادی کے ساتھ بات چیت میں حصہ لیں گے۔

- رضا کار اساتذہ اور آموز گاروں کی سہولت کے لیے ہر ایک سبق میں تعلیم سے متعلق ہدایات دی گئی ہیں۔ یہ ہدایات آسان زبان میں یہ سمجھنے میں مدد کریں گی کہ اس سبق کو آموز گاروں اور رضا کار استاذ مل کر کیسے آگے لے جاسکتے ہیں۔

- **پرائمر** میں ریاضی کے اعمال کے سوالوں میں روزمرہ زندگی کی مثالوں کا استعمال کیا گیا ہے جیسے پھولوں کی مالائیں بنانا، روپے پیسے جوڑنا، گھٹانا، لڈّو گننا وغیرہ۔ ان مثالوں کو اچھی طرح سمجھنے کے لیے گرد و پیش میں آسانی سے دستیاب حقیقی اشیا کا استعمال بھی کیا جاسکتا ہے۔

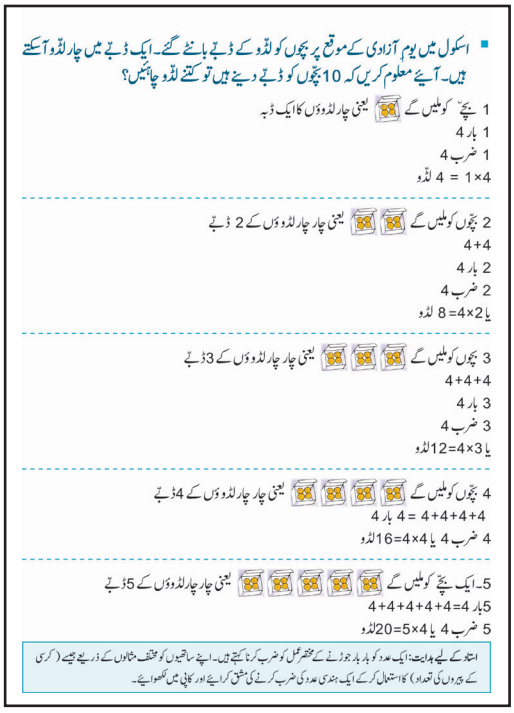


راجو کی ماں

پھولوں کی مالا بنانے میں راجو اپنی ماں کی مدد کر رہا تھا۔ وہ ایک ایک کر کے پھول اپنی ماں کو دیتا گیا اور نمبر بولتا گیا۔ دس پھولوں کی ایک مالا یعنی، ہر مالا میں دس پھول۔ راجو پھول دیتا گیا اور مالا بنتی گئی۔ تو آیئے سمجھیں کتنے پھولوں کے بعد ایک مالا تیار ہوتی ہے۔

50 + 1=51	پانچ دہائی	+	ایک اکائی	=	51 اکیاون
50 + 2=52	پانچ دہائی	+	دو اکائی	=	52 باون
50 + 3=53	پانچ دہائی	+	تین اکائی	=	53 ترپن
50 + 4=54	پانچ دہائی	+	چار اکائی	=	54 چوّن

الاس – حصہ 2، باب 4، صفحہ 111



▪ اسکول میں یوم آزادی کے موقع پر بچوں کو لڈو کے ڈبے بانٹے گئے۔ ایک ڈبے میں چار لڈو آسکتے ہیں۔ آیئے معلوم کریں کہ 10 بچوں کو ڈبے دینے ہیں تو کتنے لڈو چاہئیں؟

1 بچّے کو ملیں گے یعنی چار لڈوؤں کا ایک ڈبہ
1 بار 4
1 ضرب 4
4 = 1×4 لڈو

2 بچّوں کو ملیں گے یعنی چار چار لڈوؤں کے 2 ڈبے
4+4
2 بار 4
2 ضرب 4
یا 2×4=8 لڈو

3 بچوں کو ملیں گے یعنی چار چار لڈوؤں کے 3 ڈبے
4+4+4
3 بار 4
3 ضرب 4
یا 3×4=12 لڈو

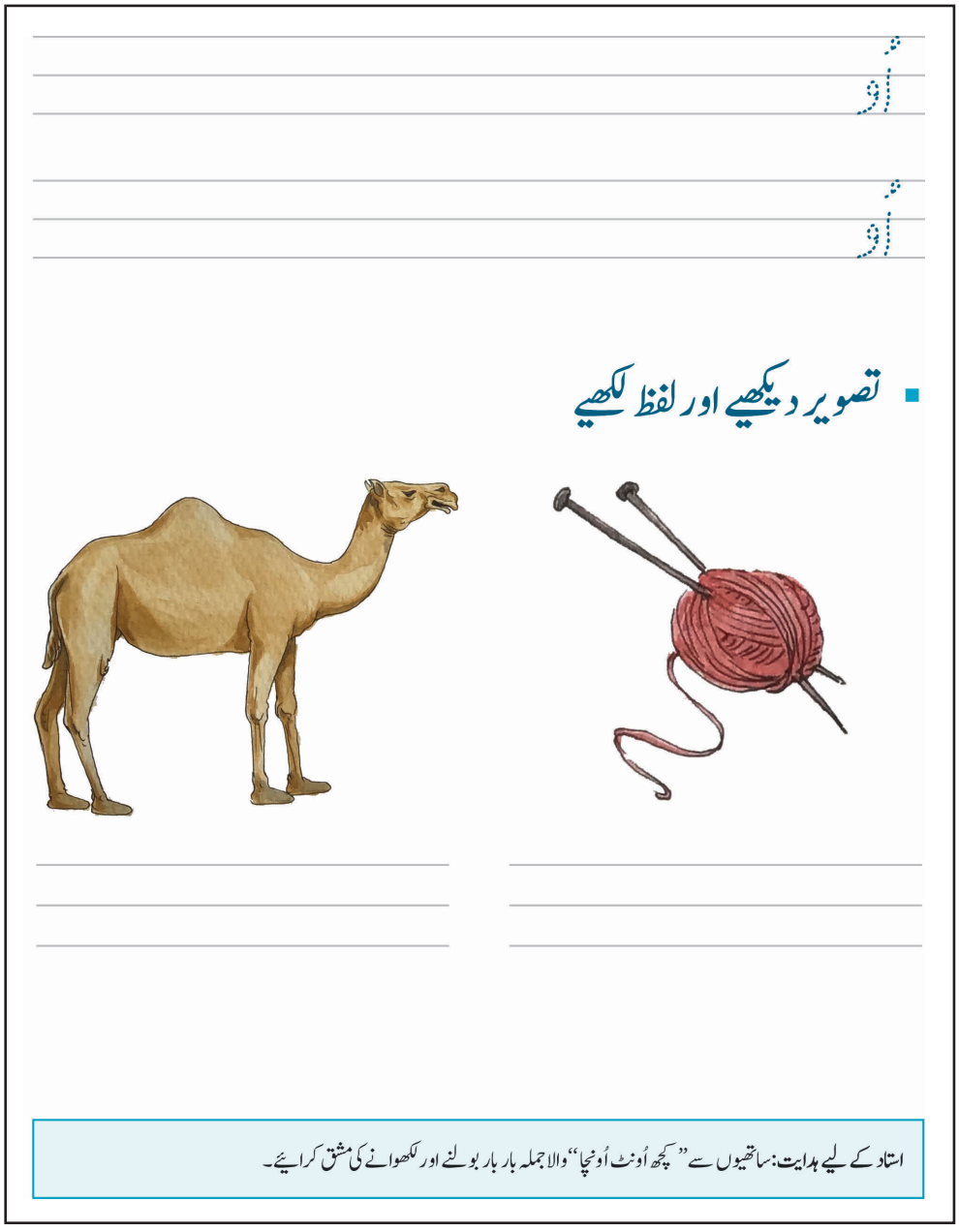
4 بچّوں کو ملیں گے یعنی چار چار لڈوؤں کے 4 ڈبے
4+4+4+4 = 4 بار 4
4 ضرب 4 یا 4×4=16 لڈو

5۔ ایک بچّے کو ملیں گے یعنی چار چار لڈوؤں کے 5 ڈبے
4+4+4+4+4 5 بار 4
5 ضرب 4 یا 5×4=20 لڈو

استاد کے لیے ہدایت: ایک عدد کو بار بار جوڑنے کے مختصر عمل کو ضرب کرنا کہتے ہیں۔ اپنے ساتھیوں کو مختلف مثالوں کے ذریعے جیسے (کرسی کے پیروں کی تعداد) کا استعمال کر کے ایک ہندسی عدد کی ضرب کرنے کی مشق کرایئے اور کاپی میں لکھوایئے۔

الاس – حصہ 2، باب 5، صفحہ 149

- **پرائمر** سے بہتر استفادہ کے لیے اس کے ساتھ اس کے استعمال کی تفصیلی ہدایات بھی تیار کی گئی ہیں تا کہ رضا کار اساتذہ اس **پرائمر** کا صحیح طریقے سے استعمال کر سکیں اور اس کا زیادہ سے زیادہ فائدہ آموز گاروں کو پہنچ سکے۔



الاس - حصہ 2، باب 5، صفحہ 130

پرائمر کی تیاری میں یہ نکتہ خاص طور پر قابل غور ہے کہ زبان اور ریاضی سکھانے کا عمل ساتھ ساتھ چلتا ہے۔ بنیادی خواندگی (زبان اور اعداد شناسی) کے لیے آموز گار کی روزمرہ زندگی کے سیاق کو شامل کرنا ضروری ہے تا کہ بنیادی خواندگی (زبان اور

اعداد شناسی) اور زندگی گزارنے کے درمیان کوئی فاصلہ نہ رہے اور آموز گار یہ سمجھ سکیں کہ پڑھنا لکھنا اور اعداد شناسی آخر کار زندگی گزارنے میں ان کی مدد کے لیے ہی ہے۔ **پرائمر** کے سبق اور زندگی کے درمیان کا یہ ربط بنیادی خواندگی (زبان اور اعداد شناسی) کے حصول میں مدد کرے گا۔

پرائمر کی تشکیل کے ساتھ اس میں آئے اسباق کی ترتیب کے مطابق آڈیو، ویڈیو پروگرام بھی بنائے جاسکتے ہیں۔

امید ہے کہ **پرائمر** کی تیاری سے متعلق ان نکات کو ذہن میں رکھتے ہوئے اپنی اپنی علاقائی زبانوں میں اور مقامی سیاقوں کے پس منظر کو مرکزی اہمیت دیتے ہوئے **پرائمر** اور دیگر وسیلہ جاتی مواد کی تشکیل کی جائے گی۔ یہ ضروری نہیں ہے کہ ایک ہی **پرائمر** سبھی آموز گاروں کی ضروریات پوری کر سکے۔ لہٰذا آموز گاروں کی سطح، صلاحیت، سیاق اور پس منظر کو ذہن میں رکھتے ہوئے دیگر مواد کی تشکیل کی جاسکتی ہے۔

تبصرہ

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

